04 - डॉ. लोहिया जी का पुनर्पाठ

05 - संघ कितना राजनीतिक?

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 12 अक्टूबर, 2024

06 - श्रद्धालुओं ने किया कन्या पूजन, मंदिरों में रही भक्तों की भीड़

07- गरबा के शोर में शक्ति आराधना का जश्न अब...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-45 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

प्रसंगवश

हरियाणा में केजरीवाल की हार का असर दिल्ली पर भी होगा?

दिलनवाज़ पाशा

दिल्ली और पंजाब में सत्ताधारी आम आदमी पार्टी को हरियाणा विधानसभा चुनावों में ज़बरदस्त झटका लगा है। आम आदमी पार्टी को हरियाणा में 2 प्रतिशत से भी कम मत मिले और पार्टी अपना खाता तक नहीं खोल सकी। अरविंद केजरीवाल के धुआंधार प्रचार के बावजूद, हरियाणा में आम आदमी पार्टी के 88 में से 87 उम्मीदवारों की ज़मानत ज़ब्त हो गई। सिर्फ़ दो सीटों पर ही पार्टी उम्मीदवारों को 10 हज़ार से अधिक वोट मिल सके।

मूलरूप से भिवानी में सिवानी के रहने वाले अरविंद केजरीवाल ने हरियाणा में दर्जनों रैलियां कीं और खुद को 'हरियाणा का लाल' बताकर वोट मांगे। कथित शराब घोटाले में जाँच का सामना कर रहे और ज़मानत पर जेल से रिहा अरविंद केजरीवाल ने 'ईमानदार सरकार' देने का वादा किया लेकिन जनता ने उन्हें और उनकी पार्टी के उम्मीदवारों को पूरी तरह नकार दिया। दिल्ली जैसी मुफ़्त बिजली देने, मोहल्ला क्लिनिक खोलने, मुफ़्त और अच्छी शिक्षा देने के अलावा पार्टी ने कई वादे किए, बेरोज़गारी को मुद्दा बनाया और जमकर बीजेपी पर निशाना साधा। लेकिन हरियाणा के मतदाताओं ने केजरीवाल और उनकी पार्टी को तवज्जो नहीं दी।

समूचे हरियाणा में सिर्फ़ जगाधरी सीट पर ही आम आदमी पार्टी उम्मीदवार आदर्श पाल सिंह 43813 वोट लेकर तीसरे नंबर पर रहे। आम आदमी पार्टी का बाक़ी कोई भी उम्मीदवार अपनी ज़मानत नहीं बचा सका। चुनावों से पहले आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस के साथ गठबंधन का प्रयास किया, लेकिन जब बात नहीं बनीं तो अंत में पार्टी ने अकेले 90 में से 88 सीटों पर उम्मीदवार उतारने का फ़ैसला किया। इससे कुछ महीने पहले ही हरियाणा में लोकसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी कांग्रेस के साथ गठबंधन में लड़ी थी और इंडिया गठबंधन ने हरियाणा में 47 फ़ीसदी मत और दस में से पांच सीटें हासिल की थीं। हालांकि आम आदमी पार्टी अपने हिस्से की कुरूक्षेत्र सीट हार गई थी।

विधानसभा चुनावों की आहट के बीच, पार्टी ने अपने दम पर चुनाव लड़ने के प्रयास शुरू कर दिए थे और कांग्रेस से बातचीत के दौरान ही, अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल हरियाणा में रैलियां कर रहीं थीं। जब कांग्रेस से बात नहीं बनीं तो चुनावी रैलियों के दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी अहम खिलाड़ी बनकर उभरेगी और बिना उनकी पार्टी के हरियाणा में सरकार नहीं बनेगी। हालांकि, नतीजे पार्टी की उम्मीदों के बिल्कुल उलट रहे. हरियाणा में सिर्फ़ एक उम्मीदवार को छोड़कर आम आदमी पार्टी का कोई भी उम्मीदवार मज़बूत मौजूदगी तक दर्ज नहीं करवा सका।

वरिष्ठ पत्रकार देवेंद्र गांधी कहते हैं कि अगर आप और कांग्रेस का गठबंधन होता तो निश्चित रूप से चार-पांच सीटों के नतीजों पर इसका असर होता। '2019 के विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को 0.5 फ़ीसदी वोट मिले थे। तब पार्टी ने 46 सीटों पर चुनाव लड़ा था। इस बार आम आदमी पार्टी को कुल मतों में से सिर्फ़ 2.48 लाख यानी लगभग 1.8 प्रतिशत मत ही मिले। हालांकि 2024 लोकसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी को 3.9 प्रतिशत वोट मिले थे।

चुनाव नतीजों के बाद पार्टी कांग्रेस पर निशाना साध रही है। आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने कहा कि हमने लोकसभा चुनाव में गठबंधन किया, इंडिया गठबंधन को हरियाणा में 47 प्रतिशत वोट मिले। विधानसभा चुनावों के दौरान हम कहते रहे गठबंधन करो, लेकिन गठबंधन नहीं किया।' वहीं मंगलवार को दिल्ली में आप पार्षदों को संबोधित करते हुए अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस का नाम लिए बिना कहा, 'दिल्ली के चुनाव नज़दीक हैं। पहली बात दिमाग़ में ये रखनी है कि किसी को हल्के में नहीं लेना है।'

वरिष्ठ पत्रकार हेमंत अत्री कहते हैं, 'दरअसल, आम आदमी पार्टी का हरियाणा में कोई मज़बूत आधार नहीं है और पार्टी यहाँ अपनी मज़बूत पकड़ बनाने की महत्वाकांक्षा रखने के बावजूद ज़मीनी स्तर पर संघर्ष करती रही है। हरियाणा में पार्टी कोई बड़ा चेहरा पैदा नहीं कर सकी है।' विश्लेषक मानते हैं कि दिल्ली और हरियाणा के मुद्दे भी अलग हैं, ऐसे में आम आदमी पार्टी का मुफ़्त सेवाएं देने का जो एजेंडा दिल्ली में चल जाता है, वो हरियाणा में बहुत हद तक काम नहीं करता।

हरियाणा में जातिगण समीकरण चुनावों में हावी रहे हैं। विश्लेषकों के मुताबिक़, चुनाव जाट बनाम ग़ैर जाट रहे लेकिन आप के पास ना ही कोई बड़ा जाट नेता था और ना ही ग़ैर जाट। जातिगत समीकरणों में भी पार्टी पिछड़ गई। देवेंद्र गांधी कहते हैं, 'हरियाणा में आम आदमी पार्टी अध्यक्ष सुशील गुप्ता बनिया जाति से आते हैं। हरियाणा में इस जाति का कोई मज़बूत आधार नहीं है। पिछड़े मतदाता पिछड़े नेताओं के पीछे चले गए, जाट जाटों के पीछे लेकिन आप के पास ऐसा कोई चेहरा नहीं था जो किसी बड़े जाति वर्ग को अपनी तरफ़ खींचे रखते।'

विश्लेषक ये भी मान रहे हैं कि हरियाणा में सीधा मुक़ाबला कांग्रेस और बीजेपी के बीच था, ऐसे में आप के नेता ज़मीनी स्तर पर बहुत सक्रिय भी नहीं रहे। हेमंत अत्री कहते हैं, 'हरियाणा में तमाम प्रयासों के बावजूद, आम आदमी पार्टी शोर-शराबा करने तक ही सीमित है। यहां आम आदमी पार्टी के लिए बहुत गुंजाइश थी नहीं।'

दिल्ली में अगर तय समय पर चुनाव हुए तो ये चुनाव फ़रवरी 2025 में होंगे। आम आदमी पार्टी के पास इस समय दिल्ली में प्रचंड बहुमत है। आम आदमी पार्टी ने बुधवार को आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव अकेले लड़ने के संकेत दिए हैं। हालांकि लोकसभा चुनाव पार्टी ने कांग्रेस के साथ मिलकर लड़ा था लेकिन गठबंधन कोई भी सीट नहीं जीत सका था। देवेंद्र गांधी कहते हैं, 'दिल्ली और हरियाणा के मुद्दे और लोगों का वोट करने का तरीक़ा अलग है। बावजूद इसके, हरियाणा में मिली बुरी हार का असर आम आदमी पार्टी के दिल्ली चुनाव अभियान पर भी पड़ सकता है। अगर बीजेपी ने जिस तरह से हरियाणा में रणनीति बनाई और जातिगत कार्ड खेला, वैसे ही कोई मुद्दा दिल्ली में उठा दिया तो निश्चित रूप से आप के लिए मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं।'

हालांकि हेमंत अत्री इस संभावना को ख़ारिज करते हुए कहते हैं, 'दिल्ली में आम आदमी पार्टी के पास एक समर्थित वोट बैंक है। खासकर दिल्ली के ग़रीब और पिछड़े वर्ग के लोग आम आदमी पार्टी के साथ एक जुड़ाव महसूस करते हैं। ऐसे में, ये नहीं कहा जा सकता कि हरियाणा के चुनाव नतीजों का कुछ ख़ास असर दिल्ली चुनावों पर भी होगा।'

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

गेह अरि-भ्रात आय
चरनन सिरनायो।
अग्रज के डर डर्यो मनहिं
अतिही सकुचायो।
चितवतही एक बार अहो!
पलटी ताकी गति।
लात खाय कै कढ्यो भयो
छन में लंकापति॥
दससीस मारि महिभार हरि,
असुरन दीन्हीं विमल गति।
जय जयति राम रघुवंशमनि,
जाहि दीन पर नेह अति॥

– बालमुकुंद गुप्त

अंतरिक्ष में नए कारनामे करने की तैयारी में भारत

52 सर्विलांस सैटेलाइट्स के लॉन्च को केंद्र की मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में सुरक्षा पर कैबिनेट समिति ने अंतरिक्ष आधारित सर्विलांस मिशन के तीसरे चरण को मंजूरी दे दी है। इसका मकसद सिविलियन और मिलिट्री एप्लिकेशन्स के लिए बेहतर भूमि व समुद्री डोमेन तैयार करना है। यह प्रोजेक्ट राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय की ओर से हैंडल किया जाएगा, जहां रक्षा मंत्रालय में एकीकृत मुख्यालय के तहत डिफेंस स्पेस एजेंसी भी शामिल है। रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्र सरकार फिलहाल इस मंजूरी पर चुप है। हालांकि, माना जा रहा है कि प्रस्ताव में निगरानी के लिए लो अर्थ ऑर्बिट और भूस्थैतिक कक्षा में 52 उपग्रहों का प्रक्षेपण शामिल है। 26,968 करोड़ रुपये की लागत वाली यह परियोजना

है। इसके तहत इसरो की ओर से 21 उपग्रहों का निर्माण व प्रक्षेपण होगा। बाकी 31 सैटेलाइट्स की जिम्मेदारी निजी कंपनियों के पास होगी। अंतरिक्ष आधारित सर्विलांस 1 की शुरुआत साल 2001 में वाजपेयी सरकार के कार्यकाल में हुई थी। इसमें निगरानी के लिए 4 उपग्रहों (कार्टोसैट 2ए, कार्टोसैट 2बी, इरोस ए और रिसैट 2) का प्रक्षेपण शामिल था। एसबीएस 2 के तहत साल 2013 में 6 उपग्रहों (कार्टोसैट 2सी, कार्टोसैट 2डी, कार्टोसैट 3ए, कार्टोसैट 3बी, माइक्रोसैट 1 और रिसैट 2ए का लॉन्च शामिल था। अब एसबीएस 3 के तहत अगले दशक के भीतर 52 उपग्रह लॉन्च करने का टारेगट रखा गया है। पता चला है कि तीनों सर्विसेज के पास अपने भूमि, समुद्र या वायु-आधारित मिशनों के लिए उपग्रह होंगे। केंद्र सरकार बीते जनवरी में सैन्य उपग्रहों के लिए बात कर रही है।

हैदराबाद के दुर्गा पंडाल में तोड़फोड़, देवी की मूर्ति का हाथ तोड़ा

पुलिस बोली-आरोपियों ने दान पेटी हटाई, जिससे प्रतिमा खंडित हुई

हैदराबाद (एजेंसी)। हैदराबाद के नामपल्ली में कुछ लोगों ने दुर्गा पूजा पंडाल में तोड़फोड़ की। आरोपियों ने दुर्गा देवी का हाथ भी तोड़ दिया। घटना की जानकारी शुक्रवार सुबह लगी, जब आयोजक पूजा करने पहुंचे। आयोजकों ने बताया कि गुरुवार रात डांडिया कार्यक्रम होने तक पुलिस वहां मौजूद थी। घटना कितने बजे की है, अभी इसकी जानकारी सामने नहीं आ सकी है। हालांकि, पुलिस का कहना है कि अज्ञात व्यक्तियों ने हुंडी (दान पेटी) को एक तरफ रख दिया, जिससे देवी दुर्गा की मूर्ति का हाथ गिर गया। देवी शरण नवरात्रि समारोह के

हिस्से के रूप में एग्जीबिशन सोसाइटी के रहवासी और कर्मचारी हर साल देवी की मूर्ति बनाते हैं। पहले बिजली काटी, फिर सीसीटीवी तोड़े पुलिस और आयोजकों ने बताया कि आरोपियों ने पंडाल में घुसने से पहले वहां की बिजली काट दी। इसके बाद उन्होंने वहां लगे सीसीटीवी कैमरे भी तोड़ दिए। इससे घटना के समय का कोई भी फुटेज अभी सामने नहीं आ सका है। आरोपियों ने बैरिकेडिंग हटाई और पूजा का सामान फेंक दिया। हैदराबाद के खैरताबाद में भी 2 साल पहले मां दुर्गा की प्रतिमा को तोड़ने का मामला सामने आया था। तब बुर्का पहनकर दो महिलाएं पंडाल में घुसीं और तोड़फोड़ शुरू की थी। इसके बाद उन्होंने पंडाल में आग लगा दी। स्थानीय लोगों ने दोनों महिलाओं को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया था। महिलाओं ने विरोध करने वालों पर भी हमला किया था। इससे पहले 26 अगस्त को भी हैदराबाद के रक्षापुरम इलाके में कुछ लोगों ने भूलक्ष्मी मंदिर की मूर्ति तोड़ दी थी। इसके बाद बड़ी संख्या में लोग रात में ही मंदिर में जमा हो गए थे।

आसियान देशों के बीच एकता को सपोर्ट करता रहा है भारत

ईस्ट-एशिया समिट में मोदी बोले-यह हमारे इंडो-पैसिफिक विजन का हिस्सा

पीएम ने कहा-दुनिया में शांति के लिए आसियान देशों में एकता बेहद जरूरी

वियनतियाने (एजेंसी)। प्रधानमंत्री मोदी शुक्रवार को लाओस की राजधानी वियनतियाने में ईस्ट एशिया शिखर सम्मेलन में हिस्सा ले रहे हैं। यहां बैठक को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, भारत हमेशा से ही आसियान देशों के बीच एकता को सपोर्ट करता रहा है। आसियान भारत के इंडो-पैसिफिक विजन और क्वाड को-ऑपरेशन के केंद्र में है। पीएम मोदी ने कहा, दुनिया भर में जारी अलग-अलग जंग का सबसे बुरा असर ग्लोबल साउथ के देशों पर पड़ रहा है। ऐसे में दुनिया में शांति बहाल करना बेहद जरूरी है। मैं बुद्ध की धरती से आता हूं। हमने हमेशा यही कहा है कि यह जंग का युग नहीं है। 21वीं सदी भारत और आसियान देशों की सदी ईस्ट एशिया समिट शुरू होने से पहले पीएम मोदी ने अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन से मुलाकात की। उन्होंने मिल्टन तूफान में मारे गए लोगों के प्रति दुख जताया। इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने गुरुवार को लाओस की राजधानी वियनतियाने में इंडिया-आसियान समिट में हिस्सा लिया। इस दौरान मोदी ने इंडिया-आसियान समिट को संबोधित भी किया था। समिट में बोलते हुए उन्होंने कहा था- मेरा मानना

है कि 21वीं सदी इंडिया और आसियान देशों की सदी है। आज जब दुनिया के कई हिस्सों में संघर्ष और तनाव की स्थिति है, भारत और आसियान की मित्रता, संवाद और सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि, मैंने भारत की एक्ट-ईस्ट नीति की घोषणा की थी। पिछले एक दशक में इस नीति ने भारत और आसियान देशों के संबंधों को नई ऊर्जा, दिशा और गति दी है। साथ ही मोदी ने लाओस में भारत और ब्रूनेई के बीच सीधी उड़ानें शुरू करने की घोषणा की। पीएम मोदी लाओस में 10वीं बार इंडिया-आसियान समिट में शामिल हुए।

महाराष्ट्र में 'मिशन 40' से गेम पलटने की तैयारी

- हरियाणा की तरह होने लगी घेरेबंदी, बीजेपी करेगी खेला

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की एनडीए सरकार ने गुरुवार को दो बड़े फैसले लिए। एक तरफ उसने राज्य अनुसूचित जाति आयोग को संवैधानिक दर्जा देने का फैसला कर लिया तो वहीं केंद्र सरकार से ओबीसी क्रीमी लेयर की लिमिट बढ़ाकर 15 लाख रुपये तक करने की सिफारिश की है। फिलहाल यह सीमा 8 लाख रुपये की ही है। वहीं एक फैसला केंद्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने लिया है, जिसके तहत महाराष्ट्र की 19 ओबीसी जातियों और उपजातियों को केंद्र की पिछड़ा सूची में शामिल किया गया है। इन जातियों में गुर्जर, लोध, डांगरी, भोयर आदि शामिल हैं। इन फैसलों से कितनी जातियों को किस तरह से फायदा होगा, यह

अलग से अध्ययन का विषय हो सकता है। लेकिन अहम बात यह है कि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली सरकार के इस फैसले से चुनावी समीकरण पलट सकते हैं। इन सारे समीकरणों को साधते हुए मिशन 40 का प्लान तैयार किया गया है। भाजपा, शिवसेना और एनसीपी के गठबंधन को लगता है कि इन फैसलों से वह राज्य के समीकरणों को ही बदलने में सफल हो पाएंगे। इन फैसलों की एक बड़ी वजह राज्य में बीते कई सालों से चल रहा मराठा आंदोलन है।

विजयदशमी पर्व की हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ

असत्य पर सत्य की जीत 'दशहरा पर्व' के पावन शुभ अवसर पर 12 अक्टूबर शनिवार को 'सुबह सवेरे' कार्यालय में अवकाश रहेगा। अतः अखबार का अगला अंक 14 अक्टूबर 2024 को प्रकाशित होगा। सभी पाठकों को दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं... बधाई...। – सं.

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्या-पूजन और कन्या-भोज की सनातन परंपरा का किया पालन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मोक्षदायिनी मां सिद्धिदात्री जी के चरणों में किया शत-शत प्रणाम

- मातारानी से सभी के लिए मंगलमय और सुखमय जीवन के लिये की प्रार्थना
- मुख्यमंत्री निवास में कन्या-पूजन में कन्याओं के पांव पखारे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शारदीय नवरात्र की महानवमी पर मुख्यमंत्री निवास में कन्या-पूजन और कन्या-भोज की सनातन परंपरा का पालन किया। मातृ-शक्ति के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रदर्शित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आज नौ दुर्गा स्वरूपा कुंवारी कन्याओं के पांव पखारे और उनका विधि-विधान से पूजन किया। उन्होंने श्रद्धापूर्वक कन्याओं को चुनरी ओढ़ाई और आरती उतारी। पूजन के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्याओं से संवाद कर उन्हें दुलारा भी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्या-पूजन के बाद कन्याओं को

स्वयं अपने हाथों से भोजन परोसा और उनकी रूचि के अनुरूप मिष्ठान भी खिलाये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कन्या भोज के बाद सभी कन्याओं को दक्षिणा और उपहार देकर उनका आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मोक्षदायिनी मां सिद्धिदात्री के चरणों में शत-शत प्रणाम कर प्रदेशवासियों को शारदीय नवरात्रि की महानवमी पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने मातारानी से सभी को संकल्प सिद्धि के असीम आशीर्वाद के साथ मंगलमय और सुखमय जीवन की प्रार्थना भी की।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 12 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

यूपी सरकार ने अखिलेश को जेपी सेंटर जाने से रोका

सपा प्रमुख ने घर में लगी लोकनायक की मूर्ति पर माला चढ़ाई, कहा-नीतिश एनडीए से समर्थन वापस लें

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी सरकार ने शुक्रवार को अखिलेश यादव को जेपी कन्वेशन सेंटर जाने से रोका तो सपा प्रमुख ने घर में लगी लोकनायक जय प्रकाश नारायण की मूर्ति पर माला चढ़ा दी। अखिलेश यादव ने कहा था कि वे जय प्रकाश नारायण नेशनल कन्वेशन सेंटर में माल्यार्पण करेंगे। अखिलेश को रोकने के पीछे यूपी सरकार का तर्क था- बारिश के चलते जेएनआईसी में जीव-जंतु हो सकते हैं, इसलिए माल्यार्पण करना सुरक्षित नहीं है। सरकार ने शुक्रवार को सपा प्रमुख अखिलेश यादव

के घर के बाहर बैरिकेडिंग की, तार बिछाए और फोर्स तैनात कर दी। सेंटर के बाहर भी टीन की दीवार खड़ी कर दी गई। इसके बाद सपा कार्यकर्ता अखिलेश के घर में लगी मूर्ति सड़क पर ले आए। सपा प्रमुख घर से बाहर निकले और मूर्ति पर माल्यार्पण किया। उन्होंने जदयू चीफ नीतिश कुमार से अपील की कि वे केंद्र की भाजपा सरकार से अपना समर्थन वापस ले लें। अखिलेश ने कहा- यूपी सरकार जेएनआईसी को बेचना चाहती है। पहले भी हमें माल्यार्पण से रोका गया। योगी लोकनायक का इतिहास नहीं जानते। हमें श्रद्धांजलि देने से रोका। यूपी सरकार हर अच्छे काम को रोकती है। ये गूंगी और बहरी सरकार है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस

ममता सरकार के खिलाफ भूख हड़ताल कर रहा डॉक्टर गंभीर

● बेहोश होने के बाद लगाई गई ऑक्सीजन, संगठन ने लिखा-मांगों पर फौरन ऐक्शन लें

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर के विरोध में 7 ट्रेनी डॉक्टर 6 अक्टूबर से अनशन पर बैठे हुए हैं। गुरुवार रात ट्रेनी डॉक्टर अनिकेत महतो की कंडीशन क्रिटिकल हो गई। अनिकेत को आरजी कर मेडिकल हॉस्पिटल में ही एडमिट किया गया। आरजी कर की क्रिटिकल केयर यूनिट इन्चार्ज डॉ. सोमा मुखोपाध्याय ने बताया कि अनिकेत को बेहोशी की हालत में हॉस्पिटल लाया गया था। डॉक्टर की हालत गंभीर है, उसे ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है। 5 डॉक्टरों की टीम उस पर नजर रखे है। एक जूनियर डॉक्टर देबाशीष हल्दर ने बताया कि भूख हड़ताल पर

बैठा अनिकेत पिछले कुछ दिनों से पानी भी नहीं पी रहा था। 6 और जूनियर डॉक्टरों की सेहत में भी गिरावट हो रही है। जरूरत को देखते हुए हमने सारे इक्विपमेंट तैयार रखे हैं। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने भी ष्टरूममता बनर्जी को लेटर लिखा है। जिसमें मांग की गई है कि वे राज्य सरकार डॉक्टरों की मांगों पर तुरंत एक्शन ले, शांतिपूर्ण माहौल और सुरक्षा कोई विलासिता नहीं है। हम अपील करते हैं, इस मुद्दे को सुलझाएं। आरजी कर अस्पताल में 8 अगस्त की रात ट्रेनी डॉक्टर का रेप और मर्डर किया गया था। 9 अगस्त को विक्टिम की बॉडी मेडिकल कॉलेज में मिली थी। इसके अगले दिन से जूनियर डॉक्टरों ने 42 दिन तक विरोध प्रदर्शन किया था। राज्य सरकार ने डॉक्टरों की मांगें नहीं मानी। जिसके चलते डॉक्टरों ने 5 अक्टूबर की शाम से भूख हड़ताल शुरू की। इसमें 9 डॉक्टर शामिल हैं, आज भूख हड़ताल का छठवां दिन है। संगठन बोला- बंगाल सरकार डॉक्टरों की सभी मांगों को मानने में सक्षम अनशन कर रहे जूनियर डॉक्टरों के स्वास्थ्य को लेकर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के प्रेसीडेंट आरवी अशोकन ने चिंता जताई है।

सिद्धारमैया सरकार ने वापस लिया हुबली दंगे का केस

● भड़की बीजेपी ने कांग्रेस पर लगाया मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक में सिद्धारमैया सरकार ने 2022 के हुबली दंगों से जुड़े मामले को वापस ले लिया है। इस फैसले की वजह से भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर मुस्लिम तुष्टिकरण का आरोप लगाया है। बीजेपी का कहना है कि कानून और पुलिस विभाग के विरोध के बावजूद यह केस वापस लिया गया है। दरअसल मामला यह है कि 2022 में हुबली में हुए दंगों के बाद कई लोगों के खिलाफ केस दर्ज हुआ था। इनमें ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के कुछ नेता भी शामिल थे। बीजेपी का आरोप है कि एआईएमआईएम नेताओं ने मुस्लिमों की भीड़ को भड़काकर पुलिस स्टेशन पर हमला करवाया था। बीजेपी आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने एक्स (पहले ट्विटर) पर लिखा, कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने कानून और पुलिस विभाग के विरोध के बावजूद

पुराने हुबली पुलिस स्टेशन दंगा मामले को वापस ले लिया है। उन्होंने आगे कहा कि उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने हाल ही में सरकार को पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि मामले को वापस ले लिया जाए। दंगे और उसके बाद हुए पथराव में कई पुलिस अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

शांति के नोबेल का ऐलान, जापानी संगठन को पुरस्कार

स्टॉकहोम (एजेंसी)। साल 2024 का शांति का नोबेल जापान के संगठन निहोन हिदान्क्यो को मिला है। नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने शुक्रवार को इसका ऐलान करते हुए कहा कि इस साल का नोबेल पीस प्राइज जापानी संगठन निहोन हिदान्क्यो

को देने का फैसला लिया गया है। संगठन को ये पुरस्कार परमाणु हथियारों के खिलाफ लंबी मुहिम चलाने के लिए दिया जा रहा है। संगठन ने दुनिया को परमाणु मुक्त करने के लिए वर्षों से संघर्ष किया है। जापान के इस संगठन को उन लोगों ने बनाया है, जो दूसरे विश्व युद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमले में जिंदा बच गए थे। इनको हिबाकुशा भी बुलाया जाता है। अध्यक्ष जॉर्गन वात्रे फ्रिदनेस ने शुक्रवार को पुरस्कार की घोषणा की।

उज्जैन में महाष्टमी पर माता को लगा मदिरा का भोग

आबकारी विभाग ने दी 31 बोतल शराब, 27 किमी तक धार लगाई

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में नवरात्रि की महाअष्टमी पर शुक्रवार को शासकीय नगर पूजा की गई। कलेक्टर नीरज सिंह ने चौबीस खम्बा माता मंदिर में महामाया और महालया माता को मदिरा का भोग लगाकर पारंपरिक पूजन किया।

इसके बाद कलेक्टर की अगुवाई में एक दर्जन से अधिक पटवारी, कोटवार सहित कई अधिकारी-कर्मचारी और श्रद्धालु सड़क पर मदिरा की धार लगाई। शासकीय दल ने ढोल-बैंड बजाते हुए 27 किलोमीटर के दायरे में आने वाले 40 मंदिरों में पूजा की।

नगर पूजा की यह परंपरा राजा विक्रमादित्य के समय से चली आ रही है। इसके लिए आबकारी विभाग शराब की 31 बोतल निःशुल्क राजस्व विभाग को देता है।

शुक्ल पक्ष की अष्टमी को तांत्रिक स्वरूप में होती है पूजा- भूतभावन भगवान महाकालेश्वर की पावन नगरी उज्जैन में शासन की ओर से आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को यह पूजा तांत्रिक स्वरूप में होती आ रही है। इस

दौरान नगर के 40 देवी, भैरव और हनुमान मंदिरों में पूजन होता है। ढोल-नगाड़ों के साथ माता की महा आरती के बाद माता को सोलह श्रृंगार की सामग्री, चुनरी और बड़बाकल का भोग लगाया जाता है। इसी दिन दोपहर 12 बजे हरसिद्धि मंदिर के गर्भगृह में भी माता को श्रृंगार सामग्री अर्पित कर शासकीय पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि मां को मदिरा का भोग लगाने से शहर में सुख-समृद्धि आती है।

काले चने-गेहूं को उबालकर बनाते हैं बलबाकल का भोग- पिछले 24 साल से नगर पूजा की व्यवस्था देखने वाले पटवारी भगवान सिंह यादव बताते हैं कि पूजन के लिए करीब 45 तरह का सामान दो दिन पहले लेकर रख लिया जाता है। एक दिन पहले चौबीस खंबा माता मंदिर के पास काले चने और गेहूं को उबालकर करीब 35 किलो बलबाकल तैयार करते हैं। इसके साथ ही माता को भोग के लिए पूरी-भजिया भी बनाए जाते हैं। अष्टमी के दिन सुबह 6 बजे पूरा सामान तैयार करके रख लिया जाता है। आरती के बाद 5 ढोल से शहर के 40 मंदिरों में पूजन किया जाता है।

27 किलोमीटर की यात्रा में 40 मंदिरों में पूजा- चौबीस खंबा मंदिर में माता महामाया और महालया की पूजा के बाद शासकीय दल नगर पूजा के लिए निकलता है। कोटवार मदिरा से भरी हांडी लेकर चलते हैं, इसकी धार नगर के रास्तों पर बहती है। ढोल के साथ निकले शासकीय दल के सदस्य 12 घंटे तक 27 किलोमीटर के दायरे में आने वाले चामुंडा माता, भूखी माता, काल भैरव, चंडमुंड नाशिनी सहित 40 देवी, भैरव और हनुमान मंदिरों में पूजा करते हैं। देवी और भैरव को मदिरा का भोग लगाया जाता है। हनुमान मंदिरों में ध्वजा अर्पित की जाती है। करीब 8 बजे गढ़कालिका माता मंदिर में पूजन के बाद नजदीक के हांडी फोड़ भैरव मंदिर में पूजा समाप्त होती है।

जापानी संगठन निहोन हिदांक्यो को नोबेल पीस प्राइज

● इसमें हिरोशिमा-नागासाकी हमले के पीड़ित भी हैं शामिल ● परमाणु हथियार मुक्त दुनिया बनाने के लिए चलाई मुहिम

टोकियो (एजेंसी)। जापान के संगठन निहोन हिदांक्यो को इस साल शांति के लिए नोबेल प्राइज से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान दुनिया में परमाणु हथियारों के खिलाफ मुहिम चलाने के लिए दिया गया है। इस संगठन में वे लोग शामिल हैं जो दूसरे विश्व युद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमले में जीवित बचे थे। इन्हें हिबाकुशा कहा जाता है। ये हिबाकुशा दुनिया भर में अपनी पीड़ा और दर्दनाक यादों को निहोन हिदांक्यो संगठन के जरिए साझा करते हैं। नोबेल कमेटी ने कहा कि एक दिन परमाणु हमले को झेलने वाले ये लोग हमारे पास नहीं रहेंगे, लेकिन जापान की नई पीढ़ी उनकी याद और अनुभवों को दुनिया के साथ साझा करती रहेगी और उन्हें याद दिलाती रहेगी कि परमाणु हथियार दुनिया के लिए कितने खतरनाक हैं। हाइड्रोजन बमों की टेस्टिंग के बाद बना संगठन निहोन हिदांक्यो संगठन की स्थापना 1956 में

परमाणु और हाइड्रोजन बमों के खिलाफ हो रही दूसरी वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के दौरान हुई थी। अमेरिका ने 1954 में हाइड्रोजन बम का टेस्ट किया था इसके विरोध में 1955 में वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की शुरुआत हुई थी। 1945 में हुए परमाणु हमलों के लगभग 10 साल बाद भी पीड़ितों को अमेरिका की तरफ से कोई मदद नहीं मिली थी। अमेरिकी सेना ने पीड़ित लोगों पर परमाणु हमलों के बारे में कुछ भी बोलने और लिखने को लेकर रोक लगा रखी थी। संगठन ने अपनी स्थापना के बाद से हिबाकुशा (पीड़ित लोगों) के समूहों को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भेजा, जिससे दुनिया के लोगों को परमाणु हथियारों से होने वाले भयानक नुकसान और मानव पीड़ा के बारे में बताया जा सके। संगठन ने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की है कि दुनिया में कहीं भी और हिबाकुशा न बनाए जाएं, और दुनिया परमाणु हथियार-मुक्त बन सके। 6 अगस्त 1945 को 8 बजकर 15 मिनट पर अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर एलोना गे विमान से परमाणु बम गिराया था। 43 सेकेंड हवा में रहने के बाद ये फट गया था। इसके तुरंत बाद एक बड़ा आग का गोला उठा था और आसपास का तापमान 3000 से 4000 डिग्री पहुंच गया था। विस्फोट से इतनी तेज हवा चली कि 10 सेकेंड में ही ब्लास्ट हो गया।

इजराइल ने बेरूत पर फिर से की एयरस्ट्राइक, 22 लोगों की मौत

● यूएन की इमारत पर भी हमला, सऊदी-कतर बोले-ईरान पर अटैक के लिए एयरस्पेस नहीं खोलेंगे

बेरूत (एजेंसी)। इजराइल ने गुरुवार को लेबनान की राजधानी बेरूत में एक इमारत पर हवाई हमले किए। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि हमले में 22 लोगों की मौत हो गई, जबकि 177 लोग घायल हुए हैं। इजराइल ने हमले पर फिलहाल कोई बयान जारी नहीं किया है। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, हमले में हिजबुल्लाह के सीनियर सदस्य और कोऑर्डिनेशन यूनिट के चीफ वाफीक साफा को टारगेट किया गया था। हालांकि, हमलों के बीच

वह भागने में कामयाब रहा। यह सेंट्रल बेरूत में इजराइल की अब तक की सबसे बड़ी एयरस्ट्राइक रही है। इस हमले से कुछ घंटे पहले दक्षिणी लेबनान में इजराइली टैंकों ने यूएन की एक इमारत पर अटैक किया। इस हमले में यूएन पीसकीपिंग फोर्स के 2 सदस्य घायल हो गए। ये दोनों इंडोनेशिया के नागरिक हैं।

नोएल टाटा बने टाटा ट्रस्ट के नए चेयरमैन

● रतन टाटा के बाद मिली बड़ी जिम्मेदारी, टाटा संस में है 66 फीसदी हिस्सा

मुंबई (एजेंसी)। नोएल टाटा को टाटा ट्रस्ट का नया चेयरमैन नियुक्त किया गया है। टाटा ट्रस्ट की शुक्रवार को हुई बैठक में सर्वसम्मति से यह फैसला लिया गया है। यह बात एक रिपोर्ट में कही गई है। नोएल टाटा, रतन टाटा के सौतेले भाई हैं। टाटा ट्रस्ट की शुक्रवार

को दो मीटिंग्स हुईं। एक बैठक रतन टाटा को श्रद्धांजलि देने के लिए और दूसरी मीटिंग नए चेयरमैन की नियुक्ति के लिए हुई। बता दें कि रतन टाटा का देहांत बुधवार को देर रात मुंबई में हुआ। उनका अंतिम संस्कार कल यानी गुरुवार को हुआ। इस नियुक्ति के साथ ही नोएल टाटा, सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट के 11वें और सर रतन टाटा ट्रस्ट के छठवें चेयरमैन बन गए हैं। नोएल टाटा, नवल एच. टाटा और सिमोन एन. टाटा के बेटे हैं। नोएल टाटा पहले से ही सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट और सर रतन टाटा ट्रस्ट के ट्रस्टी थे। टाटा ट्रस्ट की टाटा संस में 66 पर्सेंट हिस्सेदारी है। टाटा संस, डायवर्सिफाइड टाटा ग्रुप की होल्डिंग कंपनी है। नोएल के अलावा मेहली मिस्त्री का नाम भी टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन के तौर पर चल रहा था।

फिर से फाइटर जेट का इंजन बना रहा है भारत

'कावेरी' ने किया था निराश, पूर्ण स्वदेशीकरण का है सपना

नई दिल्ली (एजेंसी)। फाइटर जेट का इंजन बनाना बहुत मुश्किल काम है। इसके लिए मैकेनिकल, मेटलर्जिकल, और इलेक्ट्रिकल जैसी इंजीनियरिंग क्षेत्र में विशेषज्ञता की जरूरत होती है। भारत ने साल 1989 में कावेरी नाम का जेट इंजन विकसित करने की कोशिश की थी, लेकिन वह सफल नहीं रहा। 1990 के दशक में जब भारत आर्थिक सुधारों की दिशा में आगे बढ़ रहा था, परमाणु परीक्षण कर रहा था और वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति मजबूत कर रहा था, उसी समय देश के रक्षा प्रतिष्ठान ने एक स्वदेशी सैन्य जेट इंजन बनाने की दिशा में काम करना शुरू किया। इस इंजन का नाम 'कावेरी' रखा गया, जो दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी के नाम पर आधारित है। भारत में स्वदेशीकरण एक बड़ा सपना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार और पूर्ववर्ती सरकारें इस सिद्धांत का पालन करती रही हैं कि देश में ही अत्याधुनिक तकनीकों का विकास किया जाए। सैन्य जेट इंजन बनाना इस दिशा में एक

महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह एक बेहद जटिल प्रक्रिया है जिसे बनाने के लिए दशकों के अनुभव की आवश्यकता होती है। दुनिया में सिर्फ पांच देश ही ऐसे हैं जो इस प्रकार के एडवांस इंजन बनाने की क्षमता रखते हैं। ये देश अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन हैं। यानी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के वीटो पावर रखने वाले स्थायी सदस्य ही अभी जेट इंजन बना पाते हैं। हाल ही में चीन ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए एक स्वदेशी इंजन के साथ लड़ाकू विमान का परीक्षण किया है, लेकिन अब तक वह रूस के उपकरणों पर निर्भर रहा है। फाइनेंशियल टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत ने भी इस एलीट क्लब में शामिल होने की कोशिश की, लेकिन वर्षों की रिसर्च और टेस्टिंग के बावजूद, कावेरी इंजन उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाया। यह इंजन तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के लिए पर्याप्त थ्रस्ट देने में विफल रहा। अब भारत की योजना इस इंजन का इस्तेमाल भविष्य के मानव रहित हवाई वाहनों में करने की है।

हालांकि, भारत का स्वदेशी सैन्य जेट इंजन बनाने का मिशन खत्म नहीं हुआ है। कावेरी इंजन से प्राप्त अनुभव और गलतियों से सीखे गए सबक अब नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भारत अब एक विश्वस्तरीय 'मेड इन इंडिया' जेट इंजन बनाने की दिशा में अग्रसर है।

महादेव सट्टेबाजी ऐप मामला

सौरभ चंद्राकर दुबई में गिरफ्तार बहुत जल्द लाया जाएगा भारत

● छत्तीसगढ़ में कई बड़े लोगों की बढ़ गई धड़कनें, भूपेश बघेल भी हैं आरोपी

रायपुर (एजेंसी)। महादेव सट्टेबाजी ऐप मामले में मुख्य आरोपी सौरभ चंद्राकर को जल्द ही यूएई से भारत लाया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक, यह कार्रवाई अगले एक हफ्ते के अंदर हो सकती है। चंद्राकर पर 5,000 करोड़ रुपए के सट्टेबाजी रैकेट चलाने का आरोप है। इस मामले में विदेश मंत्रालय की मदद से यूएई सरकार से प्रत्यर्पण की मंजूरी मिल गई है। सौरभ चंद्राकर छत्तीसगढ़ के भिलाई का रहने वाला है। कभी जूस की दुकान चलाने वाला चंद्राकर आज एक बड़े अंतरराष्ट्रीय सट्टेबाजी सिंडिकेट का सरगना बन गया। इंटरपोल के रेड कॉर्नर नोटिस के बाद उसे दिसंबर में दुबई में हिरासत में लिया गया था। फिलहाल वह दुबई में नजरबंद है। इससे पहले उसके साथी रवि उप्पल को भी दुबई में

ही गिरफ्तार किया गया था। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अनुसार, चंद्राकर और उप्पल दुबई से महादेव सट्टेबाजी नेटवर्क चलाते थे। इस नेटवर्क में पुलिस, नौकरशाह और नेता भी शामिल थे, जो गैरकानूनी गतिविधियों को अंजाम देने में उनकी मदद करते थे।

संजू जैन के चित्रों की एकल प्रदर्शनी

भोपाल (नप्र)। चित्रकार श्रीमती संजू जैन की लेह लद्दाख की प्राकृतिक धरोहर पर आधारित चित्रों की एकल प्रदर्शनी दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर स्थित विजुअल आर्ट गैलरी में, 11 अक्टूबर से प्रारंभ हुई। जाने- माने कलाविद् प्रयाग शुक्ल द्वारा क्यूरेट की जा रही यह

प्रदर्शनी 14 अक्टूबर तक चलेगी। उल्लेखनीय है कि श्रीमती संजू जैन हाल में एक कला- समारोह में सम्मिलित होकर चीन से लौटी हैं। जाने- माने रंग निर्देशक व कला-संग्राहक इब्राहिम अल्काजी ने सबसे पहले संजू जैन की प्रतिभा को पहचाना और स्वयं की गैलरी आर्ट हेरीटेज में उनके चित्रों का एक एकल शो आयोजित किया था। संजू जैन के देश विदेश में करीब 75 से अधिक एकल और ग्रुप शो आयोजित हो चुके तथा उनको करीब 18 से अधिक पुरुष्कारों से नवाजा जा चुका है।जिसमें रजा फाउंडेशन दिल्ली, ललित कला अकादमी शिमला, लखनऊ, एवं अमृतसर, कैमलिन अवार्ड मुंबई, अखिल भारतीय कालिदास अवॉर्ड उज्जैन प्रमुख है । संजू जैन को मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर भारत सरकार की स्कॉलरशिप से भी सम्मानित किया जा चुका है।

सत्य, नैतिकता और धर्म के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है विजयादशमी पर्व : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएँ

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रदेशवासियों को विजयादशमी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने प्रदेशवासियों की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की है। उन्होंने प्रार्थना की है कि यह पर्व सभी के जीवन में खुशहाली और नई ऊर्जा लेकर आए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विजयादशमी का पावन पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। यह सभी को सत्य, नैतिकता और धर्म के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। विजयादशमी का उत्सव हमें यह सिखाता है कि सत्य और सदाचार की शक्ति हमेशा विजयी होती है, चाहे कठिनाइयाँ कितनी भी बड़ी क्यों न हों। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह पर्व समाज में शांति, सद्भाव और भाईचारे का संदेश देता है। केवल शांति और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में ही हम एक मजबूत और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं। यह पर्व हमें प्रेरित करता है कि हम अपने भीतर की नकारात्मकताओं को समाप्त कर, समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए सकारात्मक सोच और कर्म का संकल्प लें।

अवैध संबंध में हत्या; पत्नी, दोस्त हिरासत में

चार दिन पहले घर में दोनों को एक साथ देखा था, कर दी थी मारपीट

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। मामला कोलार इलाके के कजलीखेड़ा का है। मजदूर का शव झुग्गी में मिला। सिर में चोट के निशान हैं। घटनास्थल से पुलिस ने कुल्हाड़ी बरामद की है। हत्या की मुख्य संदेही मृतक की पत्नी और एक साथी मजदूर को हिरासत में लिया गया है। पुलिस के मुताबिक, हत्या की वजह अवैध संबंध हैं। मृतक की पत्नी और उसके दोस्त से पूछताछ की जा रही है। टीआई संजय सिंह सोनी ने बताया कि बाबूलाल सौर (45) मूलरूप से ओरछा का रहने वाला था। भोपाल के बंसल कैंपस में रहकर कंस्ट्रक्शन वर्क में मजदूरी करता था। गुरुवार रात 8.30 बजे सूचना मिली कि झुग्गी में खून से सनी लाश पड़ी है। स्पॉट पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया।

चार दिन पहले हुआ था विवाद

मृतक की पत्नी और उसके दोस्त में अफेयर की बात सामने आ रही है। बाबूलाल ने चार दिन पहले साथी मजदूर को अपने घर में पत्नी के साथ देख लिया था। इसके बाद उसने युवक के साथ मारपीट कर दी थी। इसी का बदला लेने की नीयत से पत्नी और युवक ने सोते समय बाबूलाल की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी।

कार्य में लापरवाही एवं अनियमितता बरतने पर मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने 39 आउटसोर्स कर्मचारी किए ब्लैक लिस्ट

भोपाल (नप्र)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कार्य में लापरवाही और अनियमितता बरतने के चलते कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल ग्रामीण, रायसेन, नर्मदापुरम ग्रामीण, भिंड, गुना एवं शिवपुरी में बाह्यस्त्रोत एजेंसी के माध्यम से कार्यरत 39 आउटसोर्स कार्मिकों को सेवाओं से पृथक करते हुए ब्लैक लिस्ट किया है। कंपनी द्वारा ब्लैक लिस्ट किये गए 39 आउटसोर्स कार्मिक अब कंपनी कार्यक्षेत्र के किसी भी बिजली कार्यालय में कार्य नहीं कर सकेंगे।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल ग्रामीण वृत्त में कार्यरत 3, नर्मदा पुरम ग्रामीण में 3 आउटसोर्स कार्मिकों के साथ ही भिंड में 6, गुना में 15, रायसेन में 1 तथा शिवपुरी वृत्त में कार्यरत 11 आउटसोर्स कर्मचारियों को लापरवाही और अनियमितता बरतने के कारण सेवा से पृथक कर ब्लैक लिस्ट किया है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने सचेत किया है कि कार्य में पारदर्शिता, लगन, निष्ठा और उपभोक्ता सेवाओं को लेकर किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि कंपनी में जीरो टोलरेंस की नीति लागू है और सभी मैदानी अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे उपभोक्ता सेवाओं और कंपनी की उत्तरोत्तर तरक्की के लिए निरन्तर प्रयास करते रहें।

आईपीएस अवॉर्ड के लिए डीपीसी बैठक जल्द

म.प्र.सरकार ने भेजे एसपीएस अफसरों के नाम, चार अफसर होंगे पदोन्नत

भोपाल (नप्र)। राज्य पुलिस सेवा (एसपीएस) से भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के लिए होने वाली डीपीसी (विभागीय पदोन्नति समिति) की बैठक दीपावली के आसपास हो सकती है। इसके लिए राज्य सरकार ने एसपीएस को आईपीएस अवॉर्ड के लिए दावेदार अफसरों के नाम शार्टलिस्ट कर भेज दिए हैं। इसमें 1995 बैच के कुछ अफसरों के अलावा 1997 बैच के अफसरों को पदोन्नत होने का मौका मिलेगा। केंद्र सरकार और संघ लोकसेवा आयोग के बीच डीपीसी बैठक को लेकर सहमति बनने के बाद इसके लिए बैठक होगी।

गुजराती भवन में आयोजित गरबा महोत्सव में शामिल हुए राज्यपाल

मंगूभाई पटेल ने की मां जगदम्बा की आरती, समाज ने पौधे देकर बच्चों को किया सम्मानित

भोपाल (नप्र)। गुजराती समाज द्वारा आयोजित नवरात्र महोत्सव के अष्टमी पूजन में राज्यपाल मंगू भाई पटेल ने शिरकत की। गुरुवार शाम आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने पूजा-आरती की और नव निर्मित हॉल का उद्घाटन भी किया।

राज्यपाल पटेल ने अपने संबोधन में नवरात्र के आयोजन से युवा पीढ़ी को जोड़ने और पर्यावरण संरक्षण को थीम के रूप में रखने की सराहना की। समाज के अध्यक्ष संजय पटेल ने राज्यपाल समेत सभी अतिथियों को सम्मानित किया और गरबा महोत्सव में शामिल बच्चों को गमले सहित पौधे भेंट किए। इस मौके पर बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं ने 108 थालियों से माता की आरती की।

उल्लेखनीय है कि गुजराती भवन में 9 दिवसीय गरबा महोत्सव का शुभारंभ 3 अक्टूबर को किया गया था, जिसका समापन 11 अक्टूबर को किया जाएगा। आयोजन में मुंबई के म्यूजिक ग्रुप की लाइव परफॉर्मेंस ने चार चांद लगा दिए हैं। गुजराती समाज भोपाल में मात्र और मात्र गुजराती पारंपरिक लोकगीतों पर आधारित माताजी के गरबे गाए जाते हैं और आराधना की जाती है ।किसी भी तरह के हिंदी गाने, हिंदी फिल्मों के गानों या उनकी धुन, पाश्चात्य संगीत को इस्तेमाल करना पूर्णत वर्जित है। गरबा करने वाले प्रतिभागियों को भी पारंपरिक वेशभूषा में ही आना अनिवार्य है गुजराती समाज में नवरात्रि का पर्व हर साल धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष, पहली नवरात्रि से लेकर अब तक परिवार के सभी सदस्य 5 वर्ष से लेकर 75 वर्ष तक गरबा का आनंद ले रहे हैं। इस उत्सव में सभी का उत्साह देखते ही बनता है। रात 11 बजे संयुक्त आरती होती है, जिसमें हर सदस्य अपने भागीदारी से आरती करता है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने राजभवन में कन्या-पूजन किया

प्रदेश और देश की सुख-समृद्धि के लिए की प्रार्थना

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल महा नवरात्रि पर्व पर राजभवन के कर्मचारियों के साथ परिसर स्थित मंदिर में कन्या-पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने प्रदेश और देश के विकास और निवासियों के सुख-समृद्धि की प्रार्थना की। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने राजभवन परिसर स्थित मंदिर में माँ दुर्गा की विधिवत पूजा-अर्चना की। हवन एवं पूर्णाहूति कार्यक्रम में शामिल हुए। राज्यपाल श्री पटेल ने कन्याओं को तिलक लगाकर अभिनंदन किया और उपहार भेंट किए। कार्यक्रम में राजभवन के अधिकारी-कर्मचारी भी शामिल हुए।

शराब दुकानों के बाहर छलका रहे थे जाम, कार्रवाई

भोपाल की 12 शराब दुकानों के बाहर रात में दबिश; ठेले भी जब्त किए

भोपाल (नप्र)। भोपाल की शराब दुकानों के बाहर जाम छलका रहे लोगों पर गुरुवार देर रात कार्रवाई हुई। आबकारी विभाग और नगर निगम की टीम ने ऐसे लोगों को न सिर्फ पकड़ा, बल्कि ठेले, गुमटियां भी जब्त कीं। इन ठेले और गुमटियों में बैठकर लोग शराब पी रहे थे। रात 12 बजे बाद तक कार्रवाई चलती रही। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई।

सहायक आयुक्त आबकारी दीपम रायचूरा ने बताया, विभाग की 5 टीमों ने निगम अमले के साथ यह कार्रवाई की। एमपी नगर, होशंगाबाद रोड स्थित वीर सावरकर ब्रिज के नीचे, जीटीवी कॉम्पलेक्स, न्यू मार्केट, नेहरू नगर, पंचशील समेत अन्य स्थानों पर शराब की 12 दुकानों के बाहर लोग अवैध मदिरापान यानी, शराब पी रहे थे। उन्हें पकड़कर प्रकरण बनाए गए। वहीं, जिन ठेले और गुमटियों में वे बैठे थे, उन्हें निगम अमले ने जब्त कर लिया। रात 12 बजे तक कुल 24 प्रकरण बनाए गए। इसके बाद भी कार्रवाई जारी रही। शुक्रवार को भी कार्रवाई की जाएगी। होशंगाबाद रोड स्थित वीर सावरकर ब्रिज के नीचे ठेले पर बैठकर शराब पी जा रही थी। यहां भी जब्ती की कार्रवाई की गई।

6 महीने में 1541 प्रकरण बनाए- रायचूरा ने बताया, कंपोजिट शराब दुकानों के आसपास अवैध रूप से शराब पीने वालों के विरुद्ध अप्रैल से अब तक कुल 1541 प्रकरण बनाए जा चुके हैं। यह कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।

हर दुकान के बाहर शराबियों का डेरा- भोपाल में अधिकांश शराब दुकानों के बाहर शराबियों का डेरा रहता है। कोलार के नयापुरा में शराब दुकान के बाहर ही जाम छलकाए जाते हैं। ऐसी ही तस्वीर करोंद, शाहपुरा, अयोध्या बायपास, आनंद नगर, पटेल नगर, हमीदिया रोड समेत अन्य स्थानों पर भी देखने को मिलती है।

ईवेंट मैनेजर ने फांसी लगाई, मौत

भाई की सगाई के एक दिन पहले की खुदकुशी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वैशाली नगर में रहने वाले इवेंट मैनेजर ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। युवक ने कोई सुसाइड नोट भी नहीं छोड़ा है। युवक ने सुसाइड बड़े भाई की सगाई से ठीक एक दिन पहले किया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। शव को शुक्रवार की दोपहर पीएम के बाद परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

समर प्रताप सिंह गौर (40) देवेंद्र प्रताप सिंह गौर निवासी वैशाली नगर बी.कॉम सेकेंड ईयर की पढ़ाई कर रहा था। मृतक के रिश्तेदार विवेक ठाकुर ने बताया कि समर इवेंट मैनेजमेंट का काम बीते दो सालों से कर रहा था। उसके पिता

सिक्योरिटी एजेंसी का संचालन करते हैं। दादा जगदीश सिंह गौर बतौर डीएसपी रिटायर्ड हैं। गुरुवार को समर घर में था।

रात के समय उसने अपने कमरे में फांसी लगा ली, परिजनों ने फंदे से उतारकर उसे अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने चेक कर उसे मृत घोषित कर दिया। एफएसएल और पुलिस की टीम ने स्पॉट का निरीक्षण किया है, जहां पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। मृतक के परिजनों ने भी खुदकुशी के लिए कोई ठोस कारण पुलिस को नहीं बताया है। आत्महत्या से पूर्व युवक ने किसी से भी किसी तरह की परेशानी का जिक्र नहीं किया है।

दो दिन पहले की थी शॉपिंग- समर के बड़े भाई की शुक्रवार को सगाई होना थी। इसके लिए उसने दो दिन पहले शॉपिंग की थी। भाई की सगाई में पहनने के लिए युवक नया कुर्ता पायजामा लाया था। वह बेहद खुश भी था, अचानक उसके सुसाइड के बाद परिजनों की खुशियां गम में तबदील हो चुकी हैं।

सिगरेट छिपाने की कोशिश में चौथी मंजिल से गिरा छात्र

वार्डन के डर से होटल रूम की खिड़की क्रॉस की, डक्ट से फिसलकर मौत

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ओएसिस होटल की चौथी मंजिल से गिरकर छात्र की मौत हो गई। यह होटल चेतक ब्रिज के पास है। घटना गुरुवार रात 11.15 बजे की है। होटल में छात्र के साथ उसके कॉलेज के दूसरे स्टूडेंट्स भी ठहरे हुए थे।

शुक्रवार को गोविंदपुरा थाने की पुलिस ने उनसे पूछताछ की। साथी छात्रों ने बताया कि रूम में एन्जॉय करते हुए वे सिगरेट पी रहे थे। हंसी-मजाक का माहौल था। अचानक किसी ने कहा कि रूम में वार्डन आ रहे हैं। तुषार माली के हाथ में सिगरेट थी। उसे डर था कि मुंह से बदबू आने पर डांट पड़ सकती है।

उसने खिड़की को पार किया, बाहर डक्ट थी, उस पर चढ़कर छिपने की कोशिश कर रहा था। पैर फिसलने से गिर गया। गोविंदपुरा थाने के टीआई अवधेश सिंह तोमर ने बताया कि तुषार माली (19) पुत्र किशन माली राजस्थान के पाली का रहने वाला था। वह गुजरात के एक लॉ कॉलेज से पढ़ाई कर रहा था और फिलहाल कॉलेज हॉस्टल में ही रहता था। कॉलेज की ओर से एक स्पोर्ट्स इवेंट में शामिल होने के लिए भोपाल आया था।

83 लोगों का ग्रुप आया था भोपाल- पुलिस के मुताबिक, तुषार के साथियों के बयानों को दर्ज कर लिया है। उन्होंने बताया कि 83 छात्र - छात्राओं का ग्रुप दो वार्डन (मेल और फीमेल) के साथ तीन दिन पहले भोपाल आया है। होटल के 29 रूम में ये सभी लोग ठहरे हैं। हर रूम में 3 लोग ठहरे हैं।

परिजन की मौजूदगी में हुआ पीएम- शुक्रवार दोपहर पुलिस एक बार फिर होटल पहुंची। वहां कर्मचारियों से छात्र के संबंध में जानकारी ली। जांच में पुलिस ने पाया कि जिस खिड़की से छात्र गिरा, वहां ग्रिल नहीं है। पाली से परिजन शुक्रवार शाम चार बजे भोपाल पहुंचे। यहां आनन-फानन में पुलिस ने शव का पीएम परिजनों की मौजूदगी में कराया। बॉडी रिश्तेदारों के हवाले कर दी गई है। अंतिम संस्कार पाली में ही किया जाएगा। परिजन बॉडी लेकर रवाना हो गए हैं।

10 हजार में नवजात को फेंकने तैयार हो गई थी नर्स

25 हजार लेकर डॉक्टर ने कराई डिलीवरी; भोपाल के नाले में ठिकाने लगाने का था प्लान

भोपाल (नप्र)। भोपाल में जिंदा नवजात बच्ची को फेंकने वाली नर्स, डॉक्टर और नवजात की नानी को जेल भेज दिया गया। पुलिस ने तीनों के बयान दर्ज किए हैं, जिसमें नर्स ने चौंकाने वाले खुलासे किए। उसने बताया कि वह महज 10 हजार रुपए ज्यादा मिलने के लालच में नवजात को ठिकाने लगाने के लिए तैयार हो गई थी। वहीं डॉक्टर 25 हजार रुपए लेकर अवैध डिलीवरी कराने को तैयार हो गया।

डिलीवरी कराते वक्त उसे अंदाजा था कि बच्ची मृत पैदा होगी क्योंकि उसने नाबालिग को कुछ दवा और इंजेक्शन दिए थे, लेकिन बच्ची जिंदा पैदा हुई। उसे ठिकाने लगाने के एवज में उसकी नानी (पीड़िता की मां) ने तय सौदे से अधिक रुपए देने का लालच दिया। 10 हजार रुपए में वह नवजात को ठिकाने लगाने के लिए राजी हो गई।

बच्ची को नाले में फेंकना चाहती थी नर्स- नर्स ने पुलिस को बताया, बच्ची को ठिकाने लगाने के लिए वह जहांगीराबाद इलाके के बरखेड़ी से निकली। पुल पातरा को पार कर किया। यही पातरा नाले में बच्ची को फेंकने का प्लान था। लेकिन, नवरात्र के कारण मेन रोड पर भीड़ ज्यादा थी। ऐसे में यहां बच्ची को फेंकने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। इसके बाद बाग उमराव दूल्हा का अंडरब्रिज पार किया। रात करीब 3 बजे रेलवे ट्रैक से कुछ दूरी पर बने एक घर के सामने बच्ची को बोरी सहित रख दिया। मुस्लिम आबादी वाले इस क्षेत्र में फजर की नमाज पढ़ने उठे लोगों ने सुबह करीब 5:30 बजे बोरी में हलचल देखी, पास जाने पर रोने की आवाज आई। बोरी को खोलकर देखने पर नवजात मिली। तब पुलिस को मामले की सूचना दी गई।

भोपाल के ज्योतिषी बोले-31 को अमावस्या, इसी दिन मनाएं दिवाली

इंदौर सहित 4 जिलों में अलग राय, सरकारी छुट्टी भी 31 अक्टूबर को

भोपाल (नप्र)। इस साल दिवाली मनाने को लेकर मध्यप्रदेश के साथ पूरे देशभर में असमंजस की स्थिति है। कुछ विद्वान-ज्योतिष 31 अक्टूबर को तो कुछ 1 नवंबर को लक्ष्मी पूजन के पक्ष में हैं। हालांकि, मध्यप्रदेश के साथ ही दिल्ली, गुजरात समेत ज्यादातर राज्यों में सरकारी अवकाश 31 अक्टूबर को ही है। बैंकों में भी इसी दिन छुट्टी रहेगी।

अधिकतर ज्योतिषियों के मुताबिक, 31 अक्टूबर को अमावस्या तिथि शाम 4.30 बजे से शुरू होकर अगले दिन यानी 1 नवंबर को दोपहर 3.30 बजे तक रहेगी। इस पर भोपाल के ज्योतिषियों का कहना है कि 31 अक्टूबर को ही दिवाली मनाई जा सकती है। इसके बाद अमावस्या खत्म होने के बाद इसे नहीं मनाया जाना चाहिए। ज्योतिषियों ने इस भ्रम का जिम्मेदार सोशल मीडिया को ठहराया है। उनका कहना है कि वॉट्सऐप और यूट्यूब पर कुछ गलत जानकारियां दी जा रही हैं। इसी से यह स्थिति बनी है।

वहीं, व्यापारी वर्ग में भी दिवाली

मनाने को लेकर अभी संशय की स्थिति है। उनका कहना है कि एकमत होकर जो राय बनेगी, हम उसमें सहमत हैं।

1 नवंबर को नहीं मनाई जा सकती दिवाली- ज्योतिष मठ संस्थान, भोपाल के पंडित विनोद गौतम ने कहा- दिवाली पूजन को लेकर भ्रम की स्थितियां सोशल मीडिया के कारण बनी हैं। देश में सभी प्रतिष्ठित पंचांग, जैसे- लाल रामस्वरूप पंचांग, पंडित अयोध्या प्रसाद गौतम पंचांग, ऋषिकेश पंचांग में पंचांगकारों ने 31 अक्टूबर को दिवाली दर्शाई है। कंप्यूटराइज्ड पंचांग, वॉट्सऐप पर कुछ लोग गलत प्रचार कर रहे हैं।

पंडित गौतम ने कहा- शास्त्रों के अनुसार, जिस रात्रि में अमावस्या तिथि विद्यमान हो...उसी तिथि में दीप प्रज्वलन, दीपोत्सव, दीप पूजन होता है। ऐसे में 31 अक्टूबर को शाम 4 बजकर 30 मिनट पर अमावस्या तिथि प्रारंभ हो जाएगी, जो दूसरे दिन दोपहर 3 बजकर 30 मिनट तक रहेगी। 1 नवंबर को दिवाली पूजन का कोई औचित्य नहीं है। 1 नवंबर की रात्रि में अमावस्या तिथि होगी ही नहीं। न ही प्रदोष काल में रहेगी और न ही रात्रि में रहेगी। ऐसे में 31 अक्टूबर को पूरे भारत देश में दीपोत्सव का मनाया जाएगा।

यूट्यूब, सोशल मीडिया पर फैलाया जा रहा भ्रम- पंडित रामकिशोर वैध ने बताया- दिवाली तिथि पर इस बार जो भ्रम की स्थिति बनी है, वह यूट्यूब की वजह से है। लोगों को भ्रमित किया जा रहा है। पौराणिक ग्रंथों में माना गया है कि जिस तिथि में अमावस्या रात्रि में हो, उसी में दीपोत्सव मनाया जा सकता है। 1 नवंबर को रात्रि में अमावस्या नहीं है, शाम को समाप्त हो जाएगी। जिस रात्रि व्यापिनी अमावस्या हो, उसी दिन दिवाली मनानी चाहिए। धनेश प्रपन्नाचार्य कहते हैं- दिवाली रात्रि कालीन त्योहार माना जाता है। अमावस्या तिथि 31 अक्टूबर दोपहर से 1 नवंबर दोपहर तक है, तो दिवाली 31 को ही मनाई जाएगी।

देश के कई राज्यों में 31 अक्टूबर को लेकर सहमति

31 अक्टूबर को दोपहर 3.55 बजे से अमावस्या लग रही है। यह तिथि एक नवंबर को शाम 6:15 बजे तक रहेगी। अमावस्या पर रात में लक्ष्मी पूजन का विधान माना गया है। ऐसे में 31 अक्टूबर को ही दिवाली मनाना श्रेष्ठ है।

-पं. आनंद शंकर व्यास, ज्योतिषाचार्य, उज्जैन

2023 में 12 नवंबर को चतुर्दशी दोपहर 2.45 बजे तक थी। इसके बाद अमावस्या तिथि शुरू हो गई थी। तब भी 12 नवंबर की रात अमावस्या होने पर ही दिवाली मनाई गई। इस बार 31 अक्टूबर की पूरी रात अमावस्या रहेगी।

- पं. विष्णु राजौरिया, धर्माचार्य, भोपाल

31 अक्टूबर को नहीं, 1 नवंबर को दिवाली मनाना सही

इंदौर में 150 से अधिक पंचांगकारों की सहमति से फैसला, वजह भी बताई। इस बार दिवाली का पर्व 31 अक्टूबर को मनाया जाए या फिर 1 नवंबर को...इसका जवाब ज्योतिष और विद्वत परिषद ने दे दिया है। इंदौर में हुई बैठक में इस बार दिवाली का पर्व 1 नवंबर को मनाना तय किया गया है। इसके लिए सोमवार दोपहर को इंदौर के संस्कृत महाविद्यालय में विद्वानों और आचार्य की बैठक हुई। इसमें यह फैसला लिया गया है।

संपादकीय

मालदीव : भारत की कूटनीतिक जीत

पिछले साल भारत विरोध के एजेंडे पर सत्ता में आए और शुरू में भारतीय हितों के खिलाफ कई कदम उठाने वाले पड़ोसी देश मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मोइज्जू के हालिया भारत दौरे के दौरान उनका 'हृदय परिवर्तन' मालदीव के लिए जितना भी हितकारी हो, यह भारत की कूटनीतिक जीत जरूर है। हालांकि अभी हमें मालदीव के मामले में संभल कर चलना होगा। क्योंकि मोइज्जू का यह बदला रवैया केवल तात्कालिक मजबूरी है या फिर दक्षिण एशिया की भू राजनीतिक वास्तविकताओं को समझ कर उठाया गया कदम है, इस बात की पुष्टि जरूरी है। राष्ट्रपति मोइज्जू की इस साल यह दूसरी भारत यात्रा थी। सप्ताह आए मोइज्जू यहां पांच दिन रहे। भारतीय प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति से भी मिले। सबसे अहम बात यह है कि इस दौरान भारत और मालदीव के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। मालदीव ने माना कि हिंद महासागर क्षेत्र में भारत ही उसका सबसे बड़ा मददगार हो सकता है। खास बात यह है कि राष्ट्रपति मोइज्जू ने मालदीव के लामू गाधू ट्रांसशिपमेंट पोर्ट प्रोजेक्ट चीन से छीनकर उसे भारत को सौंपा है। इस प्रोजेक्ट पर एमओयू हो जाने के बाद भी चीनी कंपनी ने जमीन पर कुछ काम नहीं किया था। अब यह प्रोजेक्ट मालदीव भारत से साथ मिलकर पूरा करेगा। इसके अलावा दोनों देशों के बीच हवायथिपोल्हू ट्रांसशिपमेंट पोर्ट पर भी एक साथ काम करने पर सहमति बनी है। मोइज्जू ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने देश आने का निमंत्रण दिया है। उन्होंने कहा कि अगले साल भारत-मालदीव अपने कूटनीतिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ मनाएंगे। दोनों देशों के बीच सम्बंधों को मजबूत बनाने के लिए मोदी मालदीव जा सकते हैं। भारत यात्रा के दौरान दोनो देशों के बीच सौहार्दपूर्ण माहौल में बातचीत हुई। मोइज्जू ने माना कि संकट की घड़ी में भारत ने ही मालदीव का साथ दिया। सवाल यह है कि शुरू से भारत विरोध, खुद को इस्लामिक देशों का करीबी बताने और चीन से दोस्ती की हुंकार भरने वाले मोइज्जू अचानक इतने कैसे और क्यों बदल गए? इसका जवाब जमीनी हकीकत है। भारत ही एक ऐसा बड़ा देश है, जो मालदीव के सबसे ज्यादा करीब है। दूसरे मालदीव का भारत पर निर्भरता काफी अधिक है। उसकी अर्थव्यवस्था की रीढ़ पर्यटन में सर्वाधिक हिस्सेदारी भारतीयों की है। मोदी द्वारा लक्षद्वीप की यात्रा के दौरान उसके पर्यटन महत्व को रेखांकित करने के बाद जिस तरह मालदीव ने अनावश्यक शत्रुतापूर्ण रुख अपनाया था, उसके बाद भारत ने उसकी नकेल कस दी थी। भारतीयों द्वारा मालदीव का बहिष्कार करने से उनका पर्यटन उद्योग ही बैठ गया। बीते एक साल में इस उद्योग को करीब 5 सौ करोड़ रु. का नुकसान हो चुका है। दूसरे, मालदीव कर्ज में डूबा है। उसे तत्काल आर्थिक मदद की जरूरत है। भारत ने मालदीव के मामले में लाठी और गाजर की नीति अपनाई। यानी पंगा लोगे तो मार पड़ेगी और दोस्ती रखोगे तो मलाई मिलेगी। मालदीव के अतिवादी रवैये के बाद भी भारत ने संयम दिखाया, जिसका नतीजा सामने है। पड़ोसी श्रीलंका के मामले में भी यही हुआ था। उसने भी आंखें दिखानी शुरू की थी। लेकिन बाद में वह भी लाइन पर आ गया। अब यही रवैया बांग्लादेश की नई सरकार का भी है। लेकिन देर सबेर उसे भी वास्तविकता का अहसास होगा। भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे सम्बन्ध रखना चाहता है। हमने हमेशा इस बात को रेखांकित किया है कि भारत की दोस्ती विश्वसनीयता का परिचायक है। हम किसी को धोखा नहीं देते। ऐसे में पड़ोसी देशों के बीच चीन अथवा अन्य किसी बड़ी ताकत का दखल भारत को मंजूर नहीं है। राष्ट्रपति मोइज्जू अगर इस हकीकत को समझ गए हैं तो यह सकारात्मक संकेत है।

डॉ. लोहिया जी का पुनर्पाठ

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

12 अक्टूबर डॉक्टर लोहिया की पुण्यतिथि है और आज के दिन उन संदर्भों की याद भी जरूरी है जो आज और अधिक प्रासंगिक हैं। यह एक ऐसा विचित्र दौर है जिसमें देश और दुनिया में लोहिया एक परिवर्तन की मिसाल के संवाद के केंद्र में हैं, न केवल भारत में बल्कि भारत के बाहर यूरोप और अमेरिका तक में वैश्विक संस्थानों में लोहिया पुनर्जीवित, पुनर्व्याख्ति और पुनर्पाठ के केंद्र हैं परंतु भारत में कुछ ऐसी जमातें उतरी हैं जो अपने-अपने कारणों से लोहिया को भुलाना चाहती हैं।

पिछले कुछ दिनों से पिछड़े वर्ग के नाम पर बने संगठन, जब पिछड़े वर्ग के आरक्षण की चर्चा करते हैं तो उसमें लोहिया नहीं होते। यहां तक कि अमूमन इनके जो पोस्टर, बैनर, साहित्य आदि छपाये जा रहे हैं उनमें पेरियार, अम्बेडकर, कांशीराम, रामस्वरूप वर्मा, कर्पूरी ठाकुर, ललई यादव, ज्योतिबा फुले, साबित्री बाई फुले आदि के चित्र होते हैं, परंतु लोहिया का चित्र नहीं होता। आरंभिक दौर में विशेषतः 2014 में उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद पिछड़े वर्ग के कई संगठनों का उदयकाल बना। बहुत वर्षों बाद इन संगठनों में यादव बुद्धिजीवी मित्रों की सक्रिय भूमिका नजर आयी। यह भूमिका नजर आयी, हो सकता है कि इसका कारण उत्तरप्रदेश में श्री अखिलेश यादव के हारने का भी हो, क्योंकि उप्र में हारने के बाद यादव समाज में एक निराशा की भावना आई थी। उप्र जहां लंबे समय तक स्व. मुलायम सिंह यादव सत्तासीन रहे, फिर उनके पुत्र आखिलेश यादव सत्तासीन हुए अब उस राज्य से यादव जाति का सत्ता से हटना एक त्रासद था और उन्होंने विशेषतरू यादव समाज के पढ़े-लिखे लोगों ने इसकी खोज शुरू की और उन्हें लगा कि यादव जाति पर जातिवाद के आरोप से यादव समाज, अन्य पिछड़े वर्ग की जातियों से दूर हो चुका है। परिणामस्वरूप इनमें से अधिकांश पिछड़ी जातियां अपने अधिकारों के लिये भाजपा की ओर मुड़ गई हैं। क्योंकि भाजपा का प्रत्यक्ष नेतृत्व तो पिछड़ी जाति से ही है। स्व. कर्पूरी ठाकुर के द्वारा लागू किये गये लोहिया के विचारों के अनुकूल आरक्षण के फार्मूले से जो अत्यंत पिछड़ी जातियां लाभान्वित हुई थीं उन्होंने भी बिहार के समान यादव से इतर पिछड़ी जाति के संगठनों में अपना भविष्य देखना शुरू कर दिया। इस तथ्य को समझकर कुछ जेएनयू और दिल्ली विवि के पढ़े लिखे यादव मित्रों ने आरक्षण और पिछड़े वर्ग को मुददा बनाकर, विशेषकर सोशल मीडिया पर जगाना शुरू किया। जाहिर है इससे कुछ अच्छे परिणाम भी आये हैं। पिछड़े वर्ग की जातियों में आरक्षण को लेकर एक वर्गीय चेतना फिर से पैदा हुई और वे भाजपा के खिलाफ संगठित हुए परंतु इन नौजवानों में से कई लोगों को अपनी भाषा लोहिया या कर्पूरी ठाकुर से नहीं ली वरन एनजीओ की भाषा, कुछ दलित संगठनों की भाषा, कुछ मार्क्सवादी भाषा और कुछेक ने अपनी सुविधा के लिये अल्पसंख्यक और मुस्लिम संगठनों की भाषा को चुना। परंतु वे इस प्रक्रिया में अपवाद छोड़कर इतिहास भूल गये, कि वह एकमात्र लोहिया ही थे जिन्होंने महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद और आजादी के बाद पिछड़े वर्ग के लोगों को 60 प्रतिशत स्थान आरक्षित करने की बात शुरू की थी। पिछड़ा पावे सौ में साठ लोहिया का नारा था। जिन्होंने पहली बार कहा था योग्यता से अवसर नहीं बल्कि अवसर से योग्यता पैदा होती है। यहाँ तक उन्होंने कहा कि हमें इतिहास में सामाजिक व्यवस्था के द्वारा अयोग्य बनाए लोगों को हिस्सेदारी देकर सत्ता में बैठाकर योग्य बनाना है।

लोहिया ने पिछड़े वर्ग में, अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ी जातियों, अल्पसंख्यकों को पिछड़ी जाति और सभी महिलाओं को पिछड़ा वर्ग माना था।

1980 के बाद कांग्रेस पार्टी में बाबू जगजीवनराम की भूमिका नेतृत्व हस्तक्षेप, निरंतर कम होने के बाद अनुसूचित जाति के कर्मचारियों में एक असुरक्षा का भाव पैदा हुआ था। उन्होंने अपने हित व रक्षा के लिये पहले बामसेफ और फिर बहुजन समाजपार्टी तथा कांशीराम के माध्यम से राजनीति में अपनी पकड़ और पहचान बनाने का प्रयोग शुरू किया। वहीं दूसरी तरफ 1967 में लोहिया की मौत के बाद पिछड़ी जातियों में एक निराशा का भाव था और वे विशेषतः जो अति पिछड़ी जातियों के लोग थे वे अपना अलग स्थान खोजने लगे। ऐसे दौर में उन्होंने (कांशीराम) ने अनुसूचित जाति के संगठन और उसके वोट उस जाति के बड़े अधिकारियों के पैसे के आधार पर इन अति पिछड़ी जातियों को लुभाया और अपने साथ ले लिया। समाजवादी लोग जो लोहिया के आंदोलन से आये थे वे आपस में लड़ते रहे और इस जमीनी सत्य और समाजवादी आंदोलन के साथ खिसकते जन आधार की उन्होंने कोई चिंता नहीं की। एक तरफजातिवाद, दूसरी तरफ किसी महत्व को न मिल पाने की वजह से 1980 के बाद पिछड़ी जातियां गैर यादव, कुर्मी, कुशवाहा (काछी माली) आदि बसपा के साथ चले गये। यादव के अलावा जो ताकतवर पिछड़ी जातियां थीं जैसे कुर्मी, लोधी आदि वे भाजपा में अपना स्थान बनाने लगी। अल्पसंख्यक जो सदैव केवल भाजपा को हराने के नाम पर वोट करता है, वह अपनी-अपनी प्रादेशिक और क्षेत्रीय गैर भाजपाई दूसरे मजबूत दल या संगठनों के साथ हो गया। तीसरी तरफपश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा जो मार्क्सवाद के गढ़ माने जाते थे वहां से मार्क्सवादियों के उखड़ने के बाद मार्क्सवादियों ने हिंदी बेल्ट पर लोहिया की राजनैतिक भूमि पर और समाजवादियों के पिछड़े वर्ग के आधार पर अपने भविष्य को खोजना शुरू किया है। उनके पास साधन थे, कसा हुआ संगठन था और उच्चजातियों के नेतृत्व वालों की भाषा और बोली की क्षमता थी। उन्होंने कुछ यू टयूब चौनल शुरू किये और उनके माध्यम से आरक्षण और समाज परिवर्तन को लेकर पेरियार, अम्बेडकर, फूले आदि के नाम का इस्तेमाल कर पुनः वैचारिक रूप से मोड़ना शुरू किया। यह दुर्भाग्य है जो लोहिया के आंदोलन के गर्भ से पैदा हुए थे उन्होंने अपने आप को जाति व सत्ता में सिकोड़ लिया और लोहिया को इतिहास के मंच से विस्थापित करने के खेल में लग गये।

यह तीन बड़े कारण हैं जिसकी वजह से पिछड़े वर्ग, दलितों, अल्पसंख्यकों में और इतिहास के पन्नों से लोहिया को पीछे करने या कमतर दिखाने करने के खेल में मार्क्सवादी मित्र लगे हुए हैं। मार्क्सवादी मित्रों को यह भी सुविधा है कि लोहिया जिन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और प्रतीकों से अपने उद्देश्य के तर्क निकालते थे, परंतु मार्क्सवाद के लिये, उनकी तथाकथित धर्मविहीनता के लिये लोहिया असुविधाजनक है। अतरू उनके दृष्टिकोण से, पिछड़े वर्ग के आरक्षण के इतिहास से और लोहिया को अलग कर लिया जाये तो पिछड़ा वर्ग उनके मार्क्सवादी गुण, अभारतीयता की भाषा और शब्दावली को स्वीकार कर लेगा। यही सोच स्वर्गीय काशीराम, मायावती और अन्य दलित नेताओं और संगठनों की है।

एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि अब पिछड़े वर्ग की जातियों में जातिवाद बहुत तेजी से प्रवेश कर गया है और वे अब पिछड़े वर्ग के इतिहास को पिछड़ी जाति के इतिहास में बदलना चाहते हैं। इतिहास को सवर्ण समाज और भाजपा बदलना चाहती है ताकि अतीत के सामाजिक अपराधों की छाप मिट जाये। कांग्रेस पार्टी भी मिटाना चाहती है क्योंकि वह आजादी के बाद पिछड़ा वर्गों और आरक्षण के खिलाफ खड़ी होती रही है। इतिहास को बसपा, दलित संगठन और कांशीराम, मायावती के अनुयायी भी बदलना चाहते हैं क्योंकि उन्हें केवल दलित नेतृत्व और दलित पार्टी चाहिए। पिछड़ा वर्ग उनकी सत्ता के लिये एक हथियार है। इतिहास भाजपा को भी बदलना है क्योंकि सवर्ण हितों के लिये अनुकूल वातावरण बनाना है एवं नेहरू खानदान की सत्ता के लिये इतिहास कांग्रेस को भी बदलना है। इतिहास अपनी नई जमीन के लिये मार्क्सवादी को भी बदलना है।

पिछड़ी जातियों में भी जातिवाद आ गया है। अब वे वर्ग की जगह अपनी जाति पर खुल रहे हैं। जब लोहिया के बारे में, उनके पोस्टर के बारे में, मैंने पिछड़े वर्ग के कुछ मित्रों से पूछा तो उनका उत्तर था कि लोहिया तो सवर्ण जाति के थे। क्या यह कितना जायज है कि जिस व्यक्ति ने अपना संपूर्ण जीवन दलित व पिछड़ा वर्ग के लिये लगा दिया, जो अपनी जाति से लड़ा, और उन्हीं वंचित जातियों के लोग जिन्हें जुबान और ताकत लोहिया ने दी थी वे इस तरह से सोचते हैं। यह घटना सामान्य नहीं है। बल्कि पिछड़े वर्ग के पतन की कहानी की शुरूआत है।

अल्पसंख्यक समाज वैसे ही कटटर हैं या सत्ता आकांक्षी है, जैसे हिंदू समाज में है या अन्य धर्म वालों में है। चूंकि लोहिया की धर्म निरपेक्षता साहसिक, बेबाक और हर धर्म की कटटरता के खिलाफ है। इसलिये लोहिया किसी भी कट्टरपंथी मन को नहीं लुभाते। लोहिया ने भिजवाया यह कौन कह सकता था कि रजिया सुल्तान हिंदुओं की पुरखा हैं। और हर मुसलमान को कहना चाहिए कि बाबर विदेशी हमलावर था। हिन्दू मन बाबर को हमलावर कहने पर खुश होता है, परंतु रजिया को पुरखा नहीं मानना चाहता। मुस्लिम कट्टरपंथ, रजिया को हिंदू पुरखा मानने पर खुश होता पर बाबर के खिलाफ नहीं बोलता। लोहिया के अलावा यह साहस किसमें था जो कबीर के समान हिन्दू मुसलमान कट्टरपंथ दोनों को ललकारता है जो समान नागरिक संहिता के पक्ष में खड़ा होता है। जो यह कहते कि लड़ाई हिंदु मुसलमान की नहीं देशी और विदेशी की है। जो अपनी सप्त क्रांति में इंसान-इंसान के बीच के हर फर्क को बताना चाहता था। जो यह कहने का साहस करता था कि हिंदू की पहचान जनेऊ नहीं है और मुस्लिम की पहचान दाढ़ी नहीं है। और आज अगर मुस्लिम भाई कांग्रेस या वामपंथी दलों में अपना भविष्य खोजते हैं तो यह उनकी छिपी हुई कटटरता है जिसके बचाव के लिये कांग्रेस या वामपंथ के समर्थक दल उनके वोट के लिये, उनके कट्टरपंथ का बचाव करते हैं, और भाजपा के विकास के लिये वे खाद उपलब्ध कराते हैं। आज स्थिति यही बन गई है। आज देश भले ही पूर्णतः दो दलीय न बना हो पर दो धर्मों के दलों में ध्रुवीकृत हो गया है, अलग-अलग राज्यों में उनका नाम अलग हो सकता है किंतु स्थिति यही है। अगर सच्ची धर्मनिरपेक्षता कहीं है तो वह लोहिया और कबीर की भाषा में ही मिल सकती है।

लोहिया ने आजादी के बाद महात्मा गांधी के सबसे क्रांतिकारी शब्द सिविल नाफरमानी को न केवल जिंदा रखा बल्कि उसे देशभर में फैलाने का काम किया। गांधी की मौत के बाद देश में सर्वोदय के नाम से और अन्य बौद्धिक जमात के नाम से यह चर्चा शुरू हुई थी कि अब देश आजाद हो गया है। अतरू सिविल नाफरमानी की जरूरत नहीं है। परंतु लोहिया ने कहा की सिविल नाफरमानी तो लोकतंत्र का पर्याय है। उन्होंने अपने विचार और कर्म से सिविल नाफरमानी को न केवल जिंदा रखा, तार्किक बताया, बल्कि अहिंसक परिवर्तन का माध्यम बनाया। यह लोहिया ही कहते थे कि अगर सड़कें सूनीं हो जायेंगी तो संसद आवारा हो जायेगी। परंतु आज का दौर एक भारी चिंता का दौर है। जहां सत्ता, राजनेता, राजनैतिक दल, मीडिया और प्रशासन तंत्र सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर सिविल नाफरमानी को अप्रासंगिक और अस्वीकार्य बनाते हैं। सत्ता बंधनों के द्वारा, मीडिया की उपेक्षा या उकसाने के द्वारा तंत्र अपने अवाध सत्ता भोग के लिये, कई बार राजनैतिक दल भी अपनी सत्ता के लिये, अपने प्रचार और लाभ के लिये, सिविल नाफरमानी का दुरुपयोग करते हैं। 22 सितंबर को नीलम पार्क के सामने पुलिस ने भारी बेरिकेडिंग की थी। दोनों ओर की सड़कों को बंद कर दिया था। मैंने एक पुलिस अधिकारी से पूछा यह सड़कबंदी क्यों की तो उन्होंने कहा कि हम आदेश मानने के लिये मजबूर हैं। आज के प्रदर्शन में कांग्रेस के कुछ नेता आने वाले हैं और उन्हें अंदेशा है कि वे आयेंगे, बेरिकेट पर चढ़ेंगे, पत्थर मारेंगे और अखबारों में छपेंगे। सिविल नाफरमानी वालों का झगड़ा व्यवस्था से होता है, न कि पुलिस से। सिविल नाफरमानी करने वालों की इस प्रचारलिप्सा और गलत तरीकों ने सत्ता और तंत्र को न केवल निरंकुश होने का तर्क दे दिया है बल्कि उसकी अनिवार्यता सिद्ध कर दी है।

सत्ता और तंत्र के इस षड्यंत्र में मीडिया भी सहभागी है। जिसके लिये अहिंसक और सिविल नाफरमानी कोई खबर नहीं बल्कि तोड़फोड़, आगजनी, हिंसा और कभी-कभी केवल संख्या बल खबर है। आज लोहिया के अलावा यह कौन कह सकता था कि जनता और पुलिस का मिलन सम्मेलन होना चाहिए, ताकि एक-दूसरे के प्रति गलतफहमियाँ और दूरियाँ कम हों। व्यक्ति का कर्तव्य सिविल नाफरमानी है और पुलिस का कर्तव्य है व्यवस्था और तंत्र तक उनकी बात पहुंचाना। मीडिया मुद्दों को प्राथमिकता दे न कि संख्या और व्यवस्था की खबर दे। आज लोहिया को इन आधारों पर देखना चाहिए और लोहिया का पुनर्पाठ होना चाहिए।

शक्ति-पूजा का पर्व है दशहरा

पर्व विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

भारतीय संस्कृति वीरता की पूजक व शौर्य की उपासक है। व्यक्ति और समाज के रक्त में वीरता प्रकट हो इसलिए दशहरे का उत्सव रखा गया है। भारत कृषि प्रधान देश है। जब किसान अपने खेत में फसल उगाकर अनाज घर लाता है तो उसके उल्लास और उमंग का पारावार नहीं रहता। इस प्रसन्नता के लिये वह भगवान की कृपा को मानता है और उसे प्रकट करने के लिए उनका पूजन करता है। भारतवर्ष में यह पर्व विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है।

दशहरा शब्द हिंदी के दो शब्दों दस और हारा से मिलकर बना है। जहां दस गणित के अंक दस (10) और हारा शब्द पराजित का सूचक है। इसलिए यदि इन दो शब्दों को जोड़ दिया जाए तो दशहरा बनता है। जो उस दिन का प्रतीक है जब दस सिर वाले दुष्ट रावण का भगवान राम ने वध किया था। दशहरा अथवा विजयदशमी पर्व को भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में। दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा का पर्व है। शस्त्र पूजन की तिथि है। हर्ष और उल्लास तथा विजय का पर्व है।

दशहरा भारत के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। इसी दिन भगवान राम ने बुराई के प्रतीक दस सिर वाले रावण का संहार किया था तो देवताओं को हराकर स्वर्ग पर अधिकार करने वाले महिषासुर का 10 दिन तक चले भयंकर युद्ध के बाद मां दुर्गा ने वध किया था। इसीलिये इसको विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को इसका आयोजन होता है। इसे असत्य पर सत्य की विजय के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन लोग नया कार्य प्रारम्भ करते हैं। इस दिन शस्त्र-पूजा की जाती है। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं। रामलीला का समापन होता है। रावण का विशाल पुतला बनाकर उसे जलाया जाता है।

कर्नाटक में मैसूर का दशहरा भी पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर में दशहरे के समय पूरे शहर की गलियों को रोशनी से सज्जित किया जाता है और हाथियों का श्रृंगार कर पूरे शहर में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस समय प्रसिद्ध मैसूर महल को दीपमालिकाओं से दुल्हन की तरह सजाया जाता है। इसके साथ शहर में लोग टार्च लाइट के संग नृत्य और संगीत की शोभायात्रा का आनंद लेते हैं। पंजाब में दशहरा नवरात्रि के नौ दिन का उपवास रखकर मनाते हैं। इस दौरान यहां आगंतुकों का स्वागत पारम्परिक मिठाई और उपहारों से किया जाता है। यहां भी रावण-दहन के आयोजन होते हैं व मैदानों में मेले लगते हैं।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू का दशहरा बहुत प्रसिद्ध है। अन्य स्थानों की ही भांति यहां भी दस दिन अथवा एक सप्ताह पूर्व इस पर्व की तैयारी आरंभ हो जाती है। स्त्रियां और पुरुष सभी सुंदर वस्त्रों से सज्जित होकर ढोल, नगाड़े, बांसुरी आदि वाद्य यंत्रो को लेकर बाहर निकलते हैं। पहाड़ी लोग अपने ग्रामीण देवता का धूम धाम से जुलूस निकाल कर पूजन करते हैं। देवताओं की मूर्तियों को बहुत ही आकर्षक पालकी में सुंदर ढंग से सजाया जाता है। साथ ही वे अपने मुख्य देवता रघुनाथ जी की भी पूजा करते हैं। इस जुलूस में प्रशिक्षित नर्तक नटी नृत्य करते हैं। इस प्रकार जुलूस बनाकर नगर के मुख्य भागों से होते हुए नगर परिक्रमा करते हैं और कुल्लू नगर में देवता रघुनाथजी की वंदना से दशहरे के उत्सव का आरंभ करते हैं। दशमी के दिन इस उत्सव की शोभा निराली होती है।

महाराष्ट्र में नवरात्रि के नौ दिन मां दुर्गा को समर्पित रहते हैं जबकि दसवें दिन ज्ञान की देवी सरस्वती की वंदना की जाती है। इस दिन विद्यालय जाने वाले बच्चे अपनी पढ़ाई में आशीर्वाद पाने के लिए मां सरस्वती के तांत्रिक चिह्नों की पूजा करते हैं। किसी भी चीज को प्रारंभ करने के लिए खासकर विद्या आरंभ करने के लिए यह दिन काफी शुभ माना जाता है। महाराष्ट्र के लोग इस दिन विवाह, गृह-प्रवेश एवं नये घर खरीदने का शुभ मुहूर्त समझते हैं। महाराष्ट्र में इस अवसर पर सिलंगण के नाम से सामाजिक महोत्सव के रूप में भी इसको मनाया जाता है।

बस्तर में दशहरे के मुख्य कारण को राम की रावण पर विजय ना मानकर लोग इसे मां दंतेश्वरी की आराधना को समर्पित एक पर्व मानते हैं। दंतेश्वरी माता बस्तर अंचल के निवासियों की आराध्य देवी हैं जो दुर्गा का ही रूप हैं। यहां यह पर्व पूरे 75 दिन चलता है। यहाँ दशहरा श्रावण मास की अमावस से आश्विन मास की शुक्ल त्रयोदशी तक चलता है। बस्तर में यह समारोह लगभग 15वीं शताब्दी से शुरु हुआ था। इसका समापन अश्विन शुक्ल त्रयोदशी को ओहाड़ी पर्व से होता है।

गुजरात में मिट्टी सुशोभित रंगीन घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है और इसको कुंवारी लड़कियां सिर पर रखकर एक लोकप्रिय नृत्य करती हैं जिसे गरबा कहा जाता है। गरबा नृत्य इस पर्व की शान है। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे रंगीन डंडों को संगीत की लय पर आपस में बजाते हुए घूम घूम कर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर भक्ति, फिल्म तथा पारम्परिक लोक-संगीत सभी का समायोजन होता है। पूजा और आरती के बाद डांडिया रास का आयोजन पूरी रात होता रहता है। नवरात्रि में सोने और गहनों की खरीद को शुभ माना जाता है।

बंगाल, ओडिशा और असम में यह पर्व दुर्गा पूजा के रूप में ही मनाया जाता है। यह बंगालियों, ओडिया, और आसमिया लोगों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। बंगाल में दशहरा पूरे पांच दिनों के लिए मनाया जाता है। ओडिशा और असम मे चार दिन तक त्योहार चलता है। यहां देवी दुर्गा को भव्य सुशोभित पंडालों में विराजमान करते हैं। देश के नामी कलाकारों को बुलवा कर दुर्गा की मूर्ति तैयार करवाई जाती हैं। इसके साथ अन्य देवी द्वेवताओं की भी कई मूर्तियां बनाई जाती हैं।

यहां दशमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। प्रसाद चढ़ाया जाता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। पुरुष आपस में आलिंगन करते हैं जिसे कोलाकुली कहते हैं। स्त्रियां देवी के माथे पर सिंदूर चढ़ाती हैं व देवी को अश्रुपूरित विदाई देती हैं। इसके साथ ही वे आपस में भी सिंदूर लगाती हैं व सिंदूर से खेलती हैं। इस दिन यहां नीलकंठ पक्षी को देखना बहुत ही शुभ माना जाता है। अंत में देवी प्रतिमाओं को विसर्जन के लिए ले जाया जाता है। मूर्ति विसर्जन यात्रा बड़ी दर्शनीय होती है।

कश्मीर के अल्पसंख्यक हिन्दू नवरात्रि के पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। परिवार के सारे वयस्क सदस्य नौ दिनों तक उपवास करते हैं। अत्यंत पुरानी परम्परा के अनुसार नौ दिनों तक लोग माता खीर भवानी के दर्शन करने के लिए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि आश्विन शुक्ल दशमी को तारा उदय होने के समय विजय नामक मुहूर्त होता है। यह काल सर्वकार्य सिद्धिदायक होता है। इसलिए भी इसे विजयादशमी कहते हैं।

तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें तीन देवियां लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करते हैं। पहले तीन दिन धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी का पूजन होता है। अगले तीन दिन कला और विद्या की देवी सरस्वती की अर्चना की जाती है और अंतिम दिन देवी शक्ति की देवी दुर्गा की स्तुति की जाती है। पूजन स्थल को अच्छी तरह फूलों और दीपकों से सजाया जाता है। लोग एक दूसरे को मिठाइयां व कपड़े देते हैं। यहां दशहरा बच्चों के लिए शिक्षा या कला संबंधी नया कार्य सीखने के लिए शुभ समय होता है।

रोमांच को साधने में चूकी मन्वत मर्डर्स

वेबसीरिज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं ।

सत्तर के दशक की शुरुआत में महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के मन्वत में हुई जघन्य हत्याओं की घटनाएं कई बार फिर से फिल्म और वेबसिरीज़ की पटकथा का आधार बनी है । ऐसी वास्तविक घटनाओं के फिल्मीकरण में सबसे बड़ी समस्या यही आती है कि वास्तविक घटना के रोमांच के पुनर्प्रस्तुतिकरण मे रोमांच को वैसा ही बनाये रखने में अमूमन निर्माता निर्देशक विफल रहते हैं। अविनाश बेंडे की आठ भागों वाली सिरीज 'मन्वत मर्डर्स' इस मामले में वास्तविक घटना को साधने में चूक गई । आशीष अविनाश बेंडे की इस वेबसिरीज़ का सबसे खास पहलू यह है कि यह बिना किसी नाटकीयता के, वीभत्स परिवेश के बीच भी रोजमर्रा की जिन्दगी को बखूबी पेश करती है और हमारे बीच रहने वाली बुराई को उसकी पूरी सापेक्षता और क्रूरता के साथ उजागर करती है।

डीएसपी रमाकांत कुलकर्णी की किताब फुटप्रिंटस ऑन द सैंड क्राइम पर यह सिरीज आधारित है। शुरुआत भी उन्ही के किरदार डीएसपी रमाकांत कुलकर्णी (आशुतोष गोवारिकर) से ही होती है. वह पुलिस प्रशिक्षण में कैडेट को क्राइम केसेज के सुलझाने के बारे में अपने अनुभवों को साझा करते रहते हैं। उसी बीच उनका तबादला मन्वत केस पर कर दिया जाता है,क्योंकि एक के बाद महिलाओं और बच्चियों की हत्या से पूरा सिस्टम परेशान है। कुलकर्णी के लिए भी इस अपराध को सुलझाना आसान नहीं है । उसकी तहकीकात उन्हे गाँव की सबसे रसूखदार रुक्मिणी (सोनाली कुलकर्णी) और उसके पति उत्तमराव (मकरंद अनासपुरे) तक पहुंचाती है. उनकी गिरफ्तारी हो जाती है, लेकिन हत्याएं फिर भी रुकने का नाम नहीं ले रही है । आखिरकार असली अपराधी कौन है ? उसका मकसद क्या है? डीएसपी कुलकर्णी अपराधियों को सजा दिलाने के जो प्रयत्न करता है ,उसी के आसपास घूमती है यह कहानी ।

वैसे यह सिरीज पूरी तरह से असल घटना पर भी आधारित नहीं है.उत्तमराव,रुक्मिणी और उसकी बहन को सुप्रीम कोर्ट ने सबूतों के अभाव में बरी कर दिया था। सिर्फ उन चार लोगों को फाँसी हुई थी, जिन्होंने हत्या की थी । उनसे यह हत्या किसने करवाई थी ,इसके पक्के सबूत जाँच अधिकारी भी नहीं दे पाए थे। सिरीज की खूबियों और खामियों की बात करें तो इसकी मूल कहानी में एक अच्छे मिस्ट्री थ्रिलर बनने की सभी जरूरी चीजें मौजूद थी। मर्डर,मिस्ट्री, पुलिस की जाँच और ढेर सारे सस्पेक्ट्स लेकिन कहानी में सबकुछ होते हुए वह परदे पर मनोरंजक ढंग से काफी कुछ सामने नहीं आ पाया । सीरीज के शुरूआती एपिसोड खासकर पहले और दूसरे में कुलकर्णी के किरदार को गढ़ने में कुछ ज्यादा ही समय ले लिया गया । भारत का शेरलॉक होम्स जैसी कई बातें जोड़ी गयी हैं । मौजूदा दौर में कॉप का रियल प्रेजेंटेशन कुछ इस कदर परदे पर लगातार पेश हो रहा है कि डीएसपी कुलकर्णी का किरदार फिल्मी सा ज्यादा फील होता है। इसके साथ ही शुरूआती एपिसोड्स में सिरीज पुलिस के काम करने के तौर तरीके पर भी ज्यादा फोकस करती है। लगभग चार एपीसोड बीत जाने के बाद मूल कहानी पर सिरीज आती है । मानवीय व्यवहार और मनोविज्ञान की अलग- अलग परतों के जरिये इस कहानी और इससे जुड़े कथ्य को दर्शाने की उम्मीद थी,लेकिन यहां पर सबकुछ ब्लैक एंड वाइट जैसा ही है। यह पहलू सिरीज का एक कमज़ोर पक्ष है।

मन्वत मर्डर्स एक क्राइम थ्रिलर सिरीज है, लेकिन इस सिरीज से थ्रिल का अहम् पहलू गायब है। शुरुआती एपीसोड्स में ही आपको पता चल जाता है कि अपराधी कौन है ? यह बात समझ आ जाती है और होता भी वही है । फिल्म का ट्रीटमेंट बेहद स्लो है। सिरीज का बैकग्राउण्ड म्यूजिक फिल्म के विषय के साथ न्याय नहीं करता है । सिनेमेटोग्राफी कहानी के अनुरूप है । सत्तर के दशक के महाराष्ट्र के एक गाँव को हर फ्रेम में रखने की पूरी कोशिश की गयी है। अभिनय की बात करें तो सोनाली कुलकर्णी ने रुक्मणि के किरदार में दमदार अभिनय किया है । सई ताम्हणकर ने भी सिरीज में मजबूती के साथ अपनी उपस्थिति दर्शाई है। आशुतोष गोवारिकर भी अपनी भूमिका के साथ न्याय करते हैं, उनके चरित्रचित्रण में विविधता की कमी थी ,बाकी के कलाकारों ने अपने अभिनय से अपनी भूमिका और कहानी को रोचक बनाया है ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दशानन-दहन

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हर साल की तरह झोपड़ी पट्टी में रहने वाला मंगल मेहतो ने अपने बेटे दावानल की जिद पर उसे सायकल पर बिठाया और दशहरे की शाम, दशहरा मैदान में दशानन दहन देखने के लिए चल दिया। वहाँ जाकर उसने देखा कि ग़ज़ब का हुजूम जमा है। पैर रखने तक की जगह नहीं है। अतः वह थोड़ी दूर जाकर एक टीलेनुमा जगह पर खड़ा हो गया और दशानन दहन का इंतज़ार करने लगा।

तभी उसने देखा कि धूल उड़ाते हुए कारों का क़ाफ़िला आकर रूका। चमचमाती हुई कार से बगुले-से सफ़ेद झक्क कपड़े पहने हुए नेता जी कार से उतरे। उनकी जयकारों से एकबारगी समूचा वातावरण गूँज उठा। सूरज अस्ताचल को हो चला था। पश्चिम दिशा लालिमा से रंग चुकी थी। तभी राम और लक्ष्मण वनवासी की वेशभूषा में अपने हाथों में धनुष-बाण लिए प्रकट हुए और नेताजी का इशारा पाते ही पचास-साठ फ़ीट की दूरी पर खड़े भीमकाय दशानन, कुंभकर्ण और मेघनाथ के पुतलों पर बाणों की बौछार कर दी। बाँस और रंग-बिरंगे कागजी काग़ज़ों से बने हुए तीनों पुतले धू-धूकर जलने लगे। पटाखों की आवाज़ ने कानों को बहरा कर दिया। एक बार फिर हज़ारों की तादात में इकट्ठा तमाशबीनों की तालियों से आसमान गूँज उठा और देखते ही देखते हुजूम उलटे पैरों अपने घरों की दिशा में लौटने लगा। वापसी पर रास्ते में दावानल ने अपने बापू मंगल मेहतो से बड़े ही सहज जिज्ञासा भाव से पूछा- 'बापू! यह पुतले किसके हैं और इन्हें हर साल इस तरह क्योंकर जलाया जाता हैह्य?'

मंगल मेहतो ने अपने बेटे की जिज्ञासा का शमन करते हुए कहा- 'बेटा! वो ऐसा है कि त्रेतायुग में राजा दसरथ हुए थे। उनकी तीन रानियाँ थीं। उनके बड़े बेटे का नाम राम था। उनकी सौतेली माँ कैकयी ने अपने बेटे भरत को गद्दी पर बिठाने के लिए साज़िश रची और राम को चौदह साल के लिए जंगल भिजवा दिया। उस समय देश के दक्षिणी इलाकों के जंगलों पर राक्षसों के राजा लंकापति दशानन का क़ब्ज़ा था। उसने जंगलों की देखरेख और शासन का ज़िम्मा अपने अनन्य सेवकों खर-दूषण और अपनी छोटी बहन शूर्पणखाँ को सौंप रखा था। एक दिन जंगल भ्रमण करते हुए शूर्पणखाँ की नज़र अयोध्या के राजकुमार, अप्रतिम सौंदर्य के धनी राम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण पर पड़ गई। उसने आगा-पीछा सोचे बगैर उनके सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया। जिसे एक के बाद एक दोनों भाइयों ने ठुकरा दिया। उसने इंकार को अपना अपमान समझा और ग़ुस्से में पागल होकर अपने भाई दशानन से राम-लक्ष्मण की झूठमूठ की शिकायत कर दी। शूर्पनखाँ की बातों के बहकावे में आकर दशानन ने राम की अनिंध्य सुंदर पत्नी सीता का अपहरण कर लिया। राम को मजबूरन अपनी पत्नी की वापसी के लिए दशानन से युद्ध करना पड़ा। राम के परम योद्धा हनुमान ने सूती की खोज में दशानन की नगरी को जला दिया और राम ने अपने तीक्ष्ण तीरों से उसका काम तमाम कर डाला।' इस कथा से हमको यह सबक मिलता है कि अगर कोई दुष्ट हमारे परिवार या समाज में किसी माँ, बहन, बेटी, बीवी पर बुरी नज़र डालता है, कुकर्म करने की कोशिश करता है, तो उसके साथ दशानन जैसा व्यवहार करना चाहिए।

दूसरे दिन शाम को मंगल मेहतो जब काम से घर लौटा, तो वह क्या देखता है कि उसकी बस्ती में रहने वाले दुर्जन की झोपड़ी धू-धूकर जल रही है। उसने अपने बेटे से पूछा- 'दुर्जन की झोपड़ी में यह आग कैसे और किसने लगाई है।' जवाब में बड़े गर्व और हर्षपूर्वक दावानल बोला- 'बापू! वो ऐसा है कि तुमने कहा था कि बुराई को आग के हवाले कर देना चाहिए। सो मैंने बग़ल में रहने वाले दुर्जन काका को बुरा काम करते हुए देखा। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने ग़ुस्से में आकर दुर्जन काका पर पेट्रोल डाला और उसकी फूस की झोपड़ी में आग लगा दी।'

शताब्दी वर्ष

लोकेन्द्र सिंह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर पुस्तकों 'संघ दर्शन': अपने मन की अनुभूति एवं राष्ट्रध्वज और आरएसएस के लेखक

संघ कितना राजनीतिक?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस दशहरे (12 अक्टूबर, 2024) पर अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहा है। महान स्वतंत्रता सेनानी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने वर्ष 1925 में जो बीज बोया था, आज वह वटवृक्ष बन गया है। उसकी अनेक शाखाएं समाज में सब दूर फैली हुई हैं। संघ लगातार दसों दिशाओं में बढ़ रहा है। 100 वर्ष की अपनी यात्रा में संघ ने समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में राष्ट्रीय भाव का जागरण किया है, जिसमें राजनीतिक क्षेत्र भी शामिल है। हालांकि, आरएसएस विशुद्ध सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन है। इसके बाद भी संघ के संबंध में कहा जाता है कि भारतीय राजनीति में उसका गहरा प्रभाव है। जब 'संघ और राजनीति' की बात निकलती है तो बहुत दूर तक नहीं जाती। दरअसल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को निकटता से नहीं जानने वाले लोग इस विषय पर भ्रम फैलाने का काम करते हैं। राजनीति का जिक्र होने पर संघ के साथ भारतीय जनता पार्टी को नत्थी कर दिया जाता है। भाजपा, संघ परिवार का हिस्सा है, इस बात से किसी को इनकार नहीं है। लेकिन, भाजपा के कंधे पर सवार होकर संघ राजनीति करता है, यह धारणा बिलकुल गलत है। देश के उत्थान के लिए संघ का अपना एजेंडा है, सिद्धांत हैं, जब राजनीति उससे भटकती है तब संघ समाज से प्राप्त अपने प्रभाव का उपयोग करता है। सरकार चाहे किसी की भी हो। यानी संघ समाज शक्ति के आधार पर राजसत्ता को संयमित करने का प्रयास करता है। अचम्भित करने वाली बात यह है कि कई विद्वान संघ के विराट स्वरूप की अनदेखी करते हुए मात्र यह साबित करने का प्रयास करते हैं कि भाजपा ही संघ है और संघ ही भाजपा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 1925 से 1948 तक राजनीतिक क्षेत्र में काम करने के विषय में सोचा भी नहीं था। राजनीति, संघ की प्राथमिकता में आज भी नहीं है। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार से जब किसी ने पूछा कि संघ क्या करेगा? तब डॉक्टर साहब ने उत्तर दिया- 'संघ व्यक्ति निर्माण करेगा'। अर्थात् संघ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने के लिए ऐसे नागरिकों का निर्माण करेगा, जो अनुशासित, संस्कारित और देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत हों। महात्मा गांधी की हत्या के बाद जब संघ को कुचलने के लिए राजनीति का निर्लज्ज उपयोग किया गया, तब पहली बार यह विचार ध्यान में आया कि संसद में संघ का पक्ष रखने वाला कोई राजनीतिक दल भी होना चाहिए। क्योंकि स्वयंसेवकों को बार-बार यह बात कचोट रही थी कि गांधीजी की हत्या के झूठे आरोप लगाकर विरोधियों ने सत्ता की ताकत से जिस प्रकार संघ को कुचलने का प्रयास किया है, भविष्य में इस तरह फिर से संघ को परेशान किया जा सकता है। राजनीतिक प्रताड़ना के बाद ही इस बहस ने जन्म लिया कि संघ को राजनीति में हस्तक्षेप करना चाहिए। विचार-मन्थन शुरू हुआ कि

आरएसएस स्वयं को राजनीतिक दल में बदल ले यानी राजनीतिक दल बन जाए या राजनीति से पूरी तरह दूर रहे या किसी राजनीतिक दल को सहयोग करे या फिर नया राजनीतिक दल बनाए। स्वयं को राजनीतिक दल में परिवर्तित करने पर संघ का विराट लक्ष्य कहीं छूट जाता। उस समय कोई ऐसा राजनीतिक दल नहीं था, जो संघ की विचारधारा के अनुकूल हो। इसलिए किसी दल को सहयोग करने का विचार भी संघ को त्यागना पड़ा। इसी बीच, कांग्रेस की गलत नीतियों से मर्माहत होकर 8 अप्रैल, 1950 को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल से इस्तीफा देने वाले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी संघ के सरसंघचालक श्रीगुरुजी के पास सलाह-मशविरा करने के लिए आए थे। वे नया राजनीतिक दल बनाने के लिए प्रयास कर रहे थे। श्रीगुरुजी से संघ के कुछ कार्यकर्ता लेकर डॉ. मुखर्जी ने अक्टूबर, 1951 में जनसंघ की स्थापना की। वर्ष 1952 के आम चुनाव में जनसंघ ने एक नये राजनीतिक दल के रूप में भाग लिया।

जनसंघ को मजबूत करने में संघ के प्रचारक नानाजी देशमुख, बलराज मधोक, भाई महावीर, सुंदरसिंह भण्डारी, जगन्नाथराव जोशी, लालकृष्ण आडवाणी, कुशाभाऊ ठाकरे, रामभाऊ गोडबोले, गोपालराव ठाकुर और अटल बिहारी वाजपेयी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चूंकि संघ के कार्यकर्ता ही जनसंघ का संचालन कर रहे थे इसलिए संघ ने जनसंघ को स्वतंत्र छोड़कर दूसरे आयामों पर अधिक ध्यान देना जारी रखा। साल में एक बार दीनदयाल उपाध्याय और श्रीगुरुजी बैठते थे। दीनदयालजी, गुरुजी को जनसंघ के संबंध में जानकारी देते थे। श्रीगुरुजी कुछ आवश्यक सुझाव भी पंडितजी को देते थे। जनसंघ से भाजपा तक आपसी संवाद की यह परम्परा आज तक कायम है। अब इसे कुछ लोग 'संघ की क्लास में भाजपा' कहें, तो यह उनकी अज्ञानता ही है। इस संदर्भ में श्रीगुरुजी के कथन को भी देखना चाहिए। उन्होंने 25 जून, 1956 को 'ऑर्गनाइजर' में लिखा था- 'संघ कभी भी किसी राजनीतिक दल का स्वयंसेवी संगठन नहीं बनेगा। जनसंघ और संघ के बीच निकट का संबंध है। दोनों कोई बड़ा निर्णय परामर्श के बिना नहीं करते। लेकिन, इस बात का ध्यान रखते हैं कि दोनों की स्वायत्तता बनी रहे'।

वर्ष 1975 लोकतंत्र के लिए काला अध्याय लेकर आया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश पर आपातकाल लाद दिया। संघ ने इसका पुरजोर तरीके से विरोध किया। संघ के कार्यकर्ताओं पर आपातकाल में बड़ी क्रूरता से अत्याचार किए गए। इसके बाद भी संघ लोकतंत्र की रक्षा के लिए आपातकाल का विरोध करता रहा। वर्ष 1977 में जनता पार्टी का गठन किया गया। जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया। लेकिन, कम्युनिस्टों ने ऐसी परिस्थितियां खड़ी कर दी की जनसंघ के नेताओं को जनता पार्टी से बाहर आना पड़ा। सन् 1980 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। आज भाजपा देश की सबसे बड़ी पार्टी के नाते देश चला रही है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र की संप्रभुता के विषयों पर लगातार चिंतन करता रहता है। संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा और अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल अनेक अवसर पर भारतीय राजनीति को संदेश देने के प्रस्ताव पारित कर चुके हैं। राष्ट्रीय भाषा-नीति-1958, गोवा आदि का संलग्र प्रांतों में विलय-1964, साम्प्रदायिक दंगे और राष्ट्रीय एकता परिषद-1968, राष्ट्र एक अखण्ड इकाई-1978, विदेशी घुसपैठिये-1984, पूर्वी उत्तरांचल 'इनर लाइन आवश्यक-1987, अलगाववादी षड्यंत्र-1988, आतंकवाद और सरकार की ढुलमुल नीति-1990, सांप्रदायिक आधार पर आरक्षण न हो-2005 जैसे अनेक प्रस्ताव हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय दिशा से भटकती राजनीति को सचेत किया है। संघ के प्रयत्नों के कारण ही देश में आज समान नागरिक संहिता पर बहस जारी है। वहीं, जम्मू-कश्मीर से स्थायी दिखनेवाली 'अस्थाई' अनुच्छेद-370 एवं 35ए समाप्त किए जा सके हैं। भारत और हिन्दू अस्मिता का प्रतीक रामजन्मभूमि का मुद्दा भी संघ की ताकत के कारण ही राजनीतिक बहसों में शामिल हो सका है, जिसका परिणाम आज अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर के रूप में हमें दिखायी दे रहा है। चुनाव प्रक्रिया में धन के प्रभाव को रोकने और अपराधियों के चुनाव लड़ने को प्रतिबंधित कराने के लिए संघ ने सामाजिक अभियान चलाया है। इस संबंध में प्रतिनिधि सभा के वर्ष 1996 के प्रस्ताव को देखना चाहिए, जो राजनीति और भ्रष्टाचार पर केन्द्रित था। वर्तमान में गोहत्या पर बहस छिड़ी हुई है। गौ-संरक्षण के लिए संघ ने अथक प्रयास किए हैं। संघ के आंदोलनों से बने जन दबाव के कारण कांग्रेस सरकारों को भी राज्यों में गोहत्या प्रतिबंध के संबंध में कानून लागू करने पड़े। असम और पश्चिम बंगाल में 1950 में, तत्कालीन बंबई प्रांत में 1954 में, उत्तर प्रदेश, पंजाब और बिहार में 1955 में गौहत्या प्रतिबंध संबंधी कानून बनाये गये, उस वक्त वहां कांग्रेस की सरकारें थीं। इसी तरह कांग्रेस के समय में ही तमिलनाडु में 1958 में, मध्यप्रदेश में 1959 में, ओडीसा में 1960 में तो कर्नाटक में 1964 में संबंधित कानूनों को लागू किया गया।

जब कभी भारतीय राजनीति असंतुलित हुई है, संघ ने हस्तक्षेप किया है। अर्थात् सरकारों ने वोटबैंक की राजनीति के फेर में जब-जब राष्ट्रीय एकता के मूल प्रश्न की अनदेखी की है तब-तब संघ ने राजनीति में हस्तक्षेप किया है। भाजपा भले ही संघ परिवार का हिस्सा है, लेकिन संघ ने स्वयं को दलगत राजनीति से हमेशा दूर ही रखा है। देश की सामयिक परिस्थितियों और राजनीति के प्रति संघ सजग रहता है। राजनीति समाज के प्रत्येक अंग को प्रभावित करती है। संघ इसी समाज का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन है। इसलिए संघ और राजनीति का संबंध स्वाभाविक भी है। 'संघ और राजनीति' पुस्तक के लेखक एवं राज्यसभा सांसद प्रो. राकेश सिन्हा कहते हैं- 'सांस्कृतिक संगठन का तात्पर्य झाल-मंजीरा बजाने वाला संगठन न होकर राष्ट्रवाद को जीवंत रखने वाला आंदोलन है। इसीलिए आवश्यकतानुसार संघ राजनीति में हस्तक्षेप करता है, जो आवश्यक और अपेक्षित दोनों है'।

हम समझ सकते हैं कि संघ राजनीति का उपयोग इतना भर ही करता है कि उसके मार्ग में बेवजह अड़चन खड़ी न की जाएं। मिथ्या आरोप संघ पर न लगाए जाएं। संघ के पास राजनीतिक शक्ति नहीं है, यह सोचकर कोई उसके वैचारिक आग्रह की अनदेखी न कर सके। एक बात स्पष्ट तौर पर समझ लेनी चाहिए कि संघ सीधे चुनाव में भाग नहीं लेता है और भविष्य में भी नहीं लेगा। संघ का राजनीति में प्रभाव अपनी उस ताकत से है, जो अपने 100 वर्ष के कार्यकाल में जनता के भरोसे से हासिल हुई है। देश के खिलाफ कोई ताकत खड़ी होने का प्रयास करती है तब सम्पूर्ण समाज संघ की ओर उम्मीद से देखता है। संकट के समय में भी संघ से ही मदद की अपेक्षा समाज करता है।

पुस्तक समीक्षा रूपवती गुलाबो

सामाजिक विषमता को रेखांकित करती 'रुपवती गुलाबो'

कुंदा जोगळेकर

हिन्दी साहित्य में कहानी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य यदि समाज का दर्पण है, तो कहानी समाज की आवश्यकता के रुप में साहित्य में समाहित है। कथा साहित्य का इतिहास कितना भी पुराना हो, वो अपने- अपने समय का साक्षी है। कई कथाकारों ने कहानी के स्वरुप में जो कुछ लिखा, वह समय के बदलाव के बावजूद हमेशा प्रासंगिक रहा है, और आज भी है। ऐसा ही एक नाम मध्यप्रदेश के साहित्य क्षेत्र में, एक नाम हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले वरिष्ठ साहित्यकार, सम्माननीय विश्वनाथ शिरढोणकर का भी है। मूलतः ग्वालियर के शिरढोणकर जी, काफी समय से इंदौर निवासरत रहकर साहित्य की अनवरत सेवा कर रहे हैं। अब तक लगभग 80 कहानियां, 150 से अधिक कविताएं और अनेक ललित लेख प्रकाशित, प्रसारित हो चुके हैं। मराठी साहित्य में भी, श्री शिरढोणकर जी का साहित्यिक योगदान उल्लेखनीय है। वे अनेकानेक सम्मानों से विभूषित हैं।

उनके हिन्दी कथासंग्रह 'रुपवती गुलाबो' पढ़कर समझा जा सकता है, कि उनके लेखन का कैनवस काफी विस्तृत है। इस कथा संग्रह में इंसान से बेजुबान जानवरों का निस्वार्थ प्रेम, बेरुखी से पेश आने वाले रिश्तेदारों से बेहतर होता है यह दर्शाती पहली संवेदनशील कहानी है 'दे ताली।' अपने घर में, नायिका को पेइंग गेस्ट के तौर पर रखने वाली वृद्धा अकेली रहती है। कुत्ता, बिल्ली और बंदर, तोता पाले हुए है और उनसे बेहद स्नेह रखती है। शुरूआत में नायिका को यह प्रेम अजीब लगता है, लेकिन बाद में वास्तविकता से रु-ब-रु होने पर वह भी उनसे दोस्ताना हो जाती है। अत्यंत बोधगम्य कहानी।

किसी भी स्त्री का स्वभाव और वैचारिक समझ, आत्मसम्मान, उसके हारे हुए आंसुओं से कई गुना ज्यादा प्रभावी और समर्थ हो सकती है। 'रोना नही है' कहानी, जो अपने शीर्षक को सार्थकता प्रदान करती है। दो दोस्तों की कहानी है 'महाप्रयाण।' जिसमें दोस्त के महाप्रयाण पश्चात, कतिपय दोगले लोगों की बातचीत, उनके पुत्र की अफसरी, और अंतयात्रा के नाम पर केवल औपचारिकता, आज के परिवारों में असंवेदनशीलता की पराकाष्ठा दर्शाते हैं।

'आदमी का अंत' काल्पनिक होते हुए भी एक उल्लेखनीय कथानक है। इंद्र की सभा में पहुंचे हुए पंचमहाभूत, पृथ्वी को स्वयं समाप्त करने का मानस इसलिये रखते हैं कि मानव ने भौतिक सुख सुविधाओं और आधुनिकता, के नाम पर ऐसी परिस्थितियां निर्मित कर दी हैं, कि पृथ्वी का जीवन ही खतरे में हैं। इसके लिये इन सब को एक एक कर ब्रम्हदेव, विष्णुदेव फिर

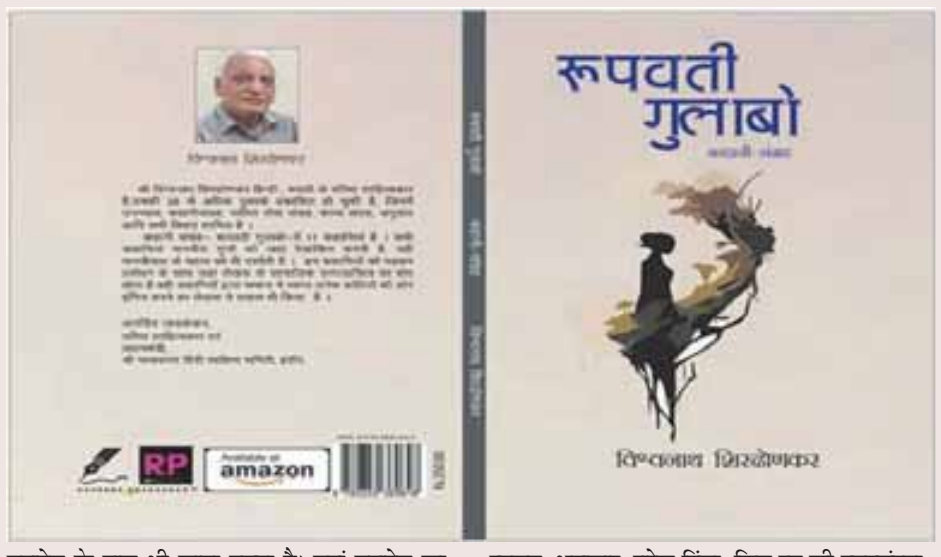

महादेव के पास भी जाना पडता है। वहां महादेव का यह कथन कि 'मेरा तीसरा नेत्र खोलने और नयी सृष्टि के निर्माण का समय आ गया है। यह कहानी का विचार करने को बाध्य करता, आंखें खोलता हुआ चरम बिंदु है। 'चक्रवर्ती राजा' कहानी मन और बुध्दि के संवाद के माध्यम से, आज की समस्याओं की ओर ध्यान दिलाती है। हेडफोन लगाकर सडक पर चलना, व्यसन, भ्रष्टाचार, घरेलू हिंसा, लिव इन की स्वच्छंदता, राजनैतिक गुंडागर्दी, अनैतिकता, जैसे विषय उठाकर मन और बुद्धि के आत्मघाती खेल पर बेबाक लेखनी चलायी है। कहानी 'सत्कार' गरीब पिता के मवाली पुत्र का राजनीति में प्रवेश और 'चेयर रेस' आज राजनीति में कुर्सी के लिये चल रही मारामारी पर कटाक्ष है। अंतिम और शीर्षक कहानी है, 'रुपवती गुलाबो।'. आज के युवाओं की अस्थिर मानसिकता और संस्कारों के गुम हो जाने से संबंधित है। दो बचपन से हमेशा साथ रह रहे घनिष्ठ मित्रों का अपनी अपनी शादी, अच्छी जिंदगी होने के बावजूद भी एक दूसरे की पत्नियों से आकर्षित होकर फिर विवाह करना, फिर पछताने पर आधारित एक अच्छी कहानी है।

कुल मिलाकर सभी कहानियां, स्त्री की सशक्तता, दोगलापन, स्वार्थ, दायित्वबोध, मनमानी, संवेदनहीनता, अपसंस्कृति, और कहीं कहीं मनोरंजक प्रस्तुति भी, इत्यादि उनके कथानकों में वैविध्य और विचारशीलता का परिचायक है।

यह कहना समीचीन होगा कि विश्वनाथ शिरढोणकर की इस पुस्तक में प्रकाशित सभी कहानियां वर्तमान विषमताओं के प्रति संवेदना व सामाजिक दायित्व को प्रतिबिबिंत करती हैं।

उल्लेखनीय है कि सामाजिक विषमताओं के प्रति नाराजगी के बावजूद वे कहीं भी बेवजह आक्रोशित नहीं होते। यथार्थ के नाम पर उनकी लेखनी अपनी मर्यादा नहीं भूलती, वरन प्रतीकात्मक बात रखने में समर्थता का अहसास कराती है।

विश्वनाथ शिरढोणकर की अन्य विधाओं की तरह 'कहानी' पर भी पकड़ मजबूत है। हिन्दी और मराठी दोनों पर उनका अधिकार है। कहानी संग्रह 'रुपवती गुलाबों' उनकी श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह है।

दृष्टिकोण

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दशहरे पर शास्त्र-शस्त्रों के पूजन पर आरएसएस का नजरिया कितना सही!

भारत में अनादि काल से परम्परागत शस्त्र, शास्त्र और शक्ति पूजन हो रहा है। हमारी यह परंपरा शास्त्रों के साथ शस्त्र पूजन और विधिवत शक्ति आराधना के लिए प्रेरित करती है। महाकवि निराला के मन और हृदय से जब 'राम की शक्ति पूजा' कविता प्रस्फुटित हो रही होगी, तब निश्चित ही उन्हें अपनी इसी परंपरा का ही स्मरण रहा होगा। निराला जब इस कविता को लिख रहे थे, तब कोई सामान्य भावभूमि नहीं रही होगी, वह विशेष थी, राम की शक्ति पूजा अंधकार से होकर प्रकाश में आने की कविता है। राम कथा इस देश की सबसे लोकप्रिय कथा है, इसलिए वे इसे अपनी कविता के कथानक के लिए चुनते हैं, यह युद्ध सामान्य युद्ध नहीं है। यह राम-रावण का युद्ध रामत्व अर्थात् सत्य के पक्ष में युद्ध है। आपको हर वक्त कोई रावण मिलेगा और उससे संघर्ष करता हुआ सुविचार श्रीराम के रूप में मिलता है। इस युद्ध में निराला की जो सबसे बड़ी चिंता रही और जिसकी ओर वे सभी का ध्यान आकर्षित करते हैं, वह यह कहना है, 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति', अतः वे अपना सर्वस्व शक्ति के लिए समर्पित कर देने की बात कहते हैं। वैसे भी देवी दुर्गासप्तसती में कहती भी हैं -

यो मां जयति संग्रामे यो में दर्प व्योपहति।
यो में प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।
(श्रीदुर्गासप्तशती,पञ्चमोऽध्यायः, श्लोक120)

अर्थात् 'जो मुझे संग्राम में जीत लेगा, जो मेरे अभिमान को चूर्ण कर देगा और संसार में जो मेरे समान बलवान होगा, वही मेरा स्वामी होगा' इसका संदेश साफ है जो शक्ति सम्पन्न है, मां शक्ति की कृपा भी उसी ओर है। शक्ति अच्छा-बुरा नहीं देखती, वह आपकी सामर्थ्य देखती है कि आप उसके ताप को सहन करने में सक्षम हैं कि नहीं । निराला श्रीराम के मुख से कहलवाते भी हैं कि अन्यायी शक्तियाँ काफी संगठित है, इसलिए हमें सज्जन शक्ति को एकत्र आना है। वस्तुतः राम की व्यथा ही मानव मन की व्यथा है, जोकि सत्य के मार्ग पर चलते हुए धर्म की जय होते देखना चाहती है। यहां राम को जाम्वन्त की सलाह काम आती है, वे कहते हैं-

'हे पुरुष-सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर;
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनंदन!' (कविता-राम की शक्ति-पूजा)

और उसके बाद हम देखते हैं कि परिस्थितियां पलट चुकी होती हैं। भगवान श्रीराम शक्ति की आराधना करते हैं, उसके बाद वे शक्ति को अपने साथ खड़ा पाते हैं।

वस्तुतः देखा जाए तो मां भगवती की आराधना के नौ दिन और इन नौ दिनों में नित्य प्रति शास्त्रों का पठन, मां भगवती के पूजन के साथ ही उनके हाथों में विराजमान विविध शस्त्रों का पूजन हर सनातनी हिन्दू विधि विधान से करते हैं और उसके बाद अंतिम दसवें दिन दशहरे पर अस्त्र-शस्त्रों का व्यापक स्तर पर सामूहिक पूजन करने की परंपरा हमारे समाज में सदियों से चली आ रही है। जिसके पास जो है यथाशक्ति छुरी, तलवार, गड़सा, धनुष-बाण, पिस्तौल, बंदूक या अन्य कुछ भी जो हमारी रक्षा करने में सहायक हो सकता है वह कोई भी अस्त्र हम विधि विधान से दशहरे पर उसका पूजन करते हैं । साथ ही जिन घरों में विद्या अध्ययन की परंपरा है और जो व्यापार से जुड़े हैं वे शस्त्रों के साथ अपने ग्रंथों व तराजू की पूरा करना नहीं भूलते।

वस्तुतः इस संदर्भ में परंपरा हमें यही कहती है कि जो हमें आगे बढ़ाने में सहायक हैं, वे हमारे सच्चे मित्र शस्त्र, शास्त्र और सामूहिक समाज की शक्ति है, जिसे हम देवी रूप में पूजते हैं । शस्त्रों की पूजा से परंपरा यह संकेत करती है कि जो शक्तिशाली है उसी के सभी मित्र हैं, कमजोर का कोई मित्र नहीं । कई उदाहरण भी हमारे सामने इस संदर्भ में मौजूद हैं । संभवतः यही कारण रहा कि हमारे ऋषि-मुनि अरण्यों में रहने के बाद भी शास्त्र के साथ शस्त्र की शिक्षा देते रहे। उनकी परा और अपरा विद्या भी शस्त्र और शास्त्र से मुक्त नहीं है।

शस्त्र और शास्त्र आपके आत्मिक बल को संवर्धित करनेवाले हैं। अथर्ववेद में कहा ही गया है, 'पाशविक बल से कई गुना अधिक शक्तिवान आत्मिक बल होता है। ये आत्मिक बल

जितने परिमाण से बढ़ेगा, उतने ही परिमाण से शत्रु के पाशविक बल घटेंगे।' उदाहरण प्रत्यक्ष है-रावण जब पाशविक शस्त्रों से सुसज्जित होकर रथहीन श्रीराम के सामने पहुँचा तब विभीषण से श्रीराम ने कहा - जिसके रथ के पहिये शौर्य तथा धैर्य हैं, सत्य और शील ध्वजा पताका हैं , बुद्धि प्रचंड शक्ति है , श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष हैं, अचल मन तरकस है , ज्ञानी गुरु का आशीर्वाद रूप कवच है इसके समान विजय उपाय न दूजा, इसलिए ही अंत में विजय श्रीरामजी की ही होती है।

इसी तरह से ऋग्वेद में आज्ञा दी गई है कि जो मायावी, छली, कपटी अर्थात् धोखेबाज है, उसे छल, कपट अथवा धोखे से मार देना चाहिए। मायाभिरिन्द्रमायिनं त्वं शुष्णमवातिरः। ।1।11।6।

हे इन्द्र! जो मायावी, पापी, छली तथा जो दूसरों को चूसने वाले हैं, उनको तुम माया से मार दो।

फिर महापण्डित विदुर ने जो लिखा वह भी ध्यान देने योग्य है। वे कहते हैं -

कृते प्रतिकृतिं कुर्याद्विंसिते प्रतिहिंसितम् । तत्र दोषं न पश्यामि शठे शाठ्यं समाचरेत् ॥ (महाभारत विदुरनीति)

अर्थात, जो आपके साथ जैसा बर्ताव करें उसके साथ वैसा ही करिए, हिंसा करने के वालों के साथ हिंसक रूप में ही आचरण करें, इसमें कोई दोष नहीं। छल करनेवालों को छल से ही मार दो। जैसे महाभारत में श्री कृष्ण ने गदा युद्ध के अवसर पर भीम को यही मंत्रणा दी थी कि है भीम छल कपट से दुर्योधन को मारो, क्योंकि वह इसी योग्य है। भगवान श्रीकृष्ण कहा भी है-

ये हि धर्मस्य लोप्तारो वध्यास्ते मम पाण्डव।
धर्म संस्थापनार्थं हि प्रतिज्ञैषा ममाव्यया॥ (महाभारतम् - 7.156.28)

(हे पाण्डव! मेरी निश्चित प्रतिज्ञा है कि धर्म की स्थापना के लिए मैं उन्हें मारता हूं, जो धर्म का लोप (नाश) करने वाले हैं।)

वेद में आदेश है की हमें प्रचंड शस्त्रों का अवश्य ही संग्रह करना चाहिए परन्तु इसके साथ ही अपराजेय चारित्रिक, मानसिक और आत्मिक बल का भी संचय करना चाहिए जैसा अर्जुन और भगवान श्रीराम ने किया था ।शक्ति आराधना के पर्व नवरात्री के पश्चात आने वाला विजयादशमी का पर्व विजयोत्सव के साथ जुड़ा हुआ है। शस्त्र-भक्ति की महिमा आसुरी ताकतों के खिलाफ दैवी शक्ति के विजय का महात्म्य दर्शाती है। शस्त्र की भक्ति हमें उसके दुरुपयोग की वृत्ति से दूर रखती है। इसी तरह से संस्कार और विवेक से ही शस्त्र के अहंकार से हम दूर रहते हैं । जैसे कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा, जहां जाने से प्रत्येक स्वयंसेवक को सनातनी होने का गर्व ही नहीं आता वह अपनी परंपरा में शस्त्र, शास्त्र और शक्तिपूजन के सही मायनों को समझता है।

संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने सन् 1925 में विजय दशमी वाले दिन ही शक्ति सम्पन्न राष्ट्र की संकल्पना को साकार करने के लिए और देश को स्वतंत्र कराने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी। उस समय संघ की प्रतिज्ञा में हर सदस्य देश को स्वतंत्र कराने का संकल्प लेते थे। स्वाधीनता के बाद यह संकल्प देश की बुराईयों को समाप्त करने का हो गया। हर स्वयंसेवक के लिए उसके राष्ट्र का परमवैभव ही उसका वैभव है। शस्त्र के सदुपयोग के लिए शास्त्र का ज्ञान होना जरूरी है। शस्त्र का दुरुपयोग एक ओर रावण और कंस बनाता है तो दूसरी ओर इसका सदुपयोग राम, कृष्ण और अर्जुन बनाते हैं। यह बात हर स्वयंसेवक आज शाखा में ठीक से समझ रहा है।

भारत को यदि पुनः विश्व शक्ति बनाना है तो हिंदुत्व को बचाए रखना होगा। हिन्दुत्व यानी भारत का स्व। स्वामी शिवानंद कहते हैं, ''हिन्दू धर्म मनुष्य के तर्कसंगत दिमाग को पूर्ण स्वतंत्रता देता है। यह कभी भी मानवीय तर्क की स्वतंत्रता, विचार, भावना और इच्छा की स्वतंत्रता पर किसी अनुचित प्रतिबंध की मांग नहीं करता है। हिंदू धर्म स्वतंत्रता का धर्म है, जो आस्था और पूजा के मामलों में स्वतंत्रता का व्यापक अंतर देता है। यह ईश्वर की प्रकृति, आत्मा, पूजा के रूप, सृष्टि और जीवन के लक्ष्य जैसे प्रश्नों के संबंध में मानवीय तर्क और हृदय की पूर्ण स्वतंत्रता की अनुमति देता है।'' भारत के संदर्भ में यही विविधता को बनाए रखना और अपनी परम्पराओं, संस्कार, संस्कृति, वेशभूषा और धर्म को बचाए रखना ही हिंदुत्व है। इसलिए आज की जरूरत है कि हम सभी देवी आराधना से शक्ति प्राप्त कर शस्त्र की विधिवत पूजा करें। अपने आत्मगौरव को जगाए रखें।

वास्तव में शस्त्र तो प्रतीक है, लेकिन हमें हर आसुरी शक्ति से निपटने के लिए हिम्मत चाहिए, पूजन का विधान तो उस अंदर की शक्ति को जाग्रत करना मात्र है। दशहरे पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सामूहिक शस्त्र और शास्त्र के शक्ति पूजन से संपूर्ण हिन्दू समाज में यह भाव जगा रहे, यही एक प्रयास है। शस्त्र और शास्त्र की पूजा भारत के लिए कोई नई नहीं है, हां, आज इतना अवश्य हुआ है कि जो सदियों से भारत भूमि पर चल रहा है, अब संघ भी उसमें हिन्दू समाज सामुहिकता के साथ सहभागी है ।

16 पटवारियों का 15 दिन का वेतन काटा, आक्रोशित पटवारी संघ

मांगें नहीं मानी तो 15 से कलमबंद हड़ताल, सौंपा ज्ञापन

बैतूल। जिला पटवारी संघ ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को तहसील बैतूल में पदस्थ पटवारियों को अकारण अवैतनिक कर वेतन काटने के विरोध में ज्ञापन सौंपा। इस संबंध में जिला अध्यक्ष जितेन्द्र पंवार ने बताया कि तहसीलदार बैतूल द्वारा तहसील बैतूल में पदस्थ 16 पटवारियों को माह सितंबर 2024 में 15 दिन के लिए अवैतनिक करते हुए वेतन काटा गया है। वे माह सितंबर 2024 में पूरे माह कार्यरत रहकर अपने पदीय दायित्वों का निर्वहन करते रहे हैं। कोई भी पटवारी मुख्यालय छोड़कर अन्यत्र नहीं गया है। फिर किस आधार पर पटवारियों

को अवैतनिक किया गया। तहसील अध्यक्ष अनिल वर्मा और तहसील सचिव संदीप चौरगड़े ने कहा कि जिन पटवारियों को अवैतनिक किया गया है, उन्हे अवैध कालोनी को खसरा कांलम-12 में अनाधिकृत कालोनी इंद्राज नही करने के कारण अवैतनिक किया जाना बताया जा रहा है। जबकि तहसील बैतूल के पटवारियों द्वारा 93 अवैध कालोनियों की रिपोर्ट तहसील कार्यालय में प्रस्तुत की गई। जिन पर कोई कार्यवाही आदेश सक्षम अधिकारी के द्वारा पारित नहीं किए गए है। जिला सचिव सुभाष पंवार और जिला कोषाध्यक्ष जगन्नाथ कुमरे ने बताया कि कार्यालय तहसीलदार के पत्र के आधार पर खसरा कालम-12 में अनाधिकृत कालोनी इन्द्राज करने हेतु कहा जा रहा है। जो कि मप्र ग्राम पंचायत कालोनी विकास नियम 2024 में निहित प्रक्रिया के अनुरूप नही है। पटवारी द्वारा प्रस्तुत अवैध कालोनी की रिपोर्ट पर विधिवत कार्यवाही किए बिना ही कालम- 12 में प्रविष्टि करने हेतु पटवारियों पर अनावश्यक दबाव बनाया जा रहा है। उपाध्यक्ष अवधेश वर्मा और संजय मोरे ने बताया कि प्रावधानो के तहत अवैध कालोनी का प्रबंधन एवं निर्बंधन की शक्तियां ग्रामीण क्षेत्र मे अनुविभागीय अधिकारी को व अवैध कालोनी के प्रबंधन एवं निर्बंधन की शक्तियां कलेक्टर को प्रदत्त है। तहसीलदार को अवैध कालोनी के संबध में मात्र जांच किए जाने तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत किए जाने तक की शक्तियां है किन्तु तहसीलदार महोदय बैतूल द्वारा अनावश्यक रूप से पटवारियो पर दबाव बनाया जा रहा है। प्रांतीय उपाध्यक्ष केशव कांत कोसे व प्रांतीय प्रवक्ता विवेक मालवीय ने बताया कि तहसील के पटवारियों पर राजस्व वसूली नहीं जाने का आरोप लगाया जा रहा है। मप्रभूरा संहिता तहत राजस्व बकायादार को मांग पत्र जारी किए जाने एवं वसूली किए जाने के अधिकार तहसीलदार को ही है। पटवारी राजस्व वसूली में सहयोग प्रदान कर सकता है । फिर भी तहसील बैतूल के पटवारी लगातार राजस्व वसूली के चालान प्रस्तुत कर रहे है। जो कि राजस्व वसूली के चालान से स्वत-ही सिद्ध है ।

मांग नहीं मानी तो 15 अक्टूबर से कलमबंद हड़ताल - बबली साहू व कोषाध्यक्ष महेन्द्र राठौर ने बताया कि समस्त पटवारियों में रोष व्याप्त है। मप्र पटवारी संघ तहसील बैतूल जिला बैतूल के अंतर्गत तहसील बैतूल के समस्त पटवारी विरोध स्वरूप दिनांक 11 अक्टूबर 24 से समस्त शासकीय वॉट्सअप ग्रुप से स्वयं को लेफ्ट कर देंगे। यह आगामी तीन दिन में रोका गया 15 दिवस का वेतन जारी नहीं किया जाता है तो, सभी पटवारी दिनांक 15 अक्टूबर से कलमबंद हड़ताल प्रारंभ कर देंगे। इस अवसर पर संघ के सह सचिव राजेन्द्र बैठे, महामंत्री राकेश देशमुख, संगठन मंत्री सुशील उपासे, प्रचार मंत्री अपार गुप्ता, तकनीकी विशेषज्ञ कृष्णा धोटे, कमलेश देशमुख सहित संघ के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद थे।

प्रतियोगी परीक्षा के लिए शिक्षक ने किया आर्थिक सहयोग

जन्मदिन नहीं मना कर राशि जरूरतमंद बच्चों को दी

बैतूल। शिक्षा विकसित राष्ट्र के निर्माण में नींव का पत्थर है। विद्यार्थी रूपी पत्थर को गढने व संवारने में शिक्षक का अहम भूमिका होती है। शिक्षक भावी पीढ़ी की संस्कारित समाज का निर्माण करने का प्रमुख स्रोत होता है। यदि शिक्षक चाहे तो उच्च शिखर तक छात्रों को पहुंचा सकता है। इसी उद्देश्य को लेकर जरूरतमंद बच्चों को विगत वर्षो से लगातार आर्थिक सहयोग कर पढ़ाई जारी रखने में सहयोग करने वाले समाजसेवी शिक्षक मदनलाल डढोरे के प्रयास भी सराहनीय है। श्री डढोरे के द्वारा नवरात्रि के पावन अवसर व बेटी देवांशी के जन्मदिन पर अनर्थक अपव्यय न कर उस राशि को ढोंडवाड़ा स्कूल में

जरूरतमंद गणित संकाय के बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा जेईई एवं अन्य परीक्षा के लिए शैक्षणिक सामग्री खरीदने के लिए आर्थिक सहयोग किया। मदनलाल डढोरे ने कहा कि जरूरतमंदों को चिन्हित कर पढ़ाई के लिए आर्थिक सहयोग जारी रहेगा। इस अवसर पर संकुल प्राचार्य मीना डंढारे व शिक्षक महेन्द्र पवार ने कहा कि श्री डढोरे के द्वारा प्रयास बच्चों के हित में किया गया है वह समाज और अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक पहल है। छात्रा दिव्यांशी परिहार, रूपाली पाटणकर,विशाल कवडे,सत्यम कुभारे सहित अनेक बच्चे आर्थिक सहयोग पाकर बच्चे खुशी से झूम उठे। इस कार्य की ग्रामीणों, छात्र-छात्राओं, शिक्षक व शिक्षकों ने प्रशंसा की। आज के कार्यक्रम में प्रीतीबाला माकोड़े, हेमलता चौधरी, योगेन्द्र मेहरा, कलावती हारोड़े, मदनलाल डढोरे, आशा अरोरा, राजेन्द्र बेले, शारदा माथनकर, जाग्रति भावसार, अजीत बारंगे, होसीलाल उइके, महेन्द्र पवार सहित अनेक शिक्षक मौजूद थे। श्री डढोरे के द्वारा विगत संस्था में पदस्थ रहते हुए जरूरतमंदों बच्चों को अपने स्वयं के व्यय पर शैक्षणिक सामग्री, स्वेटर, कपड़े, स्कूल की पुताई जैसे अनेक कार्य किए जाते रहें हैं। साथ ही श्री डढोरे ने बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते रहे जिसके अंतर्गत वह बच्चों से पौधारोपण करवाते हैं जिससे बच्चे पौधों का महत्व समझ सकें।

श्रद्धालुओं ने किया कन्या पूजन, मंदिरों में रही भक्तों की भीड़

जगह-जगह हुए हवन-पूजन एवं भंडारे

बैतूल। दुर्गा नवमी पर शहर के मंदिरों में भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ा। माता शेरावाली को मनाने के लिए हजारों लोगों ने मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना की। जगह-जगह हवन भंडारे का आयोजन करके कन्याभोज करवाया गया। मंदिरों में दुर्गा नवमी पर्व पर सुबह से ही भक्तों की कतार लगी रही। कोठीबाजार, सदर, टिकारी, कालापाठा, गंज सहित अन्य क्षेत्रों में स्थित दुर्गा मंदिरों में सुबह से ही पूजा-अर्चना करने के लिए महिलाओं की भारी भीड़ देखी गई। यही क्रम शाम तक चलता रहा। दुर्गा नवमी पर्व पर महिलाओं ने माता शेरावाली का पूजन-अर्चन करके भोग चढ़ाया तथा सुहागिन महिलाओं ने माता को हरी चूड़ी और चुनरी चढ़ाई। शहर में सैकड़ों जगह सुख शांति और समृद्धि के लिए हवन तथा भंडारे का आयोजन किया गया। सार्वजनिक दुर्गा पंडालों के अलावा घरों में भी आहूतियां डाली गई। जिससे शहर में धर्ममय एवं सारा वातावरण हवन कुंड के धुएं से पवित्र हो गया।

घरों में हुआ कन्या पूजन और भोजन- दुर्गा नवमी पर शहर के अधिकांश घरों में कन्या भोजन का आयोजन किया गया। माता के प्रतीक रूप में माने जाने वाली कन्याओं का घर-घर पूजन किया गया। श्रद्धालुओं ने सर्वप्रथम कन्याओं के पैर पखार कर उन्हें तिलक लगाया और खीर पुड़ी का भोजन करवाया गया। इसके बाद श्रद्धालुओं ने अपने सामर्थ्य के अनुसार कन्याओं को उपहार भेंट किये। इसके अलावा कल गुरुवार को भी कन्या भोज का आयोजन किया गया। कन्या भोज के पहले लोगों ने विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर माताराणी को चुनरी अर्पित की।

कई स्थानों पर हवन-पूजन और भंडारे- शहर के सार्वजनिक दुर्गा पंडालों में आज दुर्गा नवमी पर हवन-पूजन एवं भंडारे का आयोजन किया गया। माता मां मंदिर सहित अन्य स्थानों पर महाआरती की गई। श्रद्धालुओं ने शारदेय नवरात्र में जगत-जननी माताराणी को विराजित कर नौ-दिनों तक अपने सामर्थ्य के अनुसार उपासना की। पिछले नौ दिनों से श्रद्धा-भक्ति के साथ उपासना में लीन श्रद्धालुओं द्वारा लगातार आदिशक्ति मां दुर्गे की सेवा का सिलसिला चलायमान था और जैसे-जैसे पर्व समाप्ति की ओर बढ़ रहा था वैसे-वैसे भक्तों का उत्साह भी देखते ही बन रहा था।

दशहरा पर्व पर होगा रावण-कुंभकरण के पुतलों का दहन

बैतूल। लालबहादुर शास्त्री स्टेडियम में दशहरे के मौके पर रावण एवं कुंभकरण के पुतलों का दहन किया जाएगा। पुतला दहन को लेकर तैयारियां लगभग पूरी हो गई है। श्री कृष्ण पंजाबी सेवा समिति जिले में 67 वर्षो से रामलीला और दशहरा उत्सव मनाते आ रही है। प्रशासन द्वारा भी दशहरा उत्सव के मद्देनजर बेरिकेड्स लगाकर व्यवस्थाएं बनाई है। रावण-कुंभकरण के पुतलों के दहन के पहले विजय जुलूस निकाला जाएगा, जो विभिन्न मार्गों से होकर लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम पहुंचेगा, यहां राम और रावण का भीषण युद्ध होगा। कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री अन्य जनप्रतिनिधियों के अलावा हजारों लोगों के पहुंचने की संभावना जताई है। इस दौरान स्टेडियम के आसपास सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहेंगे। यातायात पुलिस द्वारा रावण दहन कार्यक्रम के दौरान लोगों के प्रवेश और बाहर निकलने के लिए व्यवस्था बनाई है तथा इसके लिए रूट चार्ट जारी किया है। पुतला दहन के पहले आकर्षक आतिशबाजी होगी। समिति ने दशहरा पर्व को लेकर तैयारियां पूरी कर ली है। समिति के दीपक सलूजा ने बताया कि प्रतिवर्षानुसार इस साल 55 फिट रावण और 50 फीट कुंभकरण का पुतला दहन किया जाएगा।

रामलीला में आज होगा अहिरावण और रावण का वध

भौरा। मंदिर रामलीला चौक पर हो रही रामलीला में आज रात्रि में अहिरावण की पाताल लोक नगरी का मंचन किया जायेगा। जिसमे लाल देव, काला देव एवं मां निकुभला देवी की आराधना का मंचन होगा। राम और रावण के भीषण युद्ध का मंचन भी किया जायेगा। जिसके बाद रावण दहन एवं भव्य आतिशबाजी भी होगी। कल रात्रि में मंडल द्वारा अंगद रावण संवाद,रावण कुंभकरण संवाद,लक्ष्मण और मेघनाथ संवाद का मंचन किया गया। जिसमे

मेघनाथ द्वारा लक्ष्मण पर शक्ति का प्रहार करके उसको मूर्छित कर दिया। हनुमान जी द्वारा पूरा द्रोणा गिरी पर्वत लाकर वैध सुसैन द्वारा संजीवनी की मदद से लक्ष्मण को बचाया गया। कुंभकरण एवं मेघनाथ वध का मंचन किया गया। रावण का किरदार रूबल सरदार, अहिरावण अमित तिवारी, कुंभकरण आनंद दुबे, मेघनाथ अनुराग पांडे,अंगद टप्पू अग्रवाल, वैध चुनमुन अग्रवाल,विभीषण चेतन विश्वकर्मा, सुग्रीव अंशु सिरोठिया, जामवंत डब्बू मालवीय,हनुमान मनीष सिरोठिया ने निभाया। मंडल के कलाकारों का मेकअप जबलपुर से पधारे आर्टिस्ट हर्षित झा मोनू द्वारा किया जा रहा है,उनका मंडल से हृदय से जुड़ाव ही है जो वे अपने कीमती समय में 10 दिनों के लिए भौरा आते है। मंडल के विशेष सहयोगी ओर रावण दहन समिति के प्रमुख सजल गोयल ने बताया कि इस वर्ष भव्य आतिशबाजी को व्यवस्था की जा रही है,सभी ग्रामवासी अधिक से अधिक संख्या में आयोजन में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाएं।

मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिये उचित जीवन शैली को व्यवहार में लागू करें : डॉ.घोरे

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या निदान के लिए स्वास्थ्य शिविर आयोजित

बैतूल। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय के नवीन भवन में मानसिक समस्या से ग्रस्त व्यक्ति के देखभालकर्ताओं हेतु जागरूकता सेमीनार का आयोजन किया गया। प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जगदीश घोरे ने बताया कि इस वर्ष की थीम कार्य स्थल में मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का समय है। डॉ घोरे ने बताया कि आज के समय में हम कार्यक्षेत्र में मानसिक तनाव में कार्य करते हैं, जिससे शारीरिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर होने का जोखिम रहता है, आफिस में काम करने वाले लोगों में मानसिक स्वास्थ्य विकारों के मामले काफी तेजी से बढ़ रहे हैं और इसी वजह से आत्महत्या के मामले भी सामने आ रहे हैं। हमें अपने और अपने परिवार के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिये उचित जीवन शैली को व्यवहार में लागू करना चाहिए।

नोडल अधिकारी डॉ. संजय खातरकर ने मानसिक रोगों के लक्षण एवं उपचार के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि तनाव, उदासी, घबराहट, चिंता, क्रोध, चिड़चिड़ापन, लोगों के साथ मिलने जुलने में कमी आदि मानसिक रोग के लक्षण है, ऐसी स्थिति में रोगी शराब गुटखा बीड़ी सिगरेट आदि का सहारा लेते हैं, इससे स्थिति दिनों दिन बिगड़ती चली जाती है। ऐसी मानसिक रोगी जिला चिकित्सालय के मनकक्ष में आकर इलाज कर सकते हैं, ऐसे रोगी का इलाज संभव है एवं टेली मानस कार्यक्रम 14416 व 18008914416 पर 24 घंटे 7 दिन पर कॉल कर मानसिक एवं भावनात्मक समस्या का समाधान ले सकते हैं। शिविर में 43 मरीज की मानसिक जांच एवं स्क्रीनिंग की गई एवं परामर्श दिया गया।

जागरूकता सेमिनार में ओम आयुर्वेदिक कॉलेज एवं हास्पिटल भारत भारती जामठी के छात्र-छात्राओं द्वारा नाटक के माध्यम से मानसिक रूप से ग्रसित होने पर एक विद्यार्थी, परिवार में पत्नी एवं घर से बाहर कार्य कर रही महिला जो कि मानसिक रूप से ग्रसित है के प्रति घर वालों एवं बाहर वालों के असहयोगात्मक व्यवहार की प्रस्तुति की गई। और साथ ही यह भी बताया गया कि मानसिक रूप से ग्रसित लोगों से बातचीत करें उन्हें लोगों के सहयोगात्मक व्यवहार की अत्यंत आवश्यकता है। सभी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। सेमिनार में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रेणुका गोहिया, आरएमओ डॉ रूपेश पदमाकर, डॉ वीरेन्द्र शाह प्राचार्य, डॉ संदीप पाटिल ओम आयुर्वेदिक कॉलेज, उप जिला मीडिया अधिकारी महेशराम गुबरेले, प्रभारी परिवार कल्याण शाखा भगत सिंह उइके, क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट मनकक्ष सुश्री ममता सोनी, नर्सिंग ऑफिसर, सुश्री सुलोचना पवार एवं ओम आयुर्वेदिक कॉलेज के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

नवरात्र में अष्टमी और नवमी को जन्म लेने वाली बेटियों को मिले सोने-चांदी के उपहार

माताओं का किया सम्मान कलचूरी समाज बैतूल का आयोजन

बैतूल। नवरात्र के पावन अवसर पर कलचुरी समाज बैतूल द्वारा जिला चिकित्सालय में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें अष्टमी और नवमी को जन्म लेने वाली बेटियों को देवी स्वरूप में पूजित कर सोने का लॉकेट और चांदी के सिक्के उपहार स्वरूप भेंट किए गए। कार्यक्रम के संयोजक शैलेंद्र बिहारिया और निमिष मालवीय ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नरेंद्र मालवीय और समाज के कार्यकारी जिलाध्यक्ष केके मालवीय उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में निलेश मालवीय, महिला जिलाध्यक्ष श्रीमती बिंदु मालवीय, अर्चना मालवीय, लता मालवीय, कुहू मालवीय और गोवा से विशेष रूप से आए स्विस बैंक के डायरेक्टर प्रीतेश मालवीय तथा समाजसेवी दीप मालवीय भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत बेटियों के पूजन से की गई। उन्हें चुनरी ओढ़ाकर सोने और चांदी के उपहार भेंट किए गए, और उनकी माताओं को सम्मानित किया गया। नवमी पर प्रातः 3.14 बजे जन्मी बेटी की माता तारा पप्पू ग्राम देहलवाड़ा, आमला को सोने का लॉकेट भेंट किया गया। यह सम्मान पाकर तारा पप्पू की आंखों में आंसू आ गए और उन्होंने इसे माता रानी का आशीर्वाद बताया। उन्होंने कहा, आज नवमी को मेरी बेटी के जन्म पर यह उपहार मिला, यह माता रानी का ही आशीर्वाद है। मैं अपनी बेटी को खूब पढ़ाऊंगी।

इन्हें मिले चांदी के सिक्के

इस विशेष अवसर पर आशा दीपक रत्नापुर, मनीषा संजय पिपरिया, सीमा पप्पू पिसाजोड़ी, प्रियंका आशीष बाजपुर, सविता लक्ष्मण बुंडाला, अंजना सुरेंद्र रगडगांव, जानकी रफीक दुर्गा वार्ड, निकिता प्रवीण जामठी, शियावती संदीप आमला, रोशनी मुकेश जावरा, निकिता कमलेश साईखेड़ा, रूपा महेश नयेगांव, दुलवती संदीप और दीपा मुकेश को चांदी के सिक्के भेंट किए गए। साथ ही, सभी माताओं को मोतियों की माला और पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया।इस अवसर पर क्यों बेटों का रोना है, बेटी भी तो सोना है, बेटी है तो कल है, और बेटी है तो खुशी है जैसे प्रेरणादायक स्लोगन भी उपस्थित लोगों ने एक स्वर में दोहराए।

जिला सहकारी संघ मर्या. बैतूल द्वारा प्रकाशित आरती संग्रह का विधायक ने किया विमोचन

बैतूल। जिला सहकारी संघ मर्यादित बैतूल द्वारा प्रकाशित आरती संग्रह बुक का विमोचन शुक्रवार 11 अक्टूबर को पापुलर विपणन समिति बैतूल गंज प्रांगण में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा किया गया। नवरात्रि के शुभ अवसर पर संघ द्वारा किताब में भगवान की आरती के साथ जिले में संचालित समितियों के साथ भारत सरकार और मध्य प्रदेश सरकार द्वारा सहकारिता के क्षेत्र में चलाई जा रही योजनाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है, जिसका लाभ कृषकों समेत कर्मचारियों को भी मिलेगा, विमोचन कार्यक्रम में समिति सदस्यों और कृषकों को संबोधित करते हुए बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि भारत सरकार सहकारिता को एक नया आयाम दे रही है जिसमें अब सहकारी समितियां आत्मनिर्भर बनेंगी वही जनता को समिति के माध्यम से गुणवत्ता युक्त प्रोडक्ट उचित दमो में उपलब्ध हो सकेंगे। भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं और सहकारिता के क्षेत्र में किए जा रहे नवाचार सभी के लिए लाभकारी है, साथ ही जिला सहकारी संघ मर्यादित बैतूल द्वारा प्रकाशित आरती संग्रह की विशेषताएं बताते हुए उन्होंने कहा कि सहकारिता के विषय में जनता तक जानकारी पहुंचाने का सराहनीय क़दम है। कार्यक्रम में बतौर अध्यक्ष बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, मुख्य अतिथि सतीश पाठा जिला पंचायत सदस्य, अतीत पवार पूर्व अध्यक्ष बैतूल नागरिक सहकारी बैंक, दीपक कपूर एवं के.के.शिव उपायुक्त सहकारिता बैतूल, प्रभारी मुख्य कार्यपालिका अधिकारी श्रीमती नीता निगम सहकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष कमल पवार उपस्थित थे। इसके साथ ही इफको संस्था के अधिकारी समेत सहकारिता विभाग के अधिकारी कर्मचारी एवं संस्थाओं के सदस्य व कृषक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। संघ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मंच संचालन अशोक देशमुख प्रबंधक आदिमजाति सेवा सहकारी समिति जामठी द्वारा किया गया।

लक्ष्मण को लगा शक्ति बाण, श्रीराम और रावण के बीच शुरू हुआ भीषण युद्ध

राम-रावण युद्ध के भीषण दृश्य को देख रोमांचित हुए दर्शक

बैतूल। श्री कृष्ण पंजाब सेवा समिति के तत्वावधान में आयोजित रामलीला में शुक्रवार की रात सीधी के कलाकारों ने लक्ष्मण मूर्छा, मेघनाथ और कुंभकरण वध के साथ राम-रावण युद्ध के भीषण दृश्य को मंचित किया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

रामलीला की शुरुआत में रावण का पराक्रमी पुत्र मेघनाथ लक्ष्मण जी को अपनी ब्रह्म शक्ति से मूर्छित कर देता है। जैसे ही लक्ष्मण मूर्छित होते हैं, हनुमान जी राजवैध सुसेन की सलाह पर संजीवनी बूटी लेकर आते हैं और लक्ष्मण को स्वस्थ कर देते हैं। इस बीच, राम-रावण सेना के बीच भीषण युद्ध चल रहा होता है। रावण के योद्धाओं मेघनाथ और कुंभकरण का वध राम सेना द्वारा किया जाता है।

राम-रावण युद्ध में मेघनाथ ने अपनी ब्रह्म शक्ति का प्रयोग कर लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया, जिसके बाद हनुमान जी संजीवनी बूटी लाए और लक्ष्मण को ठीक किया। इसके बाद मेघनाथ ने नागपाश से राम सेना को जकड़ने की कोशिश की, परंतु जामवंत जी के प्रयास से सेना इस संकट से मुक्त हो गई। मेघनाथ ने अपनी अजेय शक्तियों को हासिल करने के लिए आसुरी यज्ञ का आयोजन किया, लेकिन राम सेना ने उस यज्ञ को विध्वंस कर दिया, और अंततः लक्ष्मण ने मेघनाथ का वध कर दिया।

कुंभकरण, जो रावण सेना का सबसे बड़ा महारथी था, उसका भी अंत युद्ध के दौरान हो गया। इसके साथ ही अहिरावण और रावण सेना के कई अन्य योद्धाओं का वध किया गया। रावण के प्रमुख योद्धाओं के मारे जाने के बावजूद, महाबली रावण हार मानने को तैयार नहीं था और उसने स्वयं युद्धभूमि में उतरकर श्रीराम से सीधा मुकाबला किया।

श्रीराम और रावण के बीच भीषण युद्ध में दोनों ओर से शक्तिशाली बाणों का आदान-प्रदान हुआ। कभी रावण अपनी चमत्कारिक शक्तियों से राम सेना को विचलित करता, तो कभी श्रीराम अपनी युद्ध कुशलता से रावण पर हावी होते। इस बीच रावण ने कई बार अपनी गरजती आवाज से युद्धभूमि को भर दिया, जिससे रामलीला के दर्शक रोमांचित हो उठे। कई बार दृश्य ऐसे थे कि छोटे बच्चों के साथ-साथ वयस्क भी सहम गए।

रावण दहन और विजय जुलूस आज- दशहरा उत्सव के अंतर्गत आज शनिवार शाम को रावण और कुंभकरण के पुतलों का दहन किया जाएगा। इससे पहले गंज स्थित श्री कृष्ण मंदिर से विजय जुलूस निकलेगा, जिसमें श्री कृष्ण पंजाब सेवा समिति के पदाधिकारी और नागरिक शामिल रहेंगे। लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में रावण और कुंभकरण के पुतलों का दहन होगा। इसके साथ-साथ राम-रावण युद्ध का मंचन भी किया जाएगा और रंगीन आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाएगा। नागरिकों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में विजय जुलूस और दशहरा उत्सव में सम्मिलित होकर इस धार्मिक आयोजन का हिस्सा बनें। इस वर्ष आदर्श श्री इंद्रलोक रामलीला मंडल, खजूरी, जिला सीधी के कलाकारों ने जीवंत अभिनय कर दशहरा उत्सव में चार चांद लगाए हैं।

विवादास्पद महिला रेंजर को छुट्टी पर भेजा..

बांस भिर्रे में भ्रष्टाचार के लिए उसके निलंबन की मांग की थी..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

मुख्य वन संरक्षक नर्मदापुरम ने अपने आदेश क्रमांक 210 दि 10.10.24 द्वारा आखिरकार सिवनी मालवा वन परिक्षेत्र का प्रभार बानापुरा रेंज के रेंजर पवार को सोपने को सौंपने के जारी कर दिए। इससे कर्मचारियों में विवादास्पद रही रेंजर वंदना महतो को हटाने की मांग देर आए दुरुस्त आए पर चरितार्थ हुई। इसे लेकर संघ के अध्यक्ष उइके ने कर्मचारी हित को ध्यान में रखते हुए आगे आए सभी कर्मचारियों अधिकारियों के सहयोग हेतु आभार प्रकट किया है। वन कर्मचारी संघ के संरक्षक मधुकर चतुर्वेदी ने तो वंदना महतो के बांस भिर्रे की सफाई में 22 लाख रुपए के घपले की जांच रिपोर्ट पाई जाने पर उनके निलंबन की मांग की थी जो अब भी नए मुख्य वन संरक्षक से अपेक्षित रहेगी कहा है। वन कर्मचारी संघ के संरक्षक श्री चतुर्वेदी का कहना है पिछले 3 वर्षो से भ्रष्टाचार के मामलों की जांच में अधिकारियों /कर्मचारियों के आर्थिक भ्रष्टाचार दस्तावेजी रूप से प्रमाणित होने के बाद भी वो सेवा में बने हुए हैं यहां तक कि आर्थिक भ्रष्टाचार के सरगना अजय पांडे आईएफएस को शासन ने बजाय बर्खास्त करने के उन्हें शहडोल वन संरक्षक का पद उपहार में दे दिया.. ! उन्होंने आशा व्यक्त की है कि आगंतुक अशोक कुमार मुख्य वन संरक्षक वन मंडल नर्मदापुरम में लंबित आर्थिक भ्रष्टाचार करने वालो को कठोर दंड देकर भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण की नकेल कसेंगे।

उपस्थित नहीं होने पर ग्राम पंचायत सचिव के खिलाफ कार्यवाही करने के निर्देश

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह ने भ्रमण के दौरान ग्राम पंचायत वन जागीर के सचिव बलवीर सिंह किरार अनुपस्थित पाए जाने पर फोन पर बुलवाने के निर्देश दिए। इसके बावजूद उपस्थित नहीं होने पर के खिलाफ कार्यवाही करने के निर्देश जिला पंचायत सीईओ को दिए। इसी प्रकार शालाओं के निरीक्षण के दौरान शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला कुंआखेडी एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गुलाबगंज में अनुपस्थित पाए गए शिक्षको, अवकाश संधारण करने में लापरवाही बरतने वालो के खिलाफ कार्यवाही करने के निर्देश जिला शिक्षा अधिकारी को दिए है। कलेक्टर श्री सिंह के भ्रमण के दौरान ग्यारसपुर एसडीएम श्री मनोज कुमार उपाध्याय, गुलाबगंज तहसीलदार श्री पलक पिडिहा, महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री भरत सिंह राजपूत के अलावा विभिन्न विभागो के खण्ड स्तरीय अधिकारी साथ मौजूद रहे।

एक प्रकरण में नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री दीपक कुमार शुक्ला के द्वारा फरार आरोपीं के एक प्रकरण में सूचना देने वालो को दो हजार रूपए की नगद राशि देने की उद्घोषणा की है। सूचनाकर्ता चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा। पुलिस अधीक्षक श्री शुक्ला के द्वारा जारी इनाम उदघोषणा आदेश में उल्लेख है कि थाना पथरिया में दर्ज अपराध क्रमांक 02/2018 एवं प्रकरण क्रमांक 22/2010 के फरार आरोपी पर्वत पुत्र रामप्रसाद आदिवासी उम्र 25 साल निवासी डबरी थाना शमशाबाद की सूचना देने वाले को दो हजार रूपए की नगद राशि इनाम देने की घोषणा की है।

डेंगू के 4754 सेम्पल लिए गए, 372 पॉजिटिव पाए गए

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह के द्वारा दिए गए निर्देशो के अनुपालन में विदिशा शहर में डेंगू के नियंत्रण हेतु विशेष पहल की जा रही है मलेरिया विभाग के द्वारा हर रोज सेम्पल लिए जा रहे है वहीं नागरिकों को जनजागरूक भी किया जा रहा है। जिले में अब तक 15085 घरो में लार्वा सर्वे किया गया है। जिसमें से डेंगू के सेम्पल 4754 घरो में लिए गए है और अब तक 372 पॉजिटिव पाए गए है। आज दिनांक तक स्वस्थ हुए मरीजो की कुल संख्या 366 है। आज बुधवार को जिला मलेरिया अधिकारी विदिशा के नेतृत्व में कार्यालय की काम्बेट टीम द्वारा डेंगू की प्रतिबंधात्मक कार्यवाही विदिशा शहर के आज्ञाराम कालोनी, टीलाखेड़ी, पीतलमील, करैयाखेड़ा, जतरापुरा, गोकुलधाम एवं ब्लॉक पीपलखेड़ा के ग्राम ब्यौची त्योंदा के ग्राम घटेरा में 296 घरों में लार्वा सर्वे किया गया। 15 घरों में लार्वा पाया गया। टीम के द्वारा लार्वा विनिष्टिकरण की कार्यवाही की गई। उपरोक्त गतिविधि के अंतर्गत कीटनाशक दवा का छिड़काव फॉगिंग कार्य किया गया तथा डेंगू से बचाव संबंधी स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से जनसमुदाय को बताया गया कि वह अपने घर एवं घर के आस-पास में पानी एकत्रित न होने दे टायर, गमले, कूलर, पानी टंकी की नित्य सफाई करे तथा मच्छरदानी का उपयोग करे व फुल अस्तीन के कपड़े पहने व मच्छर पनपने न दे।

गरबा के शोर में शक्ति आराधना का जश्न अब समापन की ओर..

नर्मदापुरम। शक्ति आराधना नवरात्रि पर्व धूमधाम और श्रद्धापूर्वक मनाएं जाने के साथ अब समापन की ओर बढ़ गया। नगर में इस बार जगह जगह गरबा खेलने वालों का उत्साह और उसमें भाग लेती दर्शकों की भीड़ ने एक तरह नगरीय आवागमन व्यवस्था चरमरा डाली। जिसे प्रशासन चाहकर भी व्यवस्थित कर पाने में खुद को सक्षम नहीं था। पर्व समापन से पूर्व देवी दर्शन की बड़ रही भीड़ और उधर गरबा देखने की ललक पुलिस की सक्रियता को लेकर किसी अप्रिय घटना सुनाई नहीं दी नगर हित में यह एक अच्छी बात है। नहीं तो आराधना पर्व के पूर्व, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष ने पुलिस प्रशासन को नगरीय अव्यवस्था को लेकर लिखी चिट्ठी में जिस तरह का चित्रण किया था उससे यही समझ आया था कि नगर में अशांति घर बना चुकी। हालांकि नगर के पास सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र माखन नगर में घटी अहिरवार महिला की हत्या के मामले को लेकर पुलिस पर सवालिया निशान जरुर लगे, लेकिन आस्था के शक्ति पर्व पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक दिन पहले क्षत्राणी एकता मंच और साथ ही अन्य सखियां नारी शक्ति द्वारा मां हिंगलाज देवी मंदिर पहुंचकर माता रानी को चुनरी, सौभाग्य सामग्री और मिष्ठान्न अर्पण कर उन्होंने देशवासियों की सुख समृद्धि की कामना के साथ, भजन, जस के साथ ही साथ वहां गरबा करते हुए मां की आराधना की साथ ही नर्मदा की पूजा-अर्चना की जिसमें सपना ठाकुर, सुचिता चौहान , प्रीति सिंह , माधुरी तोमर, वर्षा गौर, रजनी तोमर, सीमा भाट , मनीषा ठाकुर, सिया ठाकुर, शैफाली दुबे, प्रत्याशा पांडेय, मोनिका पटेल, रजनी तोमर, सुषमा गुप्ता, शिल्पा राजपूत, जूही और समर की महत्वपूर्ण भूमिका रही, इधर बंगाली समाज द्वारा हैप्पी मैरिज गार्डन में दो दिन पहले मां दुर्गा की प्रतिमा सष्टी पूजा के साथ विधि-विधान से मनाई और आज अष्टमी, पूजा स्थल पर बंगाली ऐसोसिएशन के हर छोटे बड़े सदस्य की मेहनत इस बार हमेशा से ज्यादा शक्ति पूजा सम्पन्न कराने में नजर आई। ताज्जुब इस बार किसी तरह की कोई कमेटी यहां गठित नहीं बस बंगाली ऐसोसिएशन के नाम पर सभी एकजुट होकर मां की आराधना में जुटे हैं। बंगाली समाज में पूजा के दौरान ढांक बजाने और धुनुची से मां की आराधना का शक्ति पर्व में अलग आकृर्षण होता है वह देखा गया फिर यहां कलकत्ता वाले ढांक तो नहीं लेकिन स्थानीय ढोल बजाने वाले कलाकारों के हाथ ढोल पर ढ़ाक से कुछ कम भी नजर नहीं आया....

शक्ति अभिनंदन अभियान के तहत शासकीय महाविद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

बैतूल (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा शक्ति अभिनंदन अभियान के अंतर्गत बुधवार को शासकीय महाविद्यालय शाहपुर के सभाकक्ष में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक श्रीमती गंगा उईके, जनपद अध्यक्ष शाहपुर श्री मवासे नगर परिषद उपाध्यक्ष शाहपुर श्रीमती पम्मी छोटू राठौर मौजूद रही। सर्वप्रथम मुख्य अतिथियों ने मां सरस्वती का पूजन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम के दौरान चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ने हिस्सा लिया।

शक्ति अभिनंदन अभियान की जानकारी

श्रीमती दीपमाला अहाके परियोजना अधिकारी ने शक्ति अभिनंदन अभियान के उद्देश्य की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान आंगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण अंचल में भी महिलाओं के हित में बनाये गये कानून की जानकारी देना, विकास मे महिला भागीदारी पर परिचर्चा का आयोजन, महिला सुरक्षा वातावरण निर्माण हेतू शपथ दिलाना, बुजुर्ग महिलाओं को केंद्र पर लाकर सम्मान करना आदि कार्यक्रम प्रारंभ है। अभियान के दौरान 11 अक्टूबर 2024 तक जनजागरूकता लाकर व्यापक प्रचार प्रसार भी किया जा रहा है। श्रीमती माधवी घरसर पर्यवेक्षक ने बताया कि यह अभियान विभाग की एक अभिनव पहल है, जिसके माध्यम से ग्रामीण अंचल में निवासरत महिलाओं एवं बालिकाओं को नये कानून की जानकारी, सुरक्षा करना, संवाद के माध्यम से रोजगार, बिजनेस, उद्यमिता में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को प्रोत्साहित किया जायेगा। विभाग के अधीन पदस्थ समस्त पर्यवेक्षकों के द्वारा कार्यक्रम में विषयवस्तु पर अपने विचार व्यक्त किए गए। उल्लेखनीय है कि महिला एवं बालिका सशक्तिकरण के प्रति जन जागरूकता लाने के उद्देश्य से परियोजना के अधीन समस्त 193 आंगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से 02 अक्टूबर 2024 से 11 अक्टूबर 2024 तक दी गई थीम के अनुसार कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर जनजागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है।

कामाख्या यात्रा के लिए 5 कर्मचारियों को अनुरक्षक के रूप में नियुक्त किया

सीहोर। कामाख्या तीर्थ यात्रा के लिए ट्रेन 13 अक्टूबर को सीहोर रेलवे स्टेशन से रावाना होगी। और इसमें सीहोर से 279 तीर्थ यात्री रवाना होगें इसका स्टापेज सीहोर रेलवे स्टेशन हैं। तीर्थ यात्रियों के साथ जाने के लिए 05 अधिकारी एवं कर्मचारी को अनुरक्षक के रूप में नियुक्त किया गया हैं।नियुक्त किये गये कर्मचारियों में राजस्व निरीक्षकश्री संतोष दरबार, पटवारी श्री पवन यादव एवं श्री अखिलेश देवलिया, खंड पंचायत अधिकारी श्री नर्वदा प्रसाद सूर्यवंशी, सहायक ग्रेड-3 श्री मनीष कुमार कीर अनुरक्षक के रूप में यात्रियों के साथ रहेंगें। नियुक्त अनुरक्षकरेल्वे स्टेशन पर उपस्थित होकर यात्रियों के साथ ट्रेन में यात्रा करेंगे, एवं IRCTC द्वारा की गयी समस्त व्यवस्थाएं (भोजन, नाश्ता, पेयजल, शौचालय की स्थिति तीर्थ स्थल पर रूकने की व्यवस्था) सुनिश्चत करें। यात्री को स्वयं अपने व्यय से आना होगा। उसके पश्चात यात्रा के लिए कोई शुल्क देय नहीं होगा। कामाख्या तीर्थ यात्रा के लिए बोर्डिंग स्टेशन सीहोर रहेगा। तीर्थ यात्री स्वयं के साधन से रेल्वे स्टेशन सीहोर तक जाने की व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे। यदि कोई यात्री विशिष्ठ सुविधायें का लाभ प्राप्त करता है तो यात्री स्वयं वहन करेगा। यात्रियों से अपेक्षा है कि वे मौसम के अनुरूप वस्त्र, ऊनी वस्त्र, व्यक्तिगत उपयोग की सामग्री यथा कंबल, चादर, तौलिया, साबुन, कंघा, आवश्यक दवाईयां, दाढ़ी बनाने का सामान आदि साथ में रखें।

बीएससी स्टूडेंट पेनल ने आकर्षक प्रतिमा स्थापित की

सुबह सवेरे सोहागपुर। पुराने थाने के सामने बीएससी स्टुडेंट पेनल ने इस साल भी त्रिमूर्ति की आकर्षक प्रतिमा की स्थापना की है। उल्लेखनीय है कि बीएसपी स्टुडेंट पेनल विगत 39 सालों से प्रतिमा स्थापित करता आ रहा है। पूर्व में उक्त प्रतिमा यात्री प्रतीक्षालय में स्थापित की जाती थी। लेकिन भाजपा से जुड़े नवधनाढ्यों ने कतिपय कारणों से रात के अंधेरे में ग्रामीण जनता-जनार्दन के लिए सुविधाजनक प्रतीक्षालय जेसीबी मशीन से ध्वस्त करावा दिया था। जिसमें भाजपा सहित कतिपय स्वार्थी नागरिकों की खूब छीछालेदार हुई थी इस कारण अब टेस्ट लगाकर माताराणी की सेवा बीएससी स्टुडेंट पेनल कर रहा है। मुख्य बाजार में होने के कारण यहां दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है।

जवाहर वार्ड में विराजीं माई काली

जवाहर वार्ड में महाकाली महोत्सव समिति के तत्वावधान में माता महाकाली की आकर्षक प्रतिमा की स्थापना की गई है। महाकाली समिति के अरविंद चौरसिया ने बताया कि यहां विगत 12 सालों से प्रतिमा की स्थापना की जा रही है। इस आकर्षक प्रतिमा का निर्माण खड़गराम चक्रधारी ने किया है।

पुल के पास सब्जी बाजार में सुन्दर प्रतिमा

पुल के पास सब्जी बाजार में पलकमती नदी के लिपटे जाने वाले रास्ते पर अतिसुंदर माताराणी की प्रतिमा कई सालों से स्थापित की जा रही है वहीं मुख्य बाजार तक सुन्दर सजावट की गई है।

मधुर मिलन दशहरा महोत्सव समिति के तत्वावधान में आज रात होगा 51फुट के रावण का दहन

सुबह सवेरे सोहागपुर। मधुर मिलन दशहरा महोत्सव समिति के तत्वाधान में आज 42 वां विशाल दशहरा महोत्सव मनाया जाएगा नगर का सबसे आकर्षक 51 फुट के रावण का दहन रात 8.30 बजे पलकमती नदी के रिपटे के परिसर में आतिशबाज़ी के दहन होगा। उल्लेखनीय है इस रावण दहन को देखने पलकमती नदी पुल के अलावा पलकमती नदी घाट पर नागरिकों, महिलाओं एवं बच्चों की भारी संख्या में उपस्थिति रहती है।इधर पुराने थाना परिसर में रानी लक्ष्मीबाई मंच में रात्र 9 से बुंदेली बुंदेली लोकगीत गायक राकेश ठाकुर, कमाल एवं सुप्रसिद्ध लोकगीत गायिका मीरा ठाकुर दमोह अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति देंगे । इसी क्रम में राई नृत्य भी होगा।मुख्य बाजार में अखाड़ों का प्रदर्शन , देवी जस आदि के कार्यक्रम होंगे। मधुर मिलन दशहरा महोत्सव समिति अध्यक्ष यशवंत जवार ने नागरिकों से दशहरा महोत्सव के सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।

विधायक प्रतिनिधि ने दिया इस्तीफा, सीबीआई जांच की, की मांग

मामला भाजपा नेता के सुसाइड का, मृतक की पत्नी ने लगाए गंभीर आरोप

बैतूल। भाजपा नेता सुसाइड मामले में आरोपी बनाये गये सारणी के विधायक प्रतिनिधि रंजीत सिंह ने खुद को बेदाग बताते हुए पद से इस्तीफा दे दिया है। श्री सिंह ने मामले में उनका नाम शामिल किए जाने को राजनीतिक षड्यंत्र का हिस्सा बताया। उन्होंने कहा कि जब तक वे आरोप मुक्त नहीं हो जाते, तब तक विधायक प्रतिनिधि के पद पर नही रहेंगे, ताकि लोगों को ऐसा न लगे कि मेरी वजह से जांच में देरी हो रही है। गौरतलब है कि सारणी भाजपा मंडल अध्यक्ष रविन्द्र देशमुख ने गत दिनों स्वयं को गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। आत्महत्या के पहले लिखे तीन पेज के सुसाइड नोट में उन्होंने दस आरोपियों का नाम लिखा था, जिसमें भाजपा के विधायक प्रतिनिधि रंजीत सिंह, मंडल महामंत्री प्रकाश शिवहरे सहित अन्य का भी नाम था। यहां उल्लेखनीय है कि गुरुवार को पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता सुखदेव पांसे, जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे सहित दर्जनभर वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने सारणी पहुंचकर मृतक रविंद्र देशमुख के घर जाकर परिजनों से मुलाकात की थी, उसके बाद गुरुवार को जिला मुख्यालय पर भी कांग्रेसियों ने एसपी से मिलकर आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी कर निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए एसआईटी गठित करने की मांग की थी, जिसके बाद पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली। इसके बाद आनन फानन में विधायक प्रतिनिधि का इस्तीफा हुआ और सारणी मंडल महामंत्री प्रकाश शिवहरे को भी भाजपा जिलाध्यक्ष द्वारा पद से हटा दिया गया।

रविन्द्र देशमुख की पत्नि ने खोला मोर्चा- वहीं इस मामले में रविन्द्र देशमुख की पत्नि ने भी आज मोर्चा खोलते हुए मीडिया के सामने आकर कहा कि सुसाइड नोट में लिखे गए लोगों के द्वारा ही मेरे पति को लगातार प्रताड़ित किया जा रहा था और इन लोगो की प्रताडना के कारण ही उनको आत्महत्या जैसा कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा। रविन्द्र की पत्नि का कहना है कि यदि इस मामले में पूर्व में ही अनिल खवसे द्वारा सुसाइड करने के बाद यदि पहले ही आरोपियों के खिलाफ पुलिस द्वारा निष्पक्ष रूप से कार्यवाही कर दी जाती तो शायद आज उनके पति आत्महत्या नहीं करते। उन्होंने वीडियो में कहा कि भाजपा नेता आरोपियों को न बचाएं। वहीं आज शुक्रवार को केंद्रीय राज्य मंत्री डीडी उइके, क्षेत्रीय विधायक योगेश पंडाग्रे, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल सहित अन्य भाजपा नेताओं ने मृतक रविंद्र के घर जाकर परिजनों से मुलाकात कर ढांढस बंधाया, उन्होंने रविन्द्र के परिजनों को आश्वासन दिया कि मामले की निष्पक्ष जांच करवाई जाएगी। गौरतलब है कि इस आत्महत्या के मामले में भाजपा नेताओं, पत्रकार सहित दस लोगों का नाम शामिल है।

रंजीत सिंह ने की सीबीआई जांच की मांग- इस मामले में आरोपी बनाये गये विधायक प्रतिनिधि रंजीत सिंह ने वीडियो जारी करते हुए कहा कि मैं भाजपा जिलाध्यक्ष बबला शुक्ला और विधायक योगेश पंडाग्रे से मांग करता हूं कि इसकी सीआईडी जांच की जाए। उन्होंने सवाल खड़े करते कहा कि आत्महत्या केस में किन लोगों ने अवैध पिस्टल उपलब्ध कराई। हैंड राइटिंग की जांच होनी चाहिए। मामले में कई प्रकार की खामियां देखने को मिल रही है। सीआईडी जांच होने से यह पता लग सके गा कि इस साजिश के पीछे वास्तव में कौन लोग है। मेरी कॉल डिटेल निकाली जाए, जिसने आत्महत्या की उससे मेरे पिछले दो साल से मेरी कोई बातचीत नहीं हुई है। लेकिन मुझे इस मामले में राजनीतिक षड्यंत्र के तहत आरोपी बनाया जा रहा है।

भाजपा मण्डल कार्यालय में कार्यकर्ताओं ने दिवंगत नेता रविंद्र देशमुख को दी श्रद्धांजलि- सारनी भाजपा के मंडल उपाध्यक्ष रविंद्र देशमुख द्वारा बीते दिनों कुछ लोगों द्वारा प्रताड़ित करने पर स्वयं को गोली मारकर खुदकुशी कर ली थी, जिससे क्षेत्र में शोक व्याप्त है। उल्लेखनीय है कि इस खबर से दुखी होकर सारणी मंडल अध्यक्ष नागेंद्र निगम द्वारा 5 दिनों तक मंडल कार्यालय को बंद रखा गया। सारणी मंडल के कार्यकर्ताओं ने दुखी मन से आज शुक्रवार को स्वर्गीय रविन्द्र देशमुख को दो मिनिट का मौन धारण करते हुए श्रद्धांजली दी। और ईश्वर से दिवंगत आत्मा को श्री चरणों में स्थान प्रदान कर शांति प्रदान करने की प्रार्थना की। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष नागेंद्र निगम, किशोर बरदे, कमलेश सिंह, श्याम मदान, संजय अग्रवाल, सुधा चंद्रा, पंजाब राव बारस्कर रेवा शंकर मगरदे कृष्णा साहू शिबू सिंह बंटी अग्रवाल कुबेर डोंगरे विनय मदने मनीष धोटे राजकुमार नागले मुकेश बाबू सिंह मुकेश जैसवाल प्रकाश डेहरिया गणेश मस्की, हेमंत साहू , संजय लोखंडे आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आगामी त्यौहारों को दृष्टिगत रखते हुए खाद्य सुरक्षा प्रशासन की कार्यवाही जारी

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रोशन कुमार सिंह के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में विदिशा जिले में खाद्य सुरक्षा प्रशासन की टीम द्वारा खाद्य पदार्थों की जांच निरीक्षण तथा सैंपल लेने की कार्यवाही सतत जारी है। इसी क्रम में आज आगामी त्योहारों को दृष्टिगत रखते हुए खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्रीमती एडलिन ई पन्ना द्वारा

शमशाबाद तहसील की खाद्य दुकानों का निरीक्षण किया गया। खाद्य कारोबारकर्ता तरण स्वीट्स से खाद्य पदार्थ पेड़ा, बर्फी, नमकीन, रसगुल्ला आदि के सैंपल एकत्रित किए गए। इन सैंपल को जांच हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भेजने की कार्यवाही की जाएगी। जांच उपरांत नमूना फेल पाए जाने पर खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम 2006 के तहत आगामी कार्यवाही प्रस्तावित की जाएगी। सभी खाद्य कारोबार कर्ताओं को निर्देश दिए गए हैं कि बिना खाद्य पंजीयन लाइसेंस के व्यापार ना करें। खाद्य सामग्री को ढंक कर रखें तथा साफ-सफाई से खाद्य पदार्थों, मिठाइयों का निर्माण करें।

श्रद्धांजलि

पारसी प्यार से कहते थे 'आमरो रतन'

रतन टाटा की उदारता, दानशीलता, दूर दृष्टि, टाटा समूह को अभूतपूर्व वैश्विक ऊंचाइयों तक ले जाने की असाधारण उपलब्धियां अब दिलों में याद बनी रहेगी। विशेष तौर पर आवारा कुत्तों के लिए प्रेम, एकांतप्रियता, प्रचार-विमुखता, महत्व-सम्मान-प्रशंसा पाने से सहज संकोच, विश्व प्रसिद्ध टाटा संस्कृति की विरासत को आगे ले जाने में योगदान आदि ऐसी न जाने कितनी बातें हैं जो किताबों-किस्सों से इतिहास में बनी रहेंगी। क्योंकि, ऐसे लोग सिर्फ एक बार जन्म लेते हैं।

राहुल देव
वरिष्ठ पत्रकार, 'जनसत्ता' के पूर्व संपादक

देश का सच्चा ज़िंदा रतन चला गया। भले ही अब आप मरणोपरांत 'भारत रत्न' देते रहिए। जिंदा रहते नहीं दे पाए यह दर्ज रहेगा। शायद इसलिए कि पारसी काम के मतदाता नहीं हैं। भारत में कुल शायद 70 बचे हैं। दुनिया में एक से दो लाख के बीच। आज हर शिक्षित भारतीय महसूस कर रहा है कि कोई उसका अपना चला गया है। वह ज़्यादा देखा नहीं जाता था, सुना नहीं जाता था। व्यापारिक अखबारों और सोशल मीडिया पर कभी-कभार चर्चा हो जाती थी। जब कोई नई बड़ी विदेशी कंपनी ख़रीदकर उसे भारतीय बना देते थे। या जब किसी अज्ञात कुल-वय नवोद्यमी को 'मेंटर-निवेशक' के रूप में अचानक रतन टाटा का वरदहस्त मिल जाता था।

दस लाख से ज़्यादा टाटा कर्मचारी परिवार के सदस्यों से पूछिए, पूरे जमशेदपुर नगर के रहने वालों से पूछिए जो, जैसा विनीत ने लिखा है आमरो जमशेद और रतन के हर जन्मदिन को पारिवारिक पर्व की तरह मनाते थे, या उन लाखों अनाम भारतीयों से पूछिए जिनके जीवन को देश के इस सबसे बड़े दानकर्ता के ट्रस्टों-कंपनियों द्वारा संचालित विकास-कल्याण कार्यक्रमों ने सहारा-शिक्षा-स्वास्थ्य-सशक्तिकरण और आगे बढ़ने के अवसर देकर स्पर्श किया है। वे बताएँगे रतन टाटा उनके लिए क्या थे।

रतन टाटा को सबसे पहले मुंबई के सबसे सुंदर क्लब यूएस क्लब के लंबे-चौड़े हरे लॉन में देखा था। उसका सारा श्रेय टीटो और हमारी नन्ही पुरवा को है। हम माँ-बाप की निगाहें हरी विस्तीर्ण घास पर इधर-उधर दौड़ती पुरवा पर थीं और उनकी निगाहों ने उसी की तरह भागते-दौड़ते टीटो को देख लिया था। टीटो ने भी उसे देखा, बीच कहीं दोनों टकराए या क़रीब आए। लेकिन, पुरवा पहले सहमी फिर नाराज़ हो गई। टीटो जी तब तक अपने स्वामी के पास पहुँच कर विश्राम कर रहे थे और स्वामी रतन टाटा उसके साथ वैसे ही लाड़ भरा खेल कर रहे थे जैसे हम पुरवा के साथ करते थे। पुरवा पहुंच गई दोनों के पास और सीधे रतन टाटा पर शिकायत दाग दी 'अंकल, इसको मारिए, इसने मुझे काटा ..' रतन ने शायद टीटो को डाँटने का नाटक सा किया था फिर उससे कहा, यह अब नहीं काटेगा, खेलो इसके साथ। तो दोनों में दोस्ती हो गई, खेल चालू हो गया। उस सुंदर टीटो की भी आजकल खूब चर्चा हो रही है। बेटी के पीछे चलते मैंने पत्नी को बताया ये रतन टाटा हैं। हम वहाँ पहुँचे, रतन टाटा ने कुछ देर खूब सहजता और सौजन्य से बात की। वे हर रविवार टीटो को पास के अपने कोलाबा वाले अविशाल फ्लैट से यहां लेकर आते थे उसको खुले मैदान और एकांत में खिलाने के लिए। यूएस क्लब में सदस्यता दुर्लभ थी। मूलतः पास के नेवीनगर के सेना अधिकारियों, बाहर से आने वाले सेना अधिकारियों और चुनिंदा नागरिकों को ही मिलती थी। संपादकी के चक्कर में हम भी पा गए थे। उसका भी एक क़िस्सा है पर फिर कभी। तो टाटा जैसे प्रसिद्ध लोगों के लिए समुद्र से सटा हुआ वह क्लब सुरम्य एकांत देता था। सुना था वहाँ धीरूभाई अंबानी भी टहलने के लिए आते थे। हमें कभी दिखे नहीं। इस संक्षिप्त मुलाकात के बाद रतन अपनी एसयूवी में अपने पास की सीट पर टीटो को बिठा कर खुद गाड़ी चलाकर चले गए। एकाध बार और दिखे, हमेशा अकेले, लेकिन उनसे आगे बढ़ कर परिचय बढ़ाने की कोशिश नहीं की। न वह अपना स्वभाव था न शिष्टाचार। किसी के एकांत को भंग करने का हमें अधिकार नहीं होता।

दूसरी और तीसरी बार मिलना पहली मुलाकात के कुछ साल बाद ही हो गया। वह समय मुंबई में 1992-93 के हिंदू-मुस्लिम दंगों का था। शिवसेना उस समय अपनी अनौपचारिक सत्ता और शक्ति, जिसे वह ठोकशाही कहती थी, के शिखर पर थी। 1995 में तो बाल ठाकरे द्वारा मुख्यमंत्री बनाए गए मनोहर जोशी के नेतृत्व में महाराष्ट्र की सरकार के भी शिखर पर पहुँच गई थी। अपनी विचारधारा की आलोचना करने वालों अखबारों-पत्रकारों पर खुलेआम हमले करना, उनके दफ़्तरों में तोड़फोड़ और मारपीट करना शिवसैनिकों का आम शगल था। मराठी 'महानगर' के कार्यालय और उसके संस्थापक-संपादक निखिल वागले पर एक के बाद एक कई हमले हुए। दूसरों पर भी।

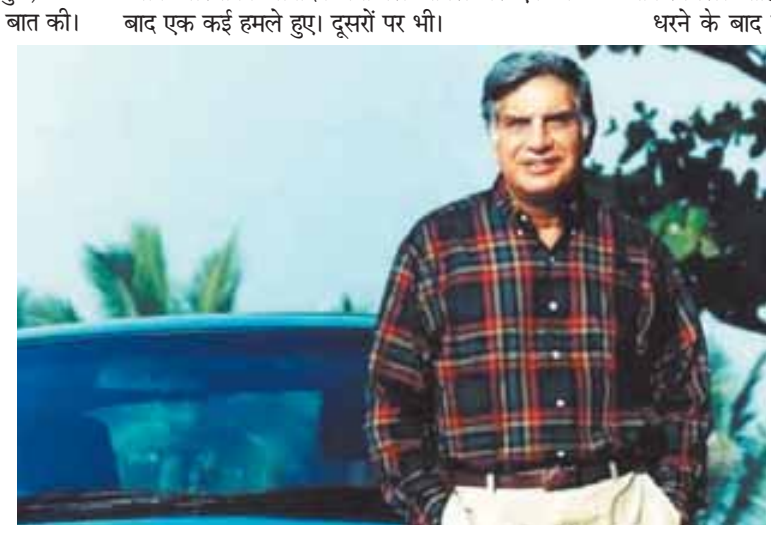

इसके विरोध में एडिटर्स गिल्ड ने देश के सबसे बड़े और सम्मानित संपादकों के नेतृत्व में शिवसेना भवन के सामने दिन भर का धरना दिया। सूत्रधार हमारे प्रभाष जोशी जी थे। इनमें टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, मराठी महाराष्ट्र टाइम्स, हिंदी जनसत्ता, गुजराती जन्मभूमि, फाइनेंशियल एक्सप्रेस के संपादक गण दिलीप पडगांवकर, निखिल चक्रवर्ती, बीजी वर्गीज, प्रभाष जोशी, गोविन्द तलवलकर, बलबीर पुंज आदि शामिल थे। मैं प्रभाष जी के सिपाही के रूप में संचालन कर रहा था। सेना प्रमुख ठाकरे अंदर बैठे थे। सेना के इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना थी, अब भी है। ठाकरे ने मनोहर जोशी को मंच पर भेजा कि 'बालासाहेब' आप लोगों से बात करना चाहते हैं। अंदर चलिए। सबने साफ इंकार कर दिया। कहा, अगर वे बात करना चाहते हैं तो यहाँ आकर मिलें। जाहिर है यह नहीं होना था।

धरने के बाद संपादकों का यह शिष्टमंडल मुंबई के कुछ प्रमुख नागरिकों से मिला। दो की याद है। जेआरडी टाटा और बॉम्बे डाइंग के मालिक नस्ली वाडिया से। यह जेआरडी से पहली भेंट थी। जेआरडी से संपादकों की बातचीत बेहद सार्थक थी। देखा कि सहज महानता कैसी होती है। दंगों से बहुत व्यथित थे। बातचीत करके जब हम सब निकले तो जेआरडी बाहर सीढ़ियों तक छोड़ने आए। उस समय रतन टाटा कॉरिडोर में कुछ अन्य लोगों के साथ खड़े थे। जेआरडी के घोषित उत्तराधिकारी होने के बावजूद वे जिस गहरे आदर, संकोच और विनम्रतापूर्वक के साथ खड़े थे वह असाधारण था। गहरा प्रभाव छोड़ने वाला। उन दिनों मैं मुंबई के 1993 दंगों में शांति प्रयासों में सक्रिय था। राज्यपाल की शांति समिति का सदस्य था। हम लोग धारावी पर ध्यान केंद्रित किए हुए थे बाकी जगहों के साथ-साथ। गांधी जी के मुंबई निवास मणि भवन, सर्वोदय मंडल, दिलीप कुमार के घर, राजभवन, धारावी में पुलिस थानों, अहातों, घरों आदि में बैठकें चलती रहती थीं। शबाना आज़मी, सुनील दत्त, फारूक शेख़ आदि साथ रहते। सबसे समर्पित भाव से शबाना।

ऐसी ही एक बैठक दक्षिण मुंबई के कफ परेड में भारत की पहली मार्केट रिसर्च कंपनी 'मार्ग' के दफ्तर में उसके संस्थापक टीटू अहलूवालिया के कार्यालय में हुई। दक्षिण और मध्य मुंबई के कुछ बेहद वरिष्ठ नागरिक निमंत्रित थे। उनमें रतन टाटा भी थे। बातचीत का संचालन टीटू और मैं कर रहे थे। रतन थोड़ी देर से आए और पीछे एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गए। जब बोल रहा वक्ता रुका तो मैंने रतन से आग्रह किया कि वे अंडाकार मेज़ की पहली क़तार में आ जाएँ। ज़ाहिर है हर व्यक्ति उन्हें जगह देना चाहता था। वे बैठे रहे, नहीं उठे। पूरी सभा के कई बार आग्रह करने पर बेहद संकोच के साथ आगे आए। अपनी बारी आने पर जब वे बोले तो घोर अंतर्मुखी और मितभाषी रतन का गोरा, ग्रीक देवताओं जैसा धीरोदात्त सुंदर चेहरा पीड़ा और क्षोभ से लाल था। उनके शांत लेकिन उत्कट सघनता से निकलते शब्दों के पीछे अपनी मुंबई की उस रक्तरंजित दुर्दशा पर उमड़ती भावनाओं की गहराई भीतर तक उतर जाने वाली थी। उस दिन जाना कि यह एकांतप्रिय, अपनी निजता को सायास बचाए रखने वाला व्यक्ति कितनी गहराई से महसूस करता है, किस व्यापक मानवीय संवेदनशीलता को छिपाए है।

उनकी उदारता, दानशीलता, विजन की व्यापकता, दूर दृष्टि, टाटा समूह को अभूतपूर्व वैश्विक ऊंचाइयों तक ले जाने की असाधारण उपलब्धियाँ, पशुओं-विशेष तौर पर आवारा कुत्तों के लिए आश्चर्यजनक प्रेम, एकांतप्रियता, प्रचार-विमुखता, महत्व-सम्मान-प्रशंसा पाने से सहज संकोच, विश्व प्रसिद्ध टाटा संस्कृति की विरासत को आगे ले जाने में योगदान आदि ऐसी न जाने कितनी बातें हैं जो किताबों-किस्सों से इतिहास में बनी रहेंगी। यह एक छोटी सी श्रद्धांजलि है उस रतन को जिसकी असामान्य मानवीयता और भीतरी ऊंचाई का छोटा सा स्पर्श पाने का सौभाग्य मुझे मिला। रतन टाटा की तुलना शायद केवल उनके आदर्श और गुरु जेआरडी टाटा से ही की जा सकती है। दोनों महानता के लिए पैदा हुए थे।

भाजपा विधायक बोले-

मैंने आक्रोश में आकर लिखा इस्तीफा

पटैरिया ने कहा-पार्टी, सीएम मेरे साथ; उनके निर्देशों का पालन करूंगा, थाना प्रभारी लाइन अटैच

सागर (नप्र)। सागर जिले के देवरी से भाजपा विधायक बृजबिहारी पटैरिया ने कहा है कि वो दुर्भाग्यपूर्ण क्षण था, जब मैंने आक्रोश में आकर इस्तीफा लिख दिया। पार्टी मेरे साथ है, मुख्यमंत्री मेरे साथ हैं। जिन्होंने मुझे इस पद तक पहुंचाया, वो सब मेरे साथ हैं। अब उन सबके निर्देशों और मुख्यमंत्री के आदेशों का पालन करूंगा।

इससे पहले गुरुवार देर रात को विधायक पटैरिया ने अपना इस्तीफा लिख दिया था। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष के नाम लिखे पत्र में एक मामले को लेकर कहा था कि पीड़ित पक्ष के साथ न्याय नहीं होने से आहत हूं, इसलिए विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे रहा हूं। पटैरिया गुरुवार देर रात केसली थाने में अपने समर्थकों के साथ धरने पर बैठ गए थे। इसकी सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारी केसली थाने पहुंचे और विधायक को समझाने की कोशिश की। लेकिन विधायक एक डॉक्टर पर एफआईआर दर्ज करने की मांग पर अड़े रहे। आखिरकार 4 घंटे तक विधायक के धरना प्रदर्शन के बाद पुलिस ने आरोपी डॉक्टर पर एफआईआर दर्ज की। प्रदर्शन के बाद केसली थाना प्रभारी अजय कुमार को लाइन अटैच किया गया है।

इसलिए थाने पर धरने पर बैठे भाजपा विधायक पटैरिया- विधायक पटैरिया ने बताया कि सर्पदंश से व्यक्ति की मौत हो गई थी। जिसकी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट बनाने के लिए डॉक्टर ने मृतक के परिजन से पैसों की मांग की। पैसे नहीं दिए तो डॉक्टर ने रिपोर्ट में सर्पदंश नहीं लिखा। एसपी, एसडीओपी, टीआई से बात कर मामले की जानकारी दी। एफआईआर कर मामले की जांच कराने के लिए कहा, लेकिन एफआईआर नहीं हुई। थाने आया तो वह कई नियम बता रहे हैं।

पूर्व मंत्री भार्गव ने कहा-अफसरों से बात की, इस्तीफा न दें- बीजेपी के सीनियर लीडर और पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव ने पटैरिया को इस्तीफा न देने की सलाह दी है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा- उक्त घटनाक्रम दुखद है।

प्रदेश में शस्त्र-पूजन के साथ धूमधाम से मनाया जाएगा दशहरा पर्व : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

महिला सशक्तिकरण की प्रतीक देवी अहिल्याबाई को समर्पित होगा शस्त्र-पूजन कार्यक्रम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारे भारतीय पर्व उमंग और उल्लास के प्रतीक होते हैं। इस वर्ष प्रदेश में दशहरा पर्व सरकार और समाज मिलकर धूमधाम के साथ मनाएंगे और शस्त्र-पूजन भी किया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों को दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि इस वर्ष का दशहरा पर्व महिला सशक्तिकरण और सुशासन की प्रतीक देवी अहिल्याबाई को समर्पित रहेगा। देवी अहिल्याबाई ने देश भर में जन-कल्याण के अनेक महती कार्य संपन्न करवाए। इन कार्यों की स्मृति और देवी अहिल्याबाई के योगदान से आज की पीढ़ी को अवगत करवाने और उनके सम्मान में दशहरा पर्व पर शस्त्र-पूजन के कार्यक्रम होंगे।

मंत्री, सांसद, विधायक और जन-प्रतिनिधि भी करेंगे अपने क्षेत्रों में शस्त्र-पूजन- मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि इस दशहरा पर्व पर भारत की प्राचीन शस्त्र-पूजन परंपरा में सरकार के मंत्रीगण सहित सांसद, विधायक और जन-प्रतिनिधि भी अपने क्षेत्र में होने वाले कार्यक्रमों में शामिल होंगे। प्रत्येक जिले में पुलिस शस्त्रागार, कोतवाली और थानों में होने वाले शस्त्र-पूजन एक विभाग तक सीमित न होकर जनता का पर्व बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वे स्वयं देवी अहिल्याबाई की राजधानी रही महेश्वर और उनकी छावनी रही इंदौर में शस्त्र-पूजन करेंगे।

अहिल्याबाई का व्यक्तित्व, जीवन और चरित्र हम सबके लिये आदर्श- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम अहिल्याबाई की 300वीं जयंती का वर्ष मना रहे हैं। लोकमाता देवी अहिल्याबाई का व्यक्तित्व, जीवन और चरित्र हम सबके लिये आदर्श है। वे एक तपोनिष्ठ, धर्मनिष्ठ और कर्मनिष्ठ शासक, प्रशासक रही है। उनसे हम सबको प्रेरणा लेना चाहिये। देवी अहिल्याबाई ने धर्म के भाव के साथ शासन व्यवस्था चलाने का बेहतर उदाहरण प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उनका धर्म तथा राज्य व्यवस्था में विशेष महत्व है। उनका मुख्य ध्येय था कि उनकी प्रजा कभी भी अभावग्रस्त और भूखी नहीं रहे। उनके सुशासन की यशोगाथा पूरे देश में प्रसिद्ध है। उन्होंने समाज-सेवा के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। अहिल्याबाई हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती थी, साथ ही वे गरीबों और निर्धनों की हरसंभव मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती थी। उन्होंने समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति पर भी खासा काम किया और उनके लिए उस वक्त बनाए गए कानून में बदलाव भी किया था।

भोपाल में कार की डिक्की में मिला डेढ़ क्विंटल पनीर

सीहोर से ला रहे थे, बस के जरिए भेजा जाना था अशोक नगर

भोपाल (नप्र)। भोपाल की कोहेफिजा पुलिस ने चेकिंग के दौरान एक कार की डिक्की में रखा करीब डेढ़ क्विंटल पनीर जब्त किया है। आगे की जांच के लिए यह मामला खाद्य सुरक्षा प्रशासन विभाग को हैंड ओवर कर दिया गया है। उक्त पनीर भोपाल से अशोक नगर भेजा जा रहा था। कोहेफिजा इलाके में पुलिस चेकिंग कर रही थी। तभी एक एम्बेसडर कार की डिक्की में पनीर रखा मिला। अमानक होने की शंका में पनीर जब्त करके खाद्य सुरक्षा प्रशासन विभाग को सौंप दिया गया।

थाने पहुंचे फूड इंस्पेक्टर- वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी देवेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि पनीर अमानक तो नहीं है, इसकी जांच की जा रही है। पनीर सीहोर से भोपाल के नादरा बस स्टैंड ले जाया जा रहा था। इसके बाद इसे बस के जरिए अशोक नगर भेजा जाना था। यह पनीर सीहोर से अमजद द्वारा अशोकनगर के लिए भेजा गया था। मौके पर अन्य किसी के उपस्थित नहीं होने के कारण वाहन चालक याकूब शाह से पनीर के नमूने लिए गए हैं।

त्योहारों में मावा-पनीर की बढ़ जाती है खपत

त्योहारों का सीजन शुरू हो गया है। ऐसे में भोपाल में मावा और पनीर की खपत बढ़ जाती है। इस वजह से ग्वालियर, भिंड, मुरैना समेत जिलों से मावा भोपाल आता है। कई बार अमानक मावा की खपत भी होती है। जिस वजह से खाद्य सुरक्षा प्रशासन की टीम कार्रवाई में जुटी रहती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारत रत्न जयप्रकाश नारायण जी की जयंती पर किया कोटिश : नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महान लोकतंत्र रक्षक सेनानी, 'भारत रत्न' 'लोकनायक' जयप्रकाश नारायण जी की जयंती पर कोटिशः नमन किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जयप्रकाश नारायण जी ने आपातकाल के विरुद्ध 'सम्पूर्ण क्रांति' का शंखनाद कर भारत के महान लोकतंत्र की रक्षा में अद्वितीय योगदान दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन लोकतांत्रिक मूल्यों व आदर्शों के सुपथ पर अडिग होकर चलने की प्रेरणा देता है।

एक घंटे की बारिश से हरदा हुआ पानी-पानी

इंदौर, खंडवा-खरगोन समेत कई जिलों में बरसा पानी, अगले 3 दिन ऐसा ही मौसम

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश से पूरी तरह से विदा होने से पहले मानसून बरस रहा है। शुक्रवार को इंदौर, हरदा, खरगोन, खंडवा, बड़वानी, धार, मंडला, सिवनी और पचमढ़ी में बारिश हुई। हरदा के सिराली क्षेत्र में तो एक घंटे की तेज बारिश में बाढ़ के हालात बन गए। हरदा जिले में शुक्रवार शाम करीब 4 बजे रिमझिम बारिश शुरू हो गई। कुछ ही देर में गरज-चमक के साथ तेज बारिश होने लगी। सिराली क्षेत्र में तो करीब एक घंटे तक मूसलाधार बारिश हुई। जिससे रहटाकलां गांव का नाला उफान पर आ गया। गांव की गलियां जलमग्न हो गईं। ग्रामीणों के मुताबिक बारिश के दौरान भी नाले में इतना पानी नहीं आया था।

दो सिस्टम की एक्टिविटी से हो रही बारिश- दरअसल, दो सिस्टम की वजह से बारिश का दौर शुरू हुआ है। पिछले 2 दिन में करीब 20 जिलों में पानी गिरा। इनमें से कई जिले ऐसे भी हैं, जहां से मानसून की विदाई भी हो चुकी है। मौसम विभाग के अनुसार, अगले 3 दिन ऐसा ही मौसम बना रहेगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, लो प्रेशर एरिया (निम्न दाब क्षेत्र) आने वाले दिन में डिप्रेशन में बदल जाएगा। यह सिस्टम आगे बढ़ेगा। इससे एमपी में गरज-चमक और हल्की बारिश का दौर बना रहेगा। साइक्लोनिक सकुर्लेशन की वजह से भी ऐसा मौसम बना हुआ है।

अब तक इन जिलों से हो चुकी मानसून की विदाई

2 अक्टूबरः ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी और श्योपुर।

5 अक्टूबरः नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन, देवास, आगर, शाजापुर, भोपाल, सीहोर, विदिशा, रायसेन, राजगढ़, गुना, अशोकनगर, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, इंदौर, खरगोन, खंडवा, हरदा, नर्मदापुरम, सागर, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना जिले।

20-21 अक्टूबर से बढ़ेगी ठंडक

मौसम विभाग के अनुसार, 20 अक्टूबर तक प्रदेश में ठंडक बढ़ने का अनुमान है। रात में पारा 20 डिग्री के नीचे पहुंच सकता है। हालांकि, दिन में तापमान 33-34 डिग्री के बीच ही रहेगा। अक्टूबर के आखिरी में दिन के तापमान में भी गिरावट होने लगेगी।

मंडला में सबसे ज्यादा बारिश

प्रदेश में इस साल 44.1 इंच बारिश हुई है। बारिश के मामले में जबलपुर संभाग सबसे आगे रहा है। मंडला जिले में सबसे ज्यादा बारिश हुई। यहां 60.6 इंच से ज्यादा पानी गिर गया। सिवनी में 56.8 इंच पानी गिरा। श्योपुर, निवाड़ी और राजगढ़ में 52 इंच से अधिक बारिश हुई है। सबसे ज्यादा बारिश वाले टॉप-10 जिलों में भोपाल, सागर, अलीराजपुर, डिंडौरी और छिंदवाड़ा जिले शामिल हैं।

सभी डैम-तालाबों में अच्छा पानी

इस मानसूनी सीजन में प्रदेश के करीब 250 में से 200 डैम फुल हो चुके हैं। बरगी, बाणगंगा, ओंकारेश्वर, इंदिरा सागर, तवा, कलियासोत, केरवा, भदभदा समेत कई डैम ऐसे हैं, जिनके गेट सीजन में 6 से 10 बार या इससे अधिक खुल चुके हैं।